विक्रम संवत् - २०८१

ॐ

कलियुगाब्द - ५१२६

पिङ्गल संवत्सर

नवचैतन्य : वार्षिक अंक २०२४ | चैत्र शुक्ल वर्ष प्रतिपदा (मंगलवार ९ अप्रैल २०२४) | गौरवशाली १५वाँ वर्ष

नवचैतन्य

जन-जन के नायक श्रीराम

विशेषांक

नववर्ष चेतना समिति

पृथ्वी माँ की १ अरब ९५ करोड़ ५८ लाख ८५ हजार १२६वीं वर्षगांठ

विक्रम संवत् – २०८१ – ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

दि सेकसरिया बिसवाँ शुगर फैक्ट्री लिमिटेड, बिसवाँ (सीतापुर)

(आई.एस.ओ. 9001:2015, 14001:2015 एवं 22000:2018 द्वारा प्रमाणित संस्थान)

समस्त क्षेत्रवासियों, कर्मचारियों एवं किसान भाईयों को होली पर्व एवं भारतीय नव संवत्सर (2081) की हार्दिक शुभकामनायें।

Producer of
Double Refined Plantation Cane sugar
(DEFECO-Melt Phosphotation with IER),
Ethanol and 32 MV Co-generation Power

''मृदा परीक्षण अवश्य करायें, संस्तुति के आधार पर उर्वरक लगायें''

- ''ट्रेन्च विधि से गन्ने की बुवाई करायें, सह फसल के साथ दोहरा लाभ कमायें।''
- ''पराली एवं गन्ने की पत्ती न जलायें, ट्रैश मल्चर से जुताई कर जैविक बनाये।''
- ''गन्ना प्रजाति को.पी.के.-05191 की बुवाई कदापि न करें, उन्नतशील प्रजाति को.-15023, को.लख.-94184, के.लख.-14201, को.शा.-13235, को.-0118 एवं को.-0238 को अपनायें।''

(रमेश चन्द्र सिंघल)
मुख्य अधिशासी

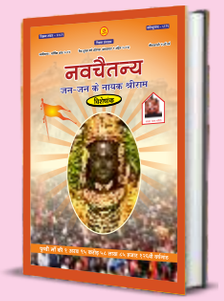

नवचैतन्य

प्रकाशक :
नववर्ष चेतना समिति (पंजी. सं. १९२३)
बी १/४१, सेक्टर-ए, नॉवेल्टी सिनेमा के पास,
कपूरथला, अलीगंज, लखनऊ - २२६०२४ (उ.प्र.)
सम्पर्क सूत्र : ०५२२-४९६०४५८, ४०४३७०
९४१५४६४७७७,९४१५०९७४८
९४५२२०६३४९
अणुडाक : sun_sgpgi@yahoo.com
girishguptadr@gmail.com
वेबसाइट : www.nvcs.org.in

प्रकाशन - तिथि :
चैत्र शुल्क प्रतिपदा पिङ्गल संवत्सर
विक्रम संवत २०८१, कलियुगाब्द ५१२६
(९ अप्रैल २०२४ मंगलवार)

संस्थापक संरक्षक :
पद्मश्री स्व. डॉ. एस.सी. राय
(पूर्व महापौर, लखनऊ)

संरक्षक :
श्रीमती रेखा त्रिपाठी

अध्यक्ष :
डॉ. गिरीश गुप्ता

सचिव :
डॉ. सुनील अग्रवाल

प्रेरक :
अमर नाथ
(वरिष्ठ प्रचारक, प्रान्त मार्ग, प्रमुख, कानपुर)

संपादक मण्डल :
संपादक : डॉ. निवेदिता रस्तोगी
सह संपादक : डॉ. संगीता शुक्ला
विशेषांक संपादक : इं. हेमन्त कुमार

इस प्रत्रिका में प्रकाशित लेख और विचार लेखकों ओर योगदानकर्ताओं की निजी धारणाओं पर आधारित और व्यक्तिगत हैं। इनसे संपादक/संपादक मंडल एवं प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख का नाम	पृ. सं.
१.	सम्पादकीय	१-२
२.	नव वर्ष मनाने की अपील - डॉ. सुनील अग्रवाल	३-४
३.	परम पूज्य स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरि जी महाराज आधुनिक विश्व समन्वयक - संकलित	५-६
४.	श्री चम्पत राय जी : एक सनातन योद्धा - संकलित	७-८
५.	श्रीराम मन्दिर निर्माण : भारतीय संस्कृति, संस्कार एवं स्वाभिमान की पुनर्स्थापना - श्री प्रभात रंजन दीन	९-१५
६.	अयोध्या में प्राण-प्रतिष्ठा (कविता) - पद्मश्री प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र	१६
७.	देवायतन की परम्परा और अयोध्या का नवनिर्मित श्रीरामजन्मभूमि मन्दिर - डॉ० जितेन्द्र कुमार सिंह 'संजय'	१७-२३
८.	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम हैं भारत की आत्मा - श्री प्रणय कुमार	२४-२६
९.	शकारि विक्रमादित्य की ऐतिहासिकता - संजय श्री हर्ष	२७-३०
१०.	महाराजा विक्रमादित्य की शास्त्र सम्मत जन्म-कुण्डली : खगोलीय शोध प्रत्र - आचार्य पं. राजेश मिश्र	३१-३७
११.	श्रीरामजन्मभूमि मन्दिर संरचना का संक्षिप्त परिचय - इं. हेमन्त कुमार	३८
१२.	रामकथा की व्यापकता एवं विविधता - पद्मश्री प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र	३९-४५
१३.	रामायणकालीन भूगोल एवं राजनीति - श्री अरुण कुमार उपाध्याय	४६-५०
१४.	देश की आर्थिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र बनती अयोध्या - श्री शिवेश प्रताप	५१-५४
१५.	विश्वव्यापी राम - डॉ. नितिन सहारिया	५५-६२
१६.	'चित्रों के झरोखे से श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर निर्माण' : पुस्तक चर्चा - डॉ. निवेदिता रस्तोगी	६३
१७.	रामकथा की विश्व व्याप्ति - प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित	६४-६८
१८.	सनातन धर्म के मूल संस्कारों को पुनर्स्थापित करने वाले महाराजा विक्रमादित्य - श्री सर्वेश चंद्र द्विवेदी	६९-७१
१९.	अत्याचार की पीड़ा ने घर पर विराजमान कराया श्रीरामदरबार - श्री धर्मेन्द्र सक्सेना	७२-७३
२०.	एक आस्था एक विश्वास - डॉ. संगीता शुक्ला	७४-७६
२१.	श्रीराम मन्दिर की नींव विशिष्ट है - इं. हेमन्त कुमार	७७-७८
२२.	प्रेरक व्यक्तित्व : डॉ. सूर्यकान्त और उनके अयोध्या संस्मरण	७९-८०
२३.	एक और महत्वपूर्ण स्थान पर विक्रम संवत् का प्रयोग - श्री अनूप शुक्ल	८१

नवचैतन्य हिलोरें लेता जाग उठी है तरुणाई। ॐ हिंदूराष्ट्र निज दिव्य रूप में उठा पुनः ले अंगड़ाई जाग उठी है तरुणाई।।

पिङ्गल संवत्सर

विक्रम संवत् – २०८१ | चैत्र शुक्ल वर्ष प्रतिपदा (मंगलवार ९ अप्रैल २०२४) | कलियुगाब्द ५१२६

गौरवशाली ९५ वाँ वर्ष

नववर्ष चेतना समिति के पदाधिकारीगण

रेखा त्रिपाठी
मुख्य संरक्षक

डॉ. गिरीश गुप्ता
अध्यक्ष

डॉ. रंजना द्विवेदी
उपाध्यक्ष

पुनीता अवस्थी
उपाध्यक्ष

अजय सक्सेना
उपाध्यक्ष

राधेश्याम सचदेवा
उपाध्यक्ष

सुमित तिवारी
उपाध्यक्ष

बिन्दा प्रसाद पाण्डेय
उपाध्यक्ष

डॉ. सुनील अग्रवाल
सचिव

मनोज राजपाल
सह-सचिव

मनीष मिश्रा
सह-सचिव

भुवनेश्वर वर्मा
संगठन सचिव

नवचैतन्य हिलोरें लेता जाग उठी है तरुणाई। ॐ हिंदूराष्ट्र निज दिव्य रूप में उठा पुनः ले अंगड़ाई जाग उठी है तरुणाई।।

पिङ्गल संवत्सर

विक्रम संवत् – २०८९ | चैत्र शुक्ल वर्ष प्रतिपदा (मंगलवार ९ अप्रैल २०२४) | कलियुगाब्द ५१२६

गौरवशाली १५ वाँ वर्ष

नववर्ष चेतना समिति के पदाधिकारीगण

ओम प्रकाश पाण्डेय
कोषाध्यक्ष

दीपक कुमार अग्रवाल
सह कोषाध्यक्ष

श्याम किशोर त्रिपाठी
प्रचार प्रमुख

गोपाल प्रसाद
सह प्रचार प्रमुख

आनन्द पाण्डेय
मीडिया प्रभारी

भारत सिंह
सह मीडिया प्रभारी

अरूण कुमार मिश्रा
कार्यालय प्रभारी

आकाश मिश्रा
सह कार्यालय प्रभारी

कमलेन्द्र मोहन
कार्यकारिणी सदस्य

विशाल मोकाटी
कार्यकारिणी सदस्य

तेज नारायण पाण्डेय
कार्यकारिणी सदस्य

डॉ. हरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
कार्यकारिणी सदस्य

श्याम त्रिपाठी
कार्यकारिणी सदस्य

राकेश कुमार यादव (एड.)
कार्यकारिणी सदस्य

मुदित सिंघल
कार्यकारिणी सदस्य

रघुराज शर्मा
कार्यकारिणी सदस्य

नवचैतन्य
स्मारिका
(सम्पादक मण्डल)

डॉ. निवेदिता रस्तोगी
सम्पादक

डॉ. संगीता शुक्ला
सह सम्पादक

इं. हेमन्त कुमार
सह सम्पादक

१७ फरवरी २०२४ को नवयुग कन्या महाविद्यालय एवं नव वर्ष चेतना समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी

''इतिहास के पन्नों में सम्राट विक्रमादित्य'' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

लखनऊ। चारबाग के राजेंद्र नगर स्थित नवयुग कन्या महाविद्यालय में

शनिवार को एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस मौके पर प्रभात रंजन 'दीन' बतौर मुख्य अतिथि व अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के सह संगठन मंत्री संजय बतौर मुख्य वक्ता मौजूद रहे। इस अवसर पर आयोजित प्रतियोगिता की विजेता छात्राओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अन्त में महाविद्यालय की प्राचार्या ने आयोजन में शामिल अतिथियों समेत समस्त लोगों का आभार व्यक्त किया।

नव वर्ष चेतना समिति द्वारा आयोजित गत वर्ष २०२३ की गतिविधियों की झलकियाँ

नव वर्ष चेतना समिति द्वारा आयोजित गत वर्ष २०२३ की गतिविधियों की झलकियाँ

नववर्ष चेतना समिति करेगी पार्कों का संरक्षण

आलमबाग-लखनऊ। नववर्ष चेतना समिति के संरक्षक सदस्य डॉ. एलवी मिश्रा के नेतृत्व में रविवार समिति कार्यकारिणी व सहयोगी विचारधारा के लोगों संग अनौपचारिक सामयिक मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर नव वर्ष चेतना समिति के द्वारा भारतीय नव वर्ष विक्रम संवत के जन जागरण के साथ – साथ भारतीय संस्कृति और पौराणिक विचारधारा की पुनरुत्थान के संबंध में प्रबुद्धजनों द्वारा तमाम विचार रखे गए। आयोजन में वरिष्ठ प्रचारक व भारतीय इतिहास संकलन के सह. संगठन मंत्री संजय जी ने विश्व प्रख्यात लखनऊवा विचारधारा को केंद्रित कर कार्य करने का विचार प्रगट किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे पूर्व मंत्री महेंद्र सिंह व विधायक नीरज बोरा ने समिति के उद्देश्यों की पूर्ति में गति देने पर बल दिया। इस मौके पर समिति के अध्यक्ष डॉ? गिरीश गुप्ता ने कहा कि अयोध्या में रामलला के संघर्ष के बाद बन रही भव्य दिव्य राम मंदिर परिसर में विक्रमादित्य जी की प्रतिमा स्थापित होनी चाहिए क्योंकि विश्व में पहले विक्रम संवत के प्रणेता सम्राट विक्रमादित्य जी द्वारा ही 84 पिलरों पर प्रथम श्री राम मंदिर स्थापित किया गया था। इस मौके पर समिति के संस्थापक डॉ. एलवी राय की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम आयोजित करने पर भी सहमति बनी।

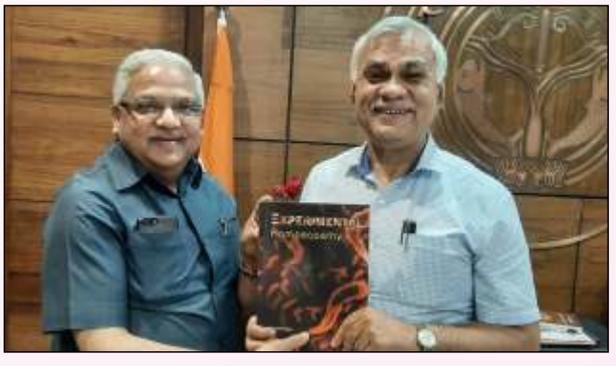

नव वर्ष चेतना समिति द्वारा आयोजित २२ मार्च २०२३ हिन्दू नववर्ष महोत्सव कार्यक्रम से सम्बन्धित गतिविधियों की झलकियाँ

नव वर्ष चेतना समिति द्वारा ल.वि.वि. में आयोजित संस्थापक संरक्षक पद्मश्री स्व. डॉ. एस.सी.राय (पूर्व महापौर) की स्मृति में २७ अगस्त २०२३ व्याख्यान माला के अंश

नव वर्ष चेतना समिति के संरक्षक, शुभचिन्तक एवं विशिष्ट सहयोगी

डॉ. अशोक कुमार वार्ष्णेय, राष्ट्रीय संगठन सचिव, आरोग्य भारती

श्री संजय जी, राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री अ.भा. इतिहास संकलन योजना

श्री अनिल ओक, अ.भा. सह व्यवस्था प्रमुख, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

श्री ओमपाल जी, कुटुम्ब प्रबोधन प्रमुख (उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड)

श्री अनिल जी, क्षेत्र प्रचारक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, पूर्वी उ.प्र.

शिवकान्त दीक्षित, क्षेत्र संगठन मंत्री भारती किसान संघ, उ.प्र., उत्तराखण्ड

श्री कौशल जी, प्रांत प्रचारक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अवध प्रान्त

श्री मनोज जी, सह क्षेत्र सम्पर्क प्रमुख राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, पूर्वी उ.प्र.

श्री सर्वेश द्विवेदी, प्रभारी निदेशक, राष्ट्र धर्म

डॉ. महेन्द्र सिंह, पूर्व मंत्री, उ.प्र. सरकार

प्रो. अनूप कुमार भारतीय, समाज कार्य विभाग, ल.वि.वि. लखनऊ

गिरीश चन्द्र, क्षेत्र संगठन मंत्री, संस्कार भारती,

श्री जे.पी. सिंह, सामाजिक कार्यकर्ता

डॉ. अशोक दुबे, प्रचार प्रमुख अवध प्रान्त राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

डॉ. बी.एन. सिंह, चेयरमैन होम्योपैथिक मेडीसिन बोर्ड, उ.प्र.

प्रो. एस.पी. सिंह, पूर्व कुलपति लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

श्री प्रभात रंजन दीन, लेखक एवं वरिष्ठ पत्रकार

डॉ. एल.पी. मिश्रा, वरिष्ठ अधिवक्ता, हाईकोर्ट

श्री लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, प्रतिष्ठिक व्यवसायी

श्री समीर त्रिपाठी, सी.एम.डी. मेधज ग्रुप

श्री राजेन्द्र कुमार अग्रवाल, अध्यक्ष लखनऊ व्यापार मंडल

श्री सुधीर हलवासिया, प्रदेश संयोजक भाजपा, उ.प्र.

श्री राकेश डी. कुमार, अधिवक्ता उच्च न्यायालय, लखनऊ

डॉ. चन्द्र प्रकाश दुबे, प्रबन्धक राजधानी हॉस्पिटल

श्री गौरी शंकर पाण्डेय, व्यवसायी

श्री भगवती प्रसाद सिंघल, समाजसेवी, विसवां

श्री पवन सिंह चौहान, विधान परिषद सदस्य, उ.प्र. विधान सभा

डॉ. हरमेश चौहान, विशेष सम्पर्क प्रमुख आर.एस.एस. पूर्वी उ.प्र.

श्री प्रशांत भाटिया, विशेष सम्पर्क प्रमुख आर.एस.एस. अवध प्रान्त

श्री भारत भूषण गुप्ता, प्रतिष्ठित व्यापारी

श्रीमती रुचि शुक्ला, सामाजिक कार्यकर्ता, विदेश विभाग प्रभारी एन.आर.आई. सेल उ.प्र. भा.ज.पा.

प्रो. निर्मल गुप्ता, विभागाध्यक्ष कार्डियक सर्जरी पीजीआई

श्री अमरजीत मिश्रा, पूर्व प्रशासनिक अधिकारी, उ.प्र.

प्रो. गौरव अग्रवाल, विभागाध्यक्ष एण्डो सर्जरी पीजीआई

नव वर्ष चेतना समिति के संरक्षक, शुभचिन्तक एवं विशिष्ट सहयोगी

श्री पंकज अग्रवाल, मणि फाउंडेशन

श्री बुजमोहन अवस्थी, गायत्री परिवार

श्री अशोक अग्रवाल, अध्यक्ष अग्रवाल सभा दक्षिण

श्री दाऊ दयाल अग्रवाल, महामंत्री अग्रवाल सभा दक्षिण

इं. महेश गोयल, पूर्व संयोजक अग्रवाल सभा दक्षिण

प्रो. संजय कुमार द्विवेदी, अम्बेडकर विश्वविद्यालय

श्री आलोक गोयल, श्री वृंदावन ज्वैलर्स, तेलीबाग

श्री संजीव अग्रवाल, गोयल स्वीट हाउस, तेलीबाग

इं. श्री राम कुमार जी

श्री नीलेश अग्रवाल (टाटा), कोषाध्यक्ष, अग्रवाल शिक्षा संस्थान, लखनऊ एवं नाका परिक्षेत्र व्यापार मण्डल

श्री सुधीर गर्ग, उपाध्यक्ष श्री श्याम परिवार एवं कोषाध्यक्ष लघु उद्योग भारतीय अवध प्रान्त

श्री रूपेश अग्रवाल, सचिव श्री श्याम परिवार

श्री राजीव गुप्ता, सोना-चांदी ज्वैलर्स

श्री के.एन. बंसल, बी.के. सर्राफ

श्री अरुण बंसल, बी.के. सर्राफ

श्री विपिन त्रिवेदी, विपिन साड़ी हाऊस, लखनऊ

श्री विजय अग्रवाल, प्रतिष्ठित व्यवसायी एवं समाजसेवी

डॉ. राकेश गुप्ता, देवकी हॉस्पिटल, सीतापुर रोड, लखनऊ

श्री पी.के. श्रीवास्तव, चीफ टेक्नीकल ऑफीसर (से.नि.), पीजीआई

श्री हरि प्रकाश अग्रवाल, साहित्यकार, लखनऊ

श्री गुंजन अग्रवाल, साहित्यकार, नई दिल्ली

श्री बृजेश पाण्डेय, सह विभाग कार्यावाह, लखनऊ

श्री अनुज अग्रवाल,

श्री कुंवर बृजेन्द्र सिंह,

श्री प्रशान्त सिंह 'अटल', अधिवक्ता उच्च न्यायालय, लखनऊ

श्री अविनाश वैश्य

श्री बी.के. शुक्ला

श्री लक्ष्मीमोहन खरे, अधिवक्ता उच्च न्यायालय, लखनऊ

श्रीमती राखी अग्रवाल, पूर्व वायुसेना अधिकार

श्री अनिल अग्रवाल, प्रबन्धक सेंट जोजफ स्कूल, लखनऊ

डॉ. मधुलिका सिंह, (चेयरमैन : मेयो हॉस्पिटल लखनऊ)

श्री अरुण द्विवेदी, (सामाजिक कार्यकर्ता)

श्री सुधीश गर्ग, संरक्षक अग्रवाल शिक्षा संस्थान

श्री संजीव बंसल, (चेयरमैन : आई.एम.आर.टी., गोमतीनगर लखनऊ)

श्री रीता मित्तल, अध्यक्ष लघु उद्योग भारती अवध प्रान्त

श्री शंकरी सिंह, भा.ज.पा. कार्यकर्ता सरोजनी नगर विधानसभा

श्री अशोक अग्रवाल, विधान परिषद सदस्य, उ.प्र. विधानसभा

श्री शरद जैन, प्रतिष्ठित व्यवसायी एवं सामाजिक कार्यकर्ता

डॉ. आँचल केशरी, ओम मेटरनिटी सेन्टर, साउथ सिटी, लखनऊ

डॉ. दिनेश शर्मा, सांसद राज्यसभा

श्री रजनीश त्रिवेदी, गणपति स्वीट हाउस, लखनऊ

श्री मयूर गुप्ता, कार्यकारिणी सदस्य अग्रवाल सभा लखनऊ दक्षिण

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

सत्यमेव जयते

राज भवन
लखनऊ - 226 027

02 अप्रैल, 2024

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि नववर्ष चेतना समिति, लखनऊ द्वारा श्री राम जन्म भूमि पर आधारित विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

भगवान श्रीराम की पुण्य गाथा मानवीय मूल्यों और आदर्शों से अनुप्राणित है। उनका जीवन तथा आदर्श प्रेरणादायी है। आशा है कि प्रकाश्य विशेषांक में मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के व्यक्तित्व के शाश्वत जीवन मूल्यों से संबंधित विविध प्रसंगों के समावेश से पाठकों का ज्ञानवर्द्धन होगा।

विशेषांक के सफल प्रकाशन हेतु मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

आनंदीबेन

(आनंदीबेन पटेल)

दूरभाष : 0522-2236497 फैक्स : 0522-2239488 ईमेल : hgovup@gov.in वेबसाइट : www.upgovernor.gov.in

॥ श्रीहरिः ॥

स्वामी गोविन्ददेव गिरि
आचार्य- डी.लिट्. (मानद)
कोषाध्यक्ष, श्रीरामजन्मभूमि तीर्थक्षेत्र (न्यास), अयोध्या

'धर्मश्री', सूर्यमुखी दत्तमंदिर के समीप,
पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे ४११०१६
दूरभाष : (०२०) २५६५२५८९
फॅक्स : (०२०) २५६७२०६९
swamigovindgiriji@gmail.com

स्वस्तिवाचन

*यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि लखनऊ की '**नववर्ष चेतना समिति**' प्रतिवर्ष एक सुंदर एवं समयोचित विशेषांक प्रकाशित करती है। यह नितांत अभिनंदनीय है कि विक्रमसंवत् २०८१ के शुभारंभ में समिति द्वारा '**जन-जन के नायक श्रीराम**' विशेषांक का प्रकाशन करने का संकल्प किया है।*

अभी इसी वर्ष पौष शुक्ल द्वादशी तदनुसार दि. २२ जनवरी २०२४ के शुभ दिन कई शताब्दियोंकी प्रतीक्षा एवं सतत संघर्ष के पश्चात् भगवान श्री रामलला अयोध्यास्थित अपने जन्मस्थान पर निर्मित भव्य दिव्य मंदिर में विराजमान हुए हैं। राष्ट्र का आत्मविश्वास एवं सनातन धर्म संस्कृति की पुनःस्थापना का यह सुवर्णक्षण देश के भावी अमृतकालका अद्वितीय उत्सव ही नहीं अपितु राष्ट्रकी नवचेतना के प्रबल प्रवाह का शुभारंभ है। राष्ट्रचेतना के नवजागरण पर्व में यह विशेषांकरूप शब्दमय मंगल अर्घ्य अत्यंत शोभायमान होगा यह विश्वास है।

इस प्रकाशन के लिए और पत्रिका की सर्वतोमुख सफलता के लिये हार्दिक शुभकामना!

जयतु श्रीरामः।

श्री ज्ञानेश्वरपदाश्रित,
स्वामी गोविंददेवगिरिः

फाल्गुन शु. ९
युगाब्द ५१२५
दि. १८/०३/२०२४

। महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान । गीता परिवार । संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल । श्रीकृष्ण सेवा निधि ।
Email : dharmashree123@gmail.com | Website : www.dharmashree.org

डॉ0 दिनेश शर्मा
सांसद, राज्यसभा
भारतीय जनता पार्टी

पूर्व उप मुख्यमंत्री, उ0प्र0
पूर्व नेता सदन एवं सदस्य विधान परिषद उ.प्र.
पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, भाजपा
प्रभारी राष्ट्रीय प्रभारी, भाजपा सदस्यता अभियान
पूर्व प्रभारी, गुजरात प्रदेश, भाजपा
पूर्व महापौर, नगर निगम, लखनऊ एवं
पूर्व अध्यक्ष, उ0प्र0 महापौर परिषद

पत्रांक.....

दिनांक 27.02.2024

सन्देश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि **नववर्ष चेतना समिति, लखनऊ** प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी **भारतीय नवसंवत्सर** के अवसर पर **"नव-चैतन्य"** पत्रिका का प्रकाशन करने जा रही है।

भारत की सांस्कृतिक विरासत के संवर्धन एवं सरंक्षण की दिशा में आपकी समिति द्वारा जो प्रयास किये जा रहे है। वह अन्य समितियों के लिए अनुकरणीय है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में सामाजिक कुरीतियों को दूर करने हेतु तथा समाज को जागृत करने और राष्ट्र का निर्माण करने के लिए उपयोगी लेख प्रकाशित किये जाएगें।

"नव-चैतन्य" पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें।

भवदीय,
Sharma
(डॉ0 दिनेश शर्मा)

डॉ0 गिरीश गुप्ता,
अध्यक्ष,
नववर्ष चेतना समिति,
बी-1/41, सेक्टर ए, नावेल्टी सिनेमा के पास,
कपूरथला, अलीगंज, लखनऊ।

लखनऊ आवास – 268/10, मास्टर कन्हैया लाल रोड, ऐशबाग, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत – पिन कोड 226004
दूरभाष : 0522-2740409, 9455003929, ई-मेल : profdineshsharma@gmail.com

प्रो. आलोक कुमार राय
कुलपति
Prof. Alok Kumar Rai
Vice-Chancellor

लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ–226007 (उ.प्र.) भारत
University of Lucknow
Lucknow-226007 (U.P.) India

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि नववर्ष चेतना समिति नव संवत्सर 2081 के शुभ अवसर पर मर्यादा पुरुषोतम श्रीराम पर आधारित नवचैतन्य स्मारिका का प्रकाशन कर रही है।

स्मारिका की सफलता हेतु स्मारिका के सम्पादक मंडल एवं लेखक वृन्द को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

दिनाँक 22.03.2024

(प्रो० आलोक कुमार राय)

नववर्ष चेतना समिति

Telephones : 0522-2740467 (O) 0522-2740462 (R) Fax : 0522-2740467 (O), 9415684935 (M), Email: vc@lkouniv.ac.in

International Society for Krishna Consciousness
Founder Acharya : His Divine Grace A.C. Bhaktivedanta Swami Prabhupada
Head Office : Hare Krishna Land, Juhu, Mumbai - 400 049 (Reg. No. F2179) [BOMBAY]
Temple : ISKCON, Sec-F, Sushant Golf City, Shaheed Path, Sultanpur Road, Lucknow-226 030
Phone : 9675150758, 8960174244, 7417938708
E-mail : iskconlucknow108@gmail.com, **Website :** www.iskconlucknow.com

Ref.No :

Date : 26-3-24

सेवा में
डा. गिरिश गुप्ता,
अध्यक्ष,
नववर्ष चेतना समिति,
अलीगंज लखनऊ।

विषय – भारतीय नववर्ष कार्यक्रम का आयोजन तथा सनातन धर्म का प्रोत्साहन हेतु बहुत-बहुत शुभकामनायें

हरे कृष्णा,

हमें हार्दिक प्रसन्नता है कि नव वर्ष चेतना समिति प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी सनातन संस्कृति के मूल पर्व गौरवशाली वैज्ञानिक कालगणना के आधार पर भारतीय नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिप्रदा को सार्वजनिक उत्सव के रूप में मनाने हेतु जो समाज में जागृति ला रही है उसके लिए मैं बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं क्योंकि दुनिया में वर्तमान समय में लोग पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित होकर,पाश्चात्य कैलेंडर आज कार्यालय में दैनिक जीवन की आवश्यकता बन गया है,स्कूलों की आवश्यकता बन गया है इसलिए पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव में व्यक्ति अपने मूल नववर्ष को भूल गया है और यह समिति और समिति के अध्यक्ष आदि समस्त सदस्यगण आप सब इसमें प्रयास कर रहे है समाज में एक चेतना लाने का, समाज को अपने मूल सनातन संस्कृति के सनातन कैलेंडर की ओर ध्यान आकर्षित करने का और उत्सव के रूप में मनाने का जिससे समाज में चेतना आए और लोग अपने सनातन धर्म के इस नववर्ष को महान पर्व स्वीकार करें और अपने नव वर्ष के आधार पर अपने किसी की मृत्यु की तिथि, वैवाहिक वर्षगाँठ, या जन्म तिथि के आधार पर ही माननी चाहिए, ना कि पश्चात कैलेंडर के अनुसार।

समाज में एक नई चेतना जागृत करने के लिए मैं आपसब को बहुत – बहुत शुभकामनायें देता हूँ।

शुभकामनाओ सहित

आपका शुभचिंतक

अपरिमेय श्याम दास
इस्कॉन मंदिर अध्यक्ष
लखनऊ
मो- 7417938708

नववर्ष चेतना समिति

सम्पादकीय
''राम मन्दिर की स्थापना भारतवर्ष के गौरव का पुनरागमन है''

डॉ० निवेदिता रस्तोगी
सम्पादक, नवचैतन्य पत्रिका

विदेशी हमलावर बाबर के आदेश पर उसके सिपहसालार मीर बाकी द्वारा 1528 ई. में श्रीरामजन्मभूमि स्थल पर श्रीराम मन्दिर को ध्वंस किए जाने से लेकर पूरे कालखण्ड में 78 युद्ध हो चुके हैं। इसकी विस्तृत सूची आपको दुःखी भी करेगी और आपका मन आक्रोश से भी भरेगी। बाबर के शासनकाल में भीटी नरेश महताब सिंह, हंसबर के राजगुरु देवीदीन पाण्डेय, राजा रणविजय सिंह और रानी जयराजकुमारी ने चार बार युद्ध लड़ा। हुमायूँ के समय में साधुओं की सेना लेकर स्वामी महेशानन्द और स्त्रियों की सेना लेकर रानी जयराजकुमारी ने 10 बार युद्ध का सामना किया। अकबर के शासनकाल में स्वामी बलरामाचार्य ने 20 युद्ध लड़े। औरंगजेब के समय बाबा वैष्णवदास, गुरु गोविन्द सिंह, कुंवर गोपाल सिंह, ठाकुर जगदम्बा सिंह और ठाकुर गजराज सिंह ने 30 बार युद्ध लड़ा। अवध के नवाब सआदत अली, नासिरुद्दीन हैदर, वाजिद अली शाह के समय में अमेठी के गुरुदत्त सिंह, पिपरा के राजकुमार सिंह, मकरही के राजा, बाबा उद्धवदास, रामचरण दास और गोण्डा नरेश देवीबख्श सिंह ने 10 लड़ाइयाँ लड़ीं। अंग्रेजों के शासनकाल में साधु समाज और हिन्दू जनता द्वारा सम्मिलित रूप से दो बार युद्ध लड़े गए। पूर्व प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के कार्यकाल में भी एक धर्मयुद्ध लड़ा गया।

इस प्रकार श्रीरामजन्मभूमि के लिए हिन्दू समाज ने 78 धर्मयुद्ध लड़े, जिनमें साढ़े तीन लाख से ज्यादा हिन्दू वीरों ने अपने प्राणों की आहुति दी। अयोध्या में राम मन्दिर निर्माण के लिए हिन्दू समाज की सदियों पुरानी आस्था, अभिलाषा और अगाध श्रद्धा की न केवल अनदेखी की गई, बल्कि उपहास भी उड़ाया गया। भगवान श्रीराम के अस्तित्व को चुनौती देने की हिमाकत भी तथाकथित सेकुलर तत्त्वों ने की। वोट पाने के लिए स्वार्थी राजनीतिक दलों ने बेशर्मी की इंतिहा कर डाली। भारतीयता और हिन्दुत्व को नकारने वाले छद्म बुद्धिजीवियों और मीडिया का एक बड़ा वर्ग भी इस षड्यन्त्र का भागीदार बना। अन्ततः 2019 में इसका न्यायपूर्ण पटाक्षेप हुआ और भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने तथाकथित विवादित स्थल पर राम मन्दिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया।

वस्तुतः शताब्दियों का संघर्ष, अनगिनत पीढ़ियों के लाखों रामभक्तों के प्राणोत्सर्ग, दृढ़ संकल्प, धैर्य, अविचलित आस्था और मर्यादा पालन के कठोर संयम की 22 जनवरी, 2024 पौष माह की शुक्ल पक्ष की द्वादशी, संवत् 2080, दिन सोमवार को पूर्णाहुति हुई। इतिहास की सभी कलंकगाथाओं की इतिश्री करते हुए 496 वर्षों के सतत् संघर्षों के बाद भव्य राम मन्दिर का पुनर्निर्माण एक धार्मिक अनुष्ठान मात्र नहीं, बल्कि यह आयोजन भारत के सांस्कृतिक पुनरुत्थान, सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण की स्थापना का इतिहास रच गया। 22 जनवरी, 2024 से नए युग का सूत्रपात हुआ, जिसमें धर्मप्राण देश को धर्मनिरपेक्षता के छद्म से उबारते हुए धर्मविग्रह श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा हुई। श्रीरामलला की प्राण-प्रतिष्ठा का यह विराट महोत्सव अयोध्या को अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक-आध्यात्मिक पर्यटन के अद्वितीय केन्द्र के रूप में विकसित करेगा।

भगवान श्रीराम त्याग, तपस्या, शुचिता, मर्यादा, श्रेष्ठतम जीवन-मूल्यों का पालन, नैतिकता और अनुशासन के साथ

रामराज्य का स्मरण कराते हैं। रामराज्य की सार्थकता इसी में है कि सबका कल्याण हो और सबको न्याय मिलना सुनिश्चित किया जा सके। रामराज्य समता, समरसता, बन्धुता के साथ- साथ संतुलित विकास का अनुकरणीय उदाहरण है।

"दैहिक दैविक भौतिक तापा, राम राज नहिं काहुहि व्यापा।
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न हीना, नहिं कोई अबुध न लच्छन हीना।"

रामराज्य में नागरिकों के कल्याण को व्यक्तिगत इच्छाओं से अधिक प्राथमिकता दी गई है। आधुनिक कालखण्ड में राष्ट्रीय और वैश्विक परिदृश्य में आतंकवाद रूपी आसुरी शक्तियों को कुचलने में सृजनकारी राम द्वारा आदिवासी, वनवासी समाज के लोगों में आत्मगौरव और आत्मविश्वास जागृत कर उन्हें संगठित कर पृथ्वी को निसिचरहीन/राक्षस विहीन करने के लक्ष्य को साधना आज भी उतना ही प्रासंगिक है। वस्तुतः रामराज्य आधुनिक कल्याणकारी राज्य के लिए प्रेरक है। मोदी सरकार की कल्याणकारी नीतियां रामराज्य के स्वप्न को साकार करने का प्रयत्न ही हैं। राम मन्दिर की प्राण-प्रतिष्ठा से अभिभूत नववर्ष चेतना समिति इस वर्ष मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम पर आधारित विशेषांक का प्रकाशन कर धन्यता एवं गर्व का अनुभव कर रही है। इस अंक में जिन विद्वत रचनाकारों ने अपनी अधिकार पूर्ण लेखनी से इस गुरुतर दायित्व का सफलतापूर्वक वहन करने में अपनी सेवाएं दी हैं, उनके लिए हम कृतज्ञ एवं नतमस्तक हैं।

उज्जैन स्थित विक्रमादित्य शोध पीठ के पूर्व निदेशक और सम्राट विक्रमादित्य पर सर्वाधिक शोध करने वाले परम विद्वान डॉ० भगवतीलाल राजपुरोहित को भारत सरकार द्वारा पद्म श्री से सम्मानित करने पर नववर्ष चेतना समिति गौरवान्वित है और डॉ० भगवतीलाल राजपुरोहित जी का अभिनन्दन करती है।

लोकनायक प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में श्री रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा, महाकाल की नगरी उज्जैन में महाकाल-महालोक का लोकार्पण, सृष्टि के आरम्भ से प्रचलित सुप्रसिद्ध सूर्यसिद्धान्त पर आधारित त्रुटिरहित परम वैज्ञानिक भारतीय कालगणना के प्रतिपादक विक्रमादित्य द्वारा आविष्कृत वैदिक घड़ी का लोकार्पण निश्चित रूप से हमारी कालजयी कालगणना को समूचे विश्व में स्थापित और ज्ञापित करने का ऐतिहासिक कदम है। श्री काशी विश्वनाथ धाम कॉरिडोर, श्री केदारनाथ एवं श्री बद्रीनाथ धाम आदि तीर्थस्थलों का विकास भारत की सनातन संस्कृति के गौरव की विश्व पटल पर पुनर्स्थापना है।

डॉ० निवेदिता रस्तोगी, सम्पादक, नवचैतन्य पत्रिका

नववर्ष चेतना समिति

भारतीय नववर्ष मनाने की अपील
नववर्ष चेतना समिति, भारत
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, युगाब्द 5126, विक्रमी संवत्-2081

डॉ. सुनील कुमार अग्रवाल
सचिव, नववर्ष चेतना समिति

बंधुवर,

भारतीय कालगणना न केवल विश्व की सबसे प्राचीन कालगणना है, अपितु आकाशीय नक्षत्रों की गति पर आधारित होने के कारण पूर्ण वैज्ञानिक भी है। सृष्टि की उत्पत्ति दिवस चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से भारतीय नववर्ष का श्रीगणेश होता है, तब प्रकृति में परिवर्तन की सुखद अनुभूति हमें होती है। शीत से मुक्ति मिलती है, किसान के घर नई फसल आती है और आम की अमराई से भीनी मधुर सुगन्ध आती है। नववर्ष प्रतिपदा का दिन हमें भारत के महान गौरव का भी स्मरण कराता है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन ही ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना की, भगवान राम का राज्यारोहण हुआ, महाराज युधिष्ठिर राज सिंहासन पर बैठे, विक्रमादित्य ने शकों को पराजित किया, स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की। विश्व के सबसे बड़े स्वयंसेवी संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का जन्म दिन भी यही दिवस है। धार्मिक दृष्टि से पवित्र वासन्तिक नवरात्र का श्रीगणेश चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही होता है।

अतः निवेदन है कि हम अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित ऐतिहासिक, सांस्कृतिक महत्व के इस विज्ञान सम्मत भारतीय नववर्ष को न केवल स्वयं मनाएं अपितु विश्व में इसके प्रचार-प्रसार का संकल्प लें। नववर्ष चेतना समिति का आह्वान है कि-

1. विभिन्न विद्यालयों, संस्थानों में भारतीय कालगणना की प्राचीनता और वैज्ञानिकता विषयक व्याख्यान का आयोजन किया जाए।
2. चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन हर्षोल्लास के साथ भारतीय नववर्ष मनाया जाए।
3. नववर्ष के प्रथम दिन उगते सूर्य को अर्ध्यदान दें तथा पवित्र जीवन जीने का संकल्प लें।
4. नवरात्र भर नववर्ष स्वागत समारोहों का आयोजन किया जाए।
5. नववर्ष के दिन अपने घरों को झालरों से सजाएं, ऊँ अंकित पताका लगाएँ एवं अपने सभी मित्रों-परिचितों को लघु संदेश (एस.एम.एस.) कार्ड या दूरभाष द्वारा ''भारतीय नववर्ष मंगलमय हो' का शुभकामना संदेश भेजें।

आशा है आप भी अपनी माँ स्वरूपा भारतीय संस्कृति के उत्थान का संकल्प लेंगे और भारतीय नववर्ष को धूमधाम से मनाएंगे।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का ऐतिहासिक महत्त्व

1	१५,५५,१३,३३,२९,४९,१२६ वर्ष पूर्व	ब्रह्मा द्वारा सृष्टि की रचना प्रारम्भ
2	१,९७,२९,४९,१२६ वर्ष पूर्व	श्वेतवाराह कल्प का प्रारम्भ
3	३.४५६५ करोड़ वर्ष पूर्व	बीसवें व्यास गौतम ऋषि का जन्म
4	१,८१,४९,१२६ वर्ष पूर्व	रावण-वध के बाद अयोध्या लौटने पर भगवान् श्रीराम का राज्याभिषेक
5	३१३८ ई.पू.	धर्मराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक, 'युधिष्ठिर संवत्' का प्रवर्तन
6	युधिष्ठिर संवत् ३०८२ (५७ ई.पू.)	उज्जयिनी में महाराजाधिराज विक्रमादित्य का राज्याभिषेक। विक्रम संवत् का प्रवर्तन
7	विक्रम संवत् १३५ (७८ ई.)	महाराज शालिवाहन द्वारा 'शालिवाहन संवत्' का प्रारंभ
8	विक्रम संवत् ३७७ (३२० ई.)	'वल्लभी संवत्' का प्रारंभ
9	विक्रम संवत् ३८६ (३२९ ई.)	काञ्ची कामकोटि पीठ के पन्द्रहवें शंकराचार्य गंगाधर प्रथम का अगस्त्य पर्वत पर निधन
10	विक्रम संवत् ४३८(३८१ ई.)	द्वारका शारदा पीठ के उन्नीसवें शंकराचार्य विद्यातीर्थ का निधन
11	विक्रम संवत् ६३४ (५७७ ई.)	काञ्ची कामकोटि पीठ के सत्ताइसवें शंकराचार्य चिद्विलास का काञ्ची में निधन
12	विक्रम संवत् ६६३ (६०६ ई.)	सम्राट् हर्षवर्धन का राज्याभिषेक, 'हर्ष संवत्' का प्रारंभ
13	विक्रम संवत् १०६४ (१००७ ई.)	संत झूलेलाल का नसरपुर (सिंध) में जन्म, चेटीचण्ड महोत्सव
14	विक्रम संवत् १६१६ (१५५९ ई.)	द्वारका शारदा मठ के चौवनवें शंकराचार्य महादेवाश्रम द्वितीय का निधन
15	विक्रम संवत् १७१७ (१६६० ई.)	शिवाजी द्वारा पन्हालगढ़ पर अधिकार
16	विक्रम संवत् १९४६ (१८८९ ई.)	राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार का नागपुर में जन्म।
17	विक्रम संवत् १९८४ (१९२७ ई.)	डॉ. भगवान्दास के कर-कमलों से बाबू शिवप्रसाद गुप्त द्वारा स्थापित भारतमाता मन्दिर का शिलान्यास।
18	विक्रम संवत् २०१९ (१९६२ ई.)	नागपुर के रेशिमबाग संघ स्थान में 'डॉ. हेडगेवार स्मृति मन्दिर' की स्थापना

आइए, अपने गौरवशाली इतिहास का संरक्षण करें तथा
विश्व की प्राचीनतम हिन्दू संस्कृति पर गौरवान्वित हों।

परम पूज्य स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरि जी महाराज-आधुनिक विश्व समन्वयक

स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरि जी
संस्थापक अध्यक्ष, गीता परिवार
कोषाध्यक्ष, श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र

परम पूज्य स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरि जी महाराज को हम सभी ने अयोध्या में 22 जनवरी को प्रधानमंत्री जी के 11 दिवसीय उपवास की पारणा करवाते हुए देखा। इनकी ओजस्वी वाणी ने प्राण प्रतिष्ठा के उस महापर्व पर पूरे विश्व से जुड़े सभी रामभक्तों का मन मोह लिया। गत 60 वर्षों से श्रीमद्भागवत, रामायण, महाभारत और अन्य प्राचीन, पवित्र आध्यात्मिक ग्रन्थों पर उनके मन्त्रमुग्ध कर देने वाले प्रवचन मन-मस्तिष्क पर गहन प्रभाव डालते हैं। भारतीय संस्कृति के मूल वेदों की शिक्षा का पुनरुत्थान, महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के 37 वेद विद्यालयों के माध्यम से करने वाले स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी महाराज, जिन्हें पहले आचार्य किशोरजी मदनगोपाल व्यास के नाम से जाना जाता था (उनके भक्त उन्हें प्रेम से 'स्वामीजी' कहते हैं), उनका जन्म 25 जनवरी 1949 को महाराष्ट्र के एक छोटे से गाँव बेलापुर में एक श्रेष्ठ सनातनी ब्राह्मण परिवार में हुआ था।

स्वामीजी को प्राचीन आध्यात्मिक विषयों के अध्ययन, भक्ति और निष्ठावान धार्मिकता की विरासत अपने माता-पिता से एक लंबी पारिवारिक परम्परा के माध्यम से मिली है।

स्वामीजी ने अपनी प्राथमिक शिक्षा अपने पैतृक गांव में पूरी की और इसके बाद वे तत्त्वज्ञान विद्यापीठ में सम्मिलित हो गये, जिसकी स्थापना श्री पांडुरंग शास्त्री आठवले जी ने की थी, जिन्होंने 'स्वाध्याय' नामक एक क्रांतिकारी सामाजिक-धार्मिक आन्दोलन का आरम्भ किया था।

स्वामी जी ने श्री पांडुरंग शास्त्री आठवले जी के सफल नेतृत्व में दर्शनशास्त्र में स्नातक की डिग्री प्राप्त की।

इसके पश्चात, स्वामीजी भारत की आध्यात्मिक राजधानी वाराणसी में वेदों, उपनिषदों एवं भारत के प्राच्य शास्त्रों के गहन अध्ययन के लिए गये। वहां उन्होंने प्रसिद्ध वैदिक विद्वान वेदमूर्ति डॉ. विश्वनाथजी देव के मार्गदर्शन में अध्ययन किया और 'दर्शनाचार्य' की प्रतिष्ठित उपाधि प्राप्त की।

अध्ययन के साथ-साथ, स्वामीजी ने 120 वर्ष पुरानी पारिवारिक परम्परा को आगे बढ़ाते हुए विभिन्न प्रवचन दिये। उनका प्रथम धार्मिक प्रवचन श्रीमद्भागवत पर उनके पैतृक गांव बेलापुर में ही हुआ था। उस समय स्वामीजी की आयु मात्र 17 वर्ष थी।

तब से अब तक लगभग 50 वर्षों से स्वामीजी श्रीमद्भागवत, रामायण, महाभारत, ज्ञानेश्वरी, दासबोध, योग वासिष्ठ, श्रीदेवीभागवत, शिवपुराण, हनुमान कथा, बुद्ध कथा आदि पर धाराप्रवाह प्रवचन दे रहे हैं। अभी हाल ही में वह छत्रपति शिवाजी महाराज पर अपनी पहली कथा पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार में करने जा रहे हैं।

सन्त ज्ञानेश्वर महाराज के एक अनन्य भक्त, स्वामीजी ने ज्ञानेश्वरी (श्रीमद्भगवद्गीता का मराठी भाष्य) को अपने जीवन का मार्गदर्शक सिद्धान्त बना लिया है। स्वामीजी ने अगली पीढ़ियों को श्रीज्ञानेश्वरी में निहित अमूल्य ज्ञान प्रदान करने के लिए सन्त श्रीज्ञानेश्वर गुरुकुल की स्थापना भी की।

तमिलनाडु में कांची कामकोटि पीठ के प्रमुख परमपूज्य

श्री जयेन्द्र सरस्वती जी के आशीर्वाद से, स्वामीजी को हरिद्वार में पवित्र गंगा नदी के तट पर 30 अप्रैल 2006 के शुभ दिन पर परमहंस संन्यास (उच्चतम आध्यात्मिक संन्यास) के वक्त परम पूज्य स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि जी द्वारा दीक्षा दी गई थी। अपने संन्यास के पश्चात स्वामीजी, जिन्हें पहले आचार्य किशोरजी व्यास के नाम से जाना जाता था, को अब औपचारिक रूप से स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरिजी महाराज कहा जाता है, जिन्हें उनके अनुयायी प्रेम से स्वामीजी कहते हैं। प. पू. स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरिजी महाराज ने वर्ष 1986 में संगमनेर में गीता परिवार की स्थापना की और उनका स्वप्न था 'हर घर गीता, हर कर गीता' का, जिसके फलस्वरूप उन्हीं के आशीर्वाद से गीता परिवार में 23 जून 2020 को निःशुल्क ऑनलाइन गीता कक्षाओं का आरम्भ हुआ। कुछ ही वर्षों में देखते देखते यह कार्यक्रम वटवृक्ष की भांति चारों ओर विस्तारित हो गया। आज 186 देशों से लगभग नौ लाख साधक जुड़ चुके हैं, जो कि 19 विभिन्न समयों पर 13 भाषाओं में नित्य 2200 से भी अधिक कक्षाओं में गीता का शुद्ध उच्चारण सीख रहे हैं।

सनातन संस्कृति के संरक्षक प.पू. स्वामीजी को श्रीरामजन्मभूमि न्यास के कोषाध्यक्ष का महत्वपूर्ण दायित्व दिया गया एवं देशभर में विभिन्न स्थानों पर प्रवास करते हुए प्रभु श्रीराम के इस बहुप्रतीक्षित कार्य को भव्य स्वरूप प्रदान करने हेतु राष्ट्रपति जी से लेकर सामान्य जनमानस तक बड़ी मात्रा में धन का संकलन करने में अपना योगदान दिया। आज देश-विदेश में स्वामीजी के अनेक शिष्य संस्कृति के मार्ग पर चलकर अपने जीवन को आध्यात्म की ओर अग्रसर कर रहे हैं।

पूज्य स्वामीजी मथुरा में श्रीकृष्णजन्मभूमि के उपाध्यक्ष भी हैं। इस प्रकार राम कृष्ण की भक्ति का प्रचार करते हुए स्वामीजी देश को पुनः जगद्गुरु के पद पर आसीन करने हेतु निशिवासर संलग्न हैं। परम पूज्य स्वामीजी समाज, राष्ट्र एवं सम्पूर्ण विश्व हेतु कल्याण की भावना निरन्तर जागृत कर रहे हैं एवं आने वाली पीढ़ी उनके उपदेशों को बड़ी सुन्दरता से आत्मसात् कर रही है। निश्चित ही आपके सान्निध्य में भारतवर्ष एक बार पुनः आध्यात्मिकता में समृद्ध होगा एवं 'हो स्वर्ग सम माँ भारती' इस वाक्य को चरितार्थ करने में समर्थ हो सकेगा।

नववर्ष चेतना समिति

श्री चम्पत राय जी - एक सनातन योद्धा

चम्पत राय जी
महासचिव, श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास

1975 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा लगाए गए आपातकाल के दौरान चम्पत राय नाम के एक युवा प्रोफेसर बिजनौर जिले के धामपुर स्थित आर.एस. एम. डिग्री कॉलेज में बच्चों को भौतिक विज्ञान पढ़ा रहे थे। उनके संघ से जुड़ाव के कारण पुलिस उन्हें गिरफ्तार करने पहुंची। अपने छात्रों के बीच लोकप्रिय चम्पत राय जी जानते थे कि उनकी गिरफ्तारी से उनके छात्रों पर क्या प्रभाव पड़ेगा। पुलिस को भी छात्रों के संभावित विरोध का अंदाजा था।

प्रोफेसर चम्पत राय जी ने पुलिस अधिकारियों से कहा, 'आप लोग जाइए, मैं कक्षा खत्म करके थाने आ जाऊँगा।' उनके शब्दों के भार को समझते हुए पुलिस अधिकारी चले गए। कक्षा समाप्त करने और बच्चों को शांतिपूर्वक घर लौटने की सलाह देने के बाद, प्रोफेसर चम्पत राय जी घर गए, अपने माता-पिता का आशीर्वाद लिया और पुलिस स्टेशन की ओर चल पड़े, जो आगे चलकर उत्तर प्रदेश की विभिन्न जेलों में उनके लंबे समय तक रहने का कारण बना।

जेल के कठिन समय को 18 महीने तक सहन करने के पश्चात जब वह बाहर निकले, तो उनके दृढ़ चरित्र को तत्कालीन सरसंघचालक श्री रज्जू भैया ने पहचाना, और उन्हें विश्व हिन्दू परिषद के माननीय अशोक सिंहल जी के नेतृत्व में आरम्भ हुए श्रीराममंदिर आंदोलन से जुड़ने के लिए अयोध्या जाने का मार्गदर्शन दिया।

श्रीचम्पत राय जी ने सरकारी नौकरी से त्याग-पत्र देकर रामजन्मभूमि आन्दोलन में खुद को झोंक दिया। उन्होंने अयोध्या के हर गांव का दौरा किया और हर परिस्थिति में लड़ने के लिए तैयार युवा शक्ति का निर्माण किया। अयोध्या की हर गली चम्पत राय जी को पहचानती थी और वह भी अयोध्या की हर गली को भली-भाँति जानते थे। उन्होंने अयोध्या के इतिहास, वर्तमान और भूगोल का इतना विस्तृत ज्ञान इकट्ठा कर लिया कि उनके साथी उन्हें 'अयोध्या का विश्वकोश' कहने लगे।

बाबरी मस्जिद के विध्वंस से पहले ही चम्पत राय जी ने राम मन्दिर के लिए 'दस्तावेजी साक्ष्य' जुटाना शुरू कर दिया था। उन्होंने अनगिनत पृष्ठों के दस्तावेजों को पढ़ा, उन्हें सुरक्षित रखा, अपने घर को उनसे भर दिया और हर महत्वपूर्ण जानकारी को आत्मसात कर लिया। जब श्री के. परासरन जी जैसे बड़े वकील और अन्य सहयोगी जन्मस्थान के लिए कानूनी लड़ाई में शामिल हुए, तो इन्होंने ही निर्विवाद साक्ष्य पेश किए, जिससे न्यायालय ने श्रीरामजन्मभूमि के पक्ष में फैसला दिया।

6 दिसम्बर 1992 को, जब प्रमुख नेता मंच से कारसेवकों को निर्देश दे रहे थे, चम्पत राय कुछ दूर कुछ स्थानीय युवाओं के साथ खड़े थे। एक पत्रकार ने उनसे पूछा, 'अब क्या होगा?' उन्होंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया है, 'यह राम की वानर सेना है, सीटी की आवाज पर पीटी (शारीरिक प्रशिक्षण) करने यहाँ नहीं आयी... यह वह हासिल करेगी जिसके लिए वह यहाँ आई है।'

इन शब्दों के साथ, उन्होंने एक कुदाल उठा ली, बाबरी ढांचे की ओर बढ़े, और उसके बाद केवल 'जय श्री राम' का जयघोष गूँजता रहा... और इतिहास रचा गया। आदरणीय चम्पत राय जी को सुप्रीम कोर्ट का निर्णय आने के बाद सर्वसम्मति से श्रीरामजन्मभूमि न्यास का सचिव नियुक्त किया गया। उनका पूरा जीवन राष्ट्र, धर्म और भगवान राम की सेवा में ही समर्पित रहा। अपने नाम पर कोई संपत्ति नहीं, कोई विलासिता नहीं। अत्यंत सादगी से अपना पूरा जीवन समर्पित करने वाले वाले यह सनातन योद्धा श्रद्धापूर्वक अब 'रामलला का पटवारी' कहलाते हैं।

विक्रम संवत् - २०८१ - "पिङ्गल" संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिंङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

नववर्ष चेतना समिति

डॉ. महेन्द्र सिंह

विधायक, विधान परिषद
उत्तर प्रदेश

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिंङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

नववर्ष चेतना समिति

नीरज गुप्ता

पूर्व महानगर अध्यक्ष
भारतीय जनता पार्टी, लखनऊ महानगर

श्रीराममन्दिर निर्माण : भारतीय संस्कृति, संस्कार एवं स्वाभिमान की पुनर्स्थापना

प्रभात रंजन दीन
लेखक एवं वरिष्ठ पत्रकार

हम अपनी गौरवशाली स्मृति, संस्कृति, संस्कार और स्वाभिमान की स्थापना के साक्षी हैं। यह इस कालखंड की संततियों का महान गौरव है। आने वाली पीढ़ियां इस गौरव-स्थापना के बारे में सुनेंगी, पढ़ेंगी और तस्वीरों में देखेंगी। हम इसे अपनी आंखों से देखने वाले सौभाग्यशाली लोग हैं। सोमनाथ मंदिर से लेकर राम मंदिर तक, महमूद गजनी से लेकर बाबर तक के विध्वंस, अपमान और तुष्टिकरण की दुरूह यात्रा के दीर्घकाल के बाद हम अपनी स्वतंत्रता, अपनी गौरवशाली विरासत और सुसभ्य संस्कृति की सुरक्षा और संरक्षण के प्रति जाग्रत और सक्रिय हुए हैं। वह भी पिछले करीब एक दशक से। भारतवर्ष के इतिहास में यह दशक विरासत और संस्कृति के संरक्षण एवं उसकी स्थापना के क्रांतिकारी काल के रूप में दर्ज हो गया है। वहशी और हवसी मुगलों और लालची लोलुप अंग्रेजों की भौतिक गुलामी के लंबे त्रासद दौर से हमें 1947 को खंडित मुक्ति मिली, लेकिन हम धार्मिक और मानसिक गुलामी से आजादी के 67 साल बाद भी मुक्त नहीं हो सके। मुक्त हुए होते तो हमें अपनी विध्वंसित संस्कृति के पुनरुद्धार की याद आती, हम उस दिशा में सचेत हुए होते और उसे कार्यरूप में उतारते। वास्तव में यह मुक्ति-यात्रा वर्ष 2014 से शुरू होती है.....यह यात्रा लंबी चलने वाली है।

मुक्ति-यात्रा का प्रारंभ ही असल में भारतवर्ष का अमृतकाल है। कदाचित इसीलिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस मुक्ति-यात्रा को ऊर्जा का अमृत, विक्रमादित्य, राजा भोज, छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप जैसे महान राजाओं, योद्धाओं और स्वाधीनता सेनानियों से मिली प्रेरणाओं का अमृत, नए विचारों का अमृत, नए संकल्पों का अमृत और आत्मनिर्भरता एवं गौरव-स्थापना का अमृत कहते हैं। देश के नागरिक इसी अमृत को अब चख रहे हैं, उसका स्वाद ले रहे हैं और अपने महापुरुषों के प्रति कृतार्थ हो रहे हैं। यह वाकई मुक्ति-यात्रा का अमृत-काल है, सांस्कृतिक पुनर्स्थापना का काल है, राष्ट्र जागरण का काल है, स्वप्न पूरा करने का काल है और वैश्विक शांति एवं विकास का काल है। देश भी इसे अब पूरी संजीदगी से महसूस कर रहा है और इसे चरितार्थ होता हुआ देख रहा है।

पौराणिक सांस्कृतिक शब्दावली में कहें तो सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग और कलियुग के मौजूदा कालखंड तक और आधुनिक शब्दावली में कहें तो प्राचीन से लेकर मध्यकाल और उत्तर-मध्यकाल तक उत्तर प्रदेश इतिहास की धुरी बना रहा है। इस प्रदेश का नाम भले ही अलग-अलग रहा हो, पर इस क्षेत्र-विशेष ने संस्कृति, शौर्य, आध्यात्म और आंदोलन के प्रतिमान स्थापित किए हैं।

सतयुग भगवान विष्णु का युग है। अलकनंदा के तट पर भगवान विष्णु का स्थान बद्रीनाथ, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दोनों विरासतों के रूप में उत्तर भारत में स्थापित है। भू-राजनीतिक दृष्टि से यह पवित्र भूमि उत्तर प्रदेश की थी, आज उत्तराखंड में है, लेकिन आस्था का कभी खंड नहीं होता। भू-राजनीतिक दृष्टि का संदर्भ भारत और चीन की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से भी जुड़ता है। आस्था और सुरक्षा दोनों दृष्टिकोणों से इस स्थान की महत्ता आजादी के तकरीबन सत्तर साल बाद तक सत्ताई स्तर पर समझी ही नहीं गई। बद्रीनाथ मंदिर के ठीक सामने भारत-चीन

सीमा का आखिरी गांव माणा है। आस्था और सुरक्षा के इस संवेदनशील स्थान का महत्व इतने वर्षों बाद समझा गया जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने माणा गांव आकर कहा कि यह अंतिम गांव नहीं, बल्कि प्रथम गांव है। ऐसा कह कर प्रधानमंत्री ने यह स्पष्ट कर दिया कि अब देश की प्राथमिकता क्या है। उन्होंने कहा, अब मेरे लिए सीमा पर बसा हर गांव देश का पहला गांव हो गया है। मोदी ने कहा, आजादी के सात दशक बाद भी हमारे देश को गुलामी की जंजीर ने इस तरह जकड़ कर रखा था कि द्वेष और नफरत का भाव ही हावी रहा, अपनी संस्कृति और भाषा को लेकर हीनभावना रही, आजादी के बाद सोमनाथ मंदिर के निर्माण के समय क्या हुआ यह हम सब जानते हैं। मोदी ने इस बात पर हैरत जताई कि लोग विदेशों में वहां की संस्कृति से जुड़े स्थानों की तारीफ करते नहीं थकते, लेकिन भारत में इसी काम को हेय दृष्टि से देखा जाता था। लंबे समय तक हमारे यहां अपने आस्था-स्थलों के विकास को लेकर एक नफरत का भाव रहा। आस्था के ये केंद्र सिर्फ एक ढांचा नहीं, बल्कि हमारे लिए प्राणवायु हैं। वो हमारे लिए ऐसे शक्तिपुंज हैं, जो कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी हमें जीवंत बनाए रखते हैं। आस्था और आध्यात्म के स्थलों का पुनर्निर्माण और उसके सम्मान की पुनर्स्थापना इसीलिए आवश्यक है।

भारतवर्ष की विरासत और संस्कृति त्रेता युग के प्रतिनिधि ईश्वर श्रीराम के बिना अधूरी है। उन्हीं भगवान राम को किंवदंतियों में उलझा कर रखने की सतत कुचक्री कोशिशें होती रहीं। यहां तक कि राम के अस्तित्व को लेकर प्रश्न उठाने की सार्वजनिक धृष्टताएं भी हुईं। बीता एक दशक इसलिए भी रेखांकित करने वाला काल है, क्योंकि इस विशेष-काल ने इस धरती पर भगवान राम के अवतरण की प्रामाणिकता स्थापित की और अधर्मियों की बोलती बंद कर दी। आज भव्य राम मंदिर का निर्माण, हमारी गौरवशाली विरासत और संस्कृति के साथ-साथ सम्मान की पुनर्स्थापना है। यह स्वर्णाक्षरों में लिखी जाने वाली उपलब्धि है, जिसने सांस्कृतिक-धार्मिक स्वतंत्रता का सैकड़ों वर्षों से दमन करने वाली हरकतों और साजिशों को ध्वस्त कर भारत का स्वाभिमान जागृत किया है।

संस्कृति और सम्मान की पुनर्स्थापना के यज्ञ में शामिल नरेंद्र मोदी ने श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा करने के पहले तमिलनाडु में अरिचल मुनाई के पास स्थित राम मंदिर में पूजा अर्चना कर रामायण काल से ही अटूट रूप से जुड़े उत्तर और दक्षिण को फिर से उसी भाव से जोड़ने की भावनात्मक आध्यात्मिक यात्रा पूरी की। प्रधानमंत्री ने इस यात्रा के जरिए भगवान राम से राम सेतु को भी जोड़ा। अरिचल मुनाई ही वह स्थान है, जहां राम सेतु का निर्माण हुआ था। राम सेतु को लेकर भी अधर्मियों ने प्रश्न खड़े किए थे। यहां तक कि राम सेतु को ध्वस्त करने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी थी। लेकिन भगवान राम ने उस कुत्सित-सत्ता को ही ध्वस्त कर दिया। कांग्रेस सरकार के दौरान सेतु समुद्रम परियोजना को हरी झंडी दिखाकर सेतु के चारों ओर ड्रेजिंग कर उसे ध्वस्त करने का आदेश दे दिया गया था, लेकिन वे अपनी मंशा में कामयाब नहीं हो पाए।

राम सेतु समुद्र के पार तमिलनाडु के पंबन द्वीप को श्रीलंका के मन्नार द्वीप से जोड़ता है। रामायण में उल्लेख है कि राम सेतु तैरते हुए पत्थरों से बनाया गया है। सुखद यह है कि ऐसे तैरते हुए पत्थर आज भी रामेश्वरम में मिल जाते हैं। सबसे पहले वाल्मीकि रामायण में राम सेतु का उल्लेख किया गया। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार यह पुल भगवान राम की वानर सेना द्वारा निर्मित किया गया था। राम सेतु की ऐतिहासिकता पर सवाल उठाने वाली जमातों को यह जानकर धक्का लगा कि रामायण काल, यानी 5000 ईसा पूर्व और पुल के कार्बन एनालिसिस का तालमेल एकदम सटीक मिलता है। इसके प्रमाण मिल चुके हैं कि 15 वीं शताब्दी तक पुल पर चलकर जाया जा सकता था। आधिकारिक रिकॉर्ड बताते हैं कि वर्ष 1480 तक पुल पूरी तरह से समुद्र तल से ऊपर था।

खैर, अयोध्या के राम मंदिर को राजनीति और वोट से जोड़ कर व्याख्यायित करने वालों की भी देश में लंबी कतार है। ऐसे लोगों को तथ्यों का अध्ययन या जानकारी नहीं है। जब राम मंदिर को लेकर इलाहाबाद हाईकोर्ट का फैसला आया था तो उस परिप्रेक्ष्य में गोरक्षपीठ के तत्कालीन

पीठाधीश्वर महंत अवैद्यनाथ से विस्तार से विमर्श का सुअवसर मिला था। उस ऐतिहासिक बातचीत के वक्त महंत अवैद्यनाथ के उत्तराधिकारी शिष्य योगी आदित्यनाथ भी मौजूद थे। योगी आदित्यनाथ आज उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं। महंत अवैद्यनाथ से हुए उस साक्षात्कार का सबसे महत्वपूर्ण और रेखांकित करने वाला अंश यह है कि राम मंदिर आंदोलन और राजनीति के प्रसंग पर महंत अवैद्यनाथ ने बेलाग कहा था, 'राम मंदिर आंदोलन का राजनीति से कोई लेना देना नहीं। यह विशाल और व्यापक जनआस्था का मसला जरूर है, लेकिन इस आंदोलन का निहित लक्ष्य राजनीति नहीं था, और न है।' राम मंदिर आंदोलन के पुरोधा महंत अवैद्यनाथ का यह कथन बिल्कुल चौंकाने वाला और इस बारे में और अधिक गहराई से जानने की जिज्ञासा से भर देने वाला था। इस पर बातचीत आगे बढ़ी। महंत अवैद्यनाथ ने कहा, 'राम मंदिर आंदोलन पांच सौ साल से भी अधिक पुराना है। यह आंदोलन राम मंदिर को ध्वस्त कर मस्जिद खड़ी किए जाने के कुकृत्य का प्रतिकार कर अपना गौरव पुनर्स्थापित करने का तो था ही, साथ ही यह आंदोलन वैष्णवों और शैवों में व्यापक और स्थायी एकता स्थापित करने का आंदोलन भी था।' महंत अवैद्यनाथ ने कहा, 'सनातन धर्म में भगवान विष्णु को मानने वाले वैष्णव संप्रदाय और भगवान शिव को मानने वाले शैव संप्रदाय दोनों अलग-अलग राह पर चलते थे। दोनों एक दूसरे से विपरीत थे। वैष्णवों के मंच पर कोई शैव नहीं जा सकता था और न शैवों के मंच पर कोई वैष्णव जाता था। दोनों संप्रदायों के बीच दूरी थी और यह दूरी वैमनस्यता को क्रमशः प्रगाढ़ करती जा रही थी। सनातनियों की यह आपसी खाई सनातन धर्म के लिए ही अहितकारी थी। यही वजह है कि शैव संप्रदाय के संतों ने राम मंदिर आंदोलन की अगुवाई की। राम मंदिर वैष्णवों का है, किंतु राम मंदिर की पुनर्स्थापना का आंदोलन शैवों के नेतृत्व में तीव्र हुआ। राम मंदिर आंदोलन ने वैष्णवों और शैवों को एक कर दिया, एक धरातल पर ला दिया, आपस में मिला दिया, दोनों एक दूसरे का सम्मान करने लगे और एक दूसरे की पीठों पर सम्मानित होने लगे..... जिस लक्ष्य को लेकर राम मंदिर आंदोलन प्रारंभ हुआ, वह लक्ष्य प्राप्त हुआ।'

महंत अवैद्यनाथ की बातों ने राम मंदिर आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने वाले शैव परंपरा के संत महंत दिग्विजय नाथ, महंत अवैद्यनाथ और योगी आदित्यनाथ के अभूतपूर्व योगदानों को एकबारगी तरोताजा कर दिया। भगवान विष्णु के अवतार भगवान राम के स्थान अयोध्या में दिवंगत शैव संतों का सम्मान और मौजूदा संत योगी आदित्यनाथ का अयोध्या में होने वाला आतिथ्य-सत्कार वैष्णवों और शैवों के एकाकार होने का जीवंत प्रमाण है।

महंत अवैद्यनाथ के इस आध्यात्मिक उद्घाटन ने अतिरिक्त शोध-समीक्षा की तरफ भी प्रेरित किया। इस प्रक्रिया में महान राजा विक्रमादित्य का संदर्भ सामने आया, उसे आपके समक्ष रखना अनिवार्य है। आज जब अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण हो चुका और प्राण-प्रतिष्ठा के साथ रामलला स्थापित हो चुके, तब यह जानना और भी आनंद से भर देता है कि रामजन्मभूमि का पता लगाने वाले और कोई नहीं राजा विक्रमादित्य ही थे। यह कितना सुखद संयोग है कि राजा विक्रमादित्य भी शैव संप्रदाय के थे और वह भी गोरखनाथ पीठ की कड़ी से जुड़े हुए। विक्रमादित्य की बहन मैनावती ने गुरु गोरखनाथ से दीक्षा ली थी। विक्रमादित्य के बड़े भाई महाराजा भर्तृहरि ने भी गुरु गोरखनाथ से ही दीक्षा लेकर उज्जैन का राजपाट छोड़ दिया था और संन्यास धारण किया था। बाद में वे बाबा गोपीचंद भरथरी के नाम से लोक-विख्यात हुए। भरथरी, संस्कृत साहित्य के प्रकांड विद्वान के रूप में भी स्थापित हैं। महाराज विक्रमादित्य ने भी कालांतर में गुरु गोरखनाथ से ही दीक्षा ली थी, और उन्हीं राजा विक्रमादित्य ने अयोध्या में भगवान राम की मूल जन्मभूमि खोज निकाली, जहां आज भव्य राम मंदिर स्थापित हुआ, जहां आज भगवान राम अवस्थित हैं।

भगवान विष्णु के अवतार राम और श्रीकृष्ण तीन युगों के प्रतिनिधि ईश्वर ने ब्रह्मांड के इस पूर्वी क्षेत्र को वरदान दिया है। अपने अवतरण का वरदान। धरती के इस अंश को इसीलिए ब्रह्मांश भी कहते हैं। युगातीत भगवान

हैं। युगातीत भगवान शंकर ने भी इसी ब्रह्मांश के कैलाश पर्वत को अपना स्थान बनाया। अपनी विरासत और संस्कृति की हिफाजत और उसकी पुनर्स्थापना की दृढ़ता के कारण ही हम कैलाश मानसरोवर को फिर से हासिल करने का लक्ष्य साध रहे हैं। राजनीतिक नक्शे में भले ही कैलाश पर्वत चीन के कब्जे में दिखता है, लेकिन कैलाश मुक्त है, जैसे भगवान शिव मुक्त हैं। दुनिया के सारे पर्वत चढ़ने वालों को पता है कि कैलाश को पैरों से नहीं, केवल आत्मा से स्पर्श किया जा सकता है, जहां भगवान शिव और मां पार्वती वास करती हैं। इन्हीं कारणों से धरती का पूर्वी हिस्सा आध्यात्मिक चमत्कारों से समुन्नत और सम्पन्न माना गया है। भगवान राम और भगवान कृष्ण के साथ सिद्धगुरुओं की लंबी कतार उन्हीं आध्यात्मिक चमत्कारों का स्वरूप हैं। देश और दुनिया में भारत की सांस्कृतिक पताका लहराने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी उन्हीं दैवीय चमत्कारों का प्रतिफल हैं। राम मंदिर से लेकर कृष्ण जन्मभूमि और देवाधिदेव भगवान शंकर के काशी विश्वनाथ धाम के पुनरुद्धार के यज्ञ में रत योगी आदित्यनाथ उन्हीं सिद्धसंतों के उत्तराधिकारी हैं, जिनके बारे में प्रधानमंत्री ने श्रद्धा के सुंदर शब्द कहे हैं। प्रधानमंत्री ने गुरु गोरखनाथ, गुरु मत्स्येंद्रनाथ, गुरु दिग्विजयनाथ और महंत अवैद्यनाथ जैसे सिद्धपुरूषों की कृपा और आशीर्वाद का उल्लेख किया, जिनके आशीर्वाद से भारतवर्ष की संस्कृति और विरासत की स्थापना का यज्ञ सम्पन्न हुआ। उन्हीं सिद्धगुरुओं की परम्परा के हैं योगी आदित्यनाथ, जो उत्तर प्रदेश के वर्तमान मुख्यमंत्री हैं। योगी आदित्यनाथ स्वयं में आध्यात्मिक सांस्कृतिक विरासत की स्थापना हैं। आधुनिक भारत के राजनीतिक इतिहास में एक सनातनी संन्यासी का प्रदेश का राजनीतिक अभिभावक बनना, इतिहास की स्थापना ही तो है। इससे किसी को इन्कार नहीं हो सकता।

सनातन धर्म के पुनरुत्थान के रचयिता दक्षिण भारत में जन्मे शंकराचार्य ने वाराणसी से ही आध्यात्मिक-सांस्कृतिक पुनर्स्थापना की अपनी यात्रा शुरू की थी और उत्तर प्रदेश के मैदानों से होते हुए हिमालय में बद्रीनाथ और केदारनाथ जैसे पवित्र मंदिरों की स्थापना की। बद्रीनाथ को सनातन संस्कृति का चौथा एवं आखिरी केंद्र माना जाता है। यह केंद्र दुनिया के ध्यान और दर्शन का केंद्र बना है, यह आजादी के अमृत काल के आखिरी दशक के जतन का सुंदर परिणाम है।

हम गंगा जैसी पवित्र अपनी गौरवशाली सांस्कृतिक धारा में बहते हुए वर्तमान के स्वाभिमान स्थापना काल तक पहुंचे हैं। यह प्रवाहमयी धारा कई यात्राओं की यादें ताजा करती है। इस यात्रा दौर में महान पराक्रमी राजाओं, वीर बांकुरे योद्धाओं, दानी महाराजाओं और मर्दानी महारानियों के गौरवशाली योगदान और बलिदान, मुगल आक्रांताओं और धर्मांध लुटेरों से मिले घोर संताप, सांस्कृतिक संक्रमण और नस्ली प्रदूषण, अंग्रेजों की बर्बर सामंती औपनिवेशिक गुलामी और इन सब त्रासदियों से निर्णायक मुक्ति का संघर्ष एवं बलिदान हमें बहुत रुलाते भी हैं और साथ ही गर्व से सीना तानने की हिम्मत भी देते हैं। वर्तमान काल हमें उन दुखों से सीख लेने और स्वाभिमान से सिक्त होने का सुअवसर प्रदान करता है। एक दशक की अल्पकालिक अवधि में भारतवर्ष और उत्तर प्रदेश समेत सम्पूर्ण राष्ट्र की मूर्त और अमूर्त सांस्कृतिक विरासतों को संजोने का काम हुआ और ज्ञान संसाधन की विरासत को नया अर्थ देकर स्थापित करने का जतन किया जा रहा है। हम इस गौरवशाली परिवर्तन के साक्षी हैं, यह देशवासियों का सौभाग्य है।

उत्तर प्रदेश मूर्त और अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के विशाल संग्रह के लिए सम्पूर्ण विश्व में विख्यात है। प्राचीनता, निरंतरता, सहिष्णुता, ग्रहणशीलता, आध्यात्मिकता और भौतिकता का अद्भुत समन्वय प्रदेश की बहुआयामी संस्कृति की मूल विशेषता है। कुरु, पांचाल, काशी और कौसल राज्य वैदिक संस्कृति के प्रमुख केंद्र रहे हैं। भगवान राम और भगवान कृष्ण की यह जन्मभूमि, सनातन, बौद्ध, जैन धर्मों और नाथ सम्प्रदाय की समृद्ध परम्परा भी संजोए हुई है। ऐतिहासिक स्मारकों, अभिलेखों, पांडुलिपियों, कलाकृतियों के साथ ललित कलाओं, दृश्य कलाओं, एवं प्रदर्शन कलाओं की दृष्टि से भी उत्तर प्रदेश वाकई अद्वितीय है। इसे इसी काल खंड में संरक्षित और संवर्धित किया जा रहा है।

कुरु, पांचाल, शूरसेन, वत्स, कौसल, मल्ल, काशी और चेदि जैसे उत्तर प्रदेश के आठ महाजनपद और क्रमशः

इंद्रप्रस्थ, अहिच्छत्र, मथुरा, कौशाम्बी, साकेत, कुशीनगर, वाराणसी और शुक्तिमती उन आठ महाजनपदों की प्रसिद्ध ऐतिहासिक राजधानियां रही हैं। क्या आजादी के बाद के सात दशकों में पीढ़ियों को इन महाजनपदों और इनकी राजधानियों के बारे में बताया गया? इसका सपाट उत्तर है-नहीं। यह काम पिछले एक दशक से शुरू हुआ और अब ज्ञान-संसाधन की संस्कृति की स्थापना के क्रम में वैदिक काल के इस ब्रह्मर्षि-देश के बारे में लोग जान पा रहे हैं। वैदिक काल के ऋषि-मुनियों भारद्वाज, याज्ञवल्क्य, वशिष्ठ, विश्वामित्र, वाल्मीकि जैसे महान संतों की कर्मभूमि उत्तर प्रदेश रही है, यह ज्ञान-बोध अब इस कालखंड में जाग्रत हुआ है। यह जागृति-काल है कि नई पीढ़ियां भी इस प्रदेश में अवतरित हुए निर्गुण धारा के संत कबीरदास, रैदास, मलूकदास, सुन्दरदास, धर्मदास, सगुण धारा में रामभक्ति के संत तुलसीदास, रामानन्द, नरहरि दास, अग्रदास, नाभा दास और कृष्ण भक्ति के संत सूरदास, कुम्भनदास, परमानन्ददास, छीतस्वामी, गोविंद गोस्वामी सरीखे महान व्यक्तित्वों को जान पा रही हैं और अपने ज्ञान-कोष में आत्मसात कर पा रही हैं।

भगवान बुद्ध ने बिहार के बोधगया में संबोधि के उपलब्ध होने के बाद अपना प्रथम उपदेश बनारस के निकट सारनाथ में दिया और एक ऐसे धर्म की नींव रखी, जिसने पूरी दुनिया में प्रकाश फैलाने का काम किया। महात्मा बुद्ध की निर्वाणस्थली उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में है, जिसे अमृत काल में विस्तारित, विकसित और सौंदर्यीकृत किया गया है। आज यह अमृत-स्थल के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय आकर्षण का केंद्र बना है। इस राज्य पर शासन कर चुके महान शासक चंद्रगुप्त प्रथम, मौर्य सम्राट अशोक, समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त द्वितीय और हर्षवर्धन भारतीय संस्कृति की शान हैं।

आठवीं सदी में राजा हर्ष की मृत्यु के बाद यशोवर्मन कन्नौज की गद्दी पर आसीन हुए और उन्होंने कश्मीर के राजा मुक्तापीड़ ललितादित्य के सहयोग से मंगोलों और अरबों से भारत की रक्षा की। बाद के कालखंड में गुर्जर प्रतिहारों ने नौवीं और दसवीं शताब्दी तक उत्तर भारत पर राज किया। गुर्जर प्रतिहार नरेश बड़े वीर योद्धा थे। वे कला, संस्कृति और साहित्य के भी प्रशंसक एवं संरक्षक थे। इस वंश में मिहिरभोज, महिपाल और महेन्द्रपाल प्रसिद्ध शासक हुए। इनका राज्य पश्चिम में मुल्तान और सौराष्ट्र तक, पूर्व में बिहार तक और दक्षिण में विंध्याचल पर्वत तक फैला हुआ था। बुंदेलखंड में चंदेल राजाओं ने महमूद गजनवी के आक्रमणों का सफलतापूर्वक मुकाबला किया। उनका कालिंजर गढ़ अजेय बना रहा। महोबा के चंदेल वंश ने 400 वर्ष तक यहां शासन किया। खजुराहो के अति सुन्दर मंदिरों का निर्माण इन्हीं चंदेल राजाओं ने किया। दूसरा वंश गहरवारों का था। इस राजवंश के प्रादुर्भाव से इस क्षेत्र में पुनः शान्ति एवं सुव्यवस्था स्थापित हुई। महाराजा पृथ्वीराज चौहान की पराजय के बाद धीरे-धीरे मध्य देश मुसलमानों के कब्जे में आता चला गया और धार्मिक संक्रमण का पतित दौर सैकड़ों साल तक चलता रहा। इस अवधि में तमाम मुस्लिम आक्रांताओं और लुटेरों ने भारत पर राज किया और सनातम धर्म और आस्था के केंद्रों को ध्वस्त कर धर्मांधता की बदहवासी में अपनी इबादतगाहें खड़ी कीं। कहीं हिंदू मंदिर को संकरी गलियों में जकड़ दिया, कहीं मंदिर का अतिक्रमण कर मस्जिद खड़ी कर दी तो कहीं मंदिर ढहा कर मस्जिद का ढांचा बना दिया। मुस्लिम आक्रांताओं द्वारा ध्वस्त किए गए सनातनी आस्था के उन केंद्रों की अब हुई पुनर्स्थापना भारतवर्ष की गौरवशाली उपलब्धियों में शामिल है।

कायर-क्लीवों और अवसरवादियों के कारण भारत में घुसे मुसलमान लुटेरों ने न केवल देश को लूटा बल्कि राजसिंहासन पर भी कब्जा जमाया। उन्होंने देश की कायर-क्लीव अवसरवादी जमातों को मुसलमान बनाया और भारत की पावन संस्कृति को संक्रमित किया। इस संक्रमण के खिलाफ महाराणा प्रताप, महाराजा रणजीत सिंह जैसे कई शूरवीर तनकर खड़े रहे। वीर सिख गुरुओं की लंबी कतार के अभूतपूर्व शौर्य और बलिदान आज भी हमें आत्मसम्मान के साथ तने रहने की सीख देते हैं। गुरु अर्जुन देव, गुरु तेगबहादुर, गुरु गोविंद सिंह और उनके परमवीर और मासूम बेटों बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह के बलिदान की गाथाएं हमारी नसों और नस्लों में स्थापित रहनी चाहिए। लेकिन अफसोस यह है कि आजाद देश की सत्ता का उपभोग करने वाली सियासी

मोदी ने देश को उन वीर साहेबजादों के अभूतपूर्व बलिदानों की फिर से याद दिलाई और यह घोषणा की कि गुरु गोविंद सिंह के साहेबजादों के साहस और बलिदान के प्रति कृतार्थ महसूस करने और उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए पूरा देश हर साल 26 दिसंबर को वीर बाल दिवस मनाएगा। वीर बाल दिवस की घोषणा भारतवर्ष की विरासत और संस्कृति की अभूतपूर्व स्थापना है।

ईस्ट इंडिया कम्पनी के रूप में भारत में घुसे अंग्रेजों ने भी सौ साल से ज्यादा भारत पर राज किया। विभिन्न उत्तर भारतीय राजवंशों, सिंधियाओं, गोरखों और नवाबों से छीने गए इस प्रदेश पर अंग्रेजों ने खूब दुष्प्रयोग किए। बंगाल प्रेजिडेंसी, आगरा प्रेजिडेंसी, यूनाइटेड प्रोविंस जैसे खंडों में विभाजित करने का पाखंड हुआ। फिर उत्तर प्रदेश ने बर्बर अंग्रेज शासन के खिलाफ 1857 का सशक्त विद्रोह खड़ा किया। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के अगुआ क्रांतिकारियों में मंगल पांडेय, राव कदम सिंह, कोतवाल धनसिंह गुर्जर, मक्का पासी, मौलवी अहमदुल्ला शाह, राजा जयलाल सिंह, गंगादीन मेहतर, नाना साहेब पेशवा, राणा बेनी माधव, शिवगुलाम सिंह, ठाकुर जोधा सिंह अटैया, वीर कुंअर सिंह जैसे अनगिनत शूरवीर और झलकारी बाई, बेगम हजरत महल और झांसी की रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगनाओं की गिनती होती है। इस विद्रोह ने अंग्रेजों की जमीन पोपली कर दी। विद्रोह का अत्यंत बर्बर तरीके से दमन किया गया। रणक्षेत्र में हुई शहादतों के साथ-साथ अत्याचारी अंग्रेजों ने हजारों क्रांतिकारियों को अलग-अलग स्थानों पर सार्वजनिक रूप से फांसी पर लटका दिया। 1857 विद्रोह को महज कुछ सिपाहियों की अनुशासनहीनता बताने वाले इतिहासकारों की ओछी हरकतों के समानान्तर उस क्रांति की वास्तविक गाथाओं को सामने लाने और उसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में इतिहास में स्थापित करने के बारे में 2014 के बाद यानी देश की खंडित आजादी के 67 साल बात सोचा और क्रियान्वित किया जा सका।

1880 के उत्तरार्द्ध में भारतीय राष्ट्रवाद का तीव्र उदय हुआ। 1922 में महात्मा गांधी का असहयोग आंदोलन पूरे देश के साथ सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश यानी तब के संयुक्त प्रांत में भी फैला। लेकिन गोरखपुर के चौरी-चौरा में हुई घटना की भ्रमित व्याख्या प्रस्तुत की गई और महात्मा गांधी ने एकतरफा निर्णय लेकर असहयोग आंदोलन स्थगित कर दिया। चौरी-चौरा में पुलिस द्वारा कुछ लोगों को जबरन गिरफ्तार किए जाने के विरोध में स्थानीय लोग थाने पर धरना दे रहे थे। पुलिस ने उन पर अंधाधुंध लाठियां चलाईं और फिर गोलीबारी की। इसके बाद ही जनमानस उत्तेजित हुआ और थाने में आग लगा दी, जिसमें कई पुलिस वाले मारे गए। इस घटना को हत्याकांड के तौर पर पेश किया गया और बेगुनाहों पर भीषण जुल्म ढाया गया। चौरी-चौरा कांड में अभियुक्त बनाए गए लोगों के बचाव में कोई नहीं आया। आखिरकार पंडित मदन मोहन मालवीय ने उनकी कानूनी लड़ाई लड़ी। चौरी-चौरा कांड के अभियुक्तों का मुकदमा पंडित मदन मोहन मालवीय ने लड़ा और अधिकांश क्रांतिकारियों को बचाया। उनके प्रयास से 151 क्रांतिकारी फांसी की सजा से बचे। 19 क्रांतिकारियों विक्रम, दुदही, भगवान, अब्दुल्ला, काली चरण, लाल मुहम्मद, लौटी, महादेव, मेघू अली, नजर अली, रघुवीर, रामलखन, रामरूप, रूदाली, सहदेव, मोहन, सम्पत, श्याम सुंदर और सीताराम को फांसी दे दी गई। 14 लोगों को आजीवन कारावास और 19 लोगों को आठ वर्ष की सश्रम कारावास की सजा हुई।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मुंडेरा बाजार का नाम चौरी-चौरा करके और चौरी-चौरा को शहीदों का स्मरणीय स्थल का स्वरूप देकर क्रांतिकारियों और शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि दी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी आजादी के अमृत महोत्सव का चौरी-चौरा से शुभारंभ करके असली इतिहास और विरासत की आधिकारिक स्थापना की। इसी तरह योगी सरकार ने काकोरी रेल कार्रवाई के शहीदों राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, पंडित राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां और ठाकुर रौशन सिंह की स्मृतियों को जिंदा रखने और काकोरी कार्रवाई में शामिल रहे 40 क्रांतिकारियों के योगदान संजो कर रखने का काम किया है। काकोरी का शहीद स्मारक अब देश के प्रमुख शहीद

है। काकोरी का शहीद स्मारक अब देश के प्रमुख शहीद स्मारकों में शुमार है। इसी तरह प्रयागराज में मुखबिरी के कारण शहीद हुए क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद की स्मृतियों को कालजयी बनाने का काम योगी सरकार ने किया।

भारतवर्ष के मुकुट कश्मीर पर आजादी के बाद भी षड्यन्त्रों और कुचक्रों का दौर चलता रहा। अनुच्छेद 370 के रूप में उन कुचक्रों को संविधान के पन्नों में भी घुसेड़ा गया, लेकिन ऐसा भी ईश-काल आया कि संविधान के पन्नों से वे बदनुमा जख्म हटाए गए और देश को पीड़ा से मुक्त किया गया। भारतवर्ष के लिए यह एक योगदान ही असली आजादी की दिशा में विराट और शौर्य से भरा कदम है।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद उत्तर प्रदेश ने भारत को सर्वाधिक प्रधानमंत्री दिए। इनमें जवाहर लाल नेहरू, इंदिरा गांधी, लाल बहादुर शास्त्री, राजीव गांधी, चौधरी चरण सिंह, विश्वनाथ प्रताप सिंह, चंद्रशेखर, अटल बिहारी वाजपेयी और नरेंद्र मोदी शामिल हैं। भारत की मौलिक संस्कृति और विरासत को संरक्षण देने, उसका संवर्धन करने और उसे चिरायु बनाने में किस प्रधानमंत्री का कितना योगदान है... यह सब अब सामने है....

लेखक-श्री प्रभात रंजन दीन

विक्रम संवत् - २०८१ - ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिंङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

नवचेतना समिति

साकेन्द्र प्रताप वर्मा

विधायक, कुर्सी विधान सभा
बाराबंकी, उत्तर प्रदेश

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिंङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

नवचेतना समिति

अशोक अग्रवाल

विधायक, विधान परिषद
उत्तर प्रदेश

अयोध्या में प्राण-प्रतिष्ठा (कविता)

पद्मश्री प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र

पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय, वाराणसी

आए पुनः निजधाम
अवधपुर श्री रघुनन्दन।
स्वर्गपुरी अभिराम
महकी रज श्री हरिचन्दन।।
आईं ससुरघर जनकदुलारी
देवर तीन, तीन महतारी
पूत परम बलधाम
विपत्तिहर मारुतनन्दन।।
त्रेतायुग में रावण मारा
कलि में पुनः बाबर बन हारा
पहुँचे प्रभु निज धाम
उजड़ गया पावन नन्दन।।
उजड़ी अयोध्या फिर से बसाई
मोदी-योगी जुड़वाँ भाई
जीत लिया संग्राम
विहँसता धर्म सनातन।।
'रामराज्य' सपना हुआ पूरा
कुछ न बचा अब कहीं अधूरा
सुधर जाएं जतुधान
बनें सब भक्त विभीषण।।
भारत बना विश्वगुरु प्यारा
भूतला गाये सुयश हमारा
बन गये ललित-ललाम
मिल गये दशरथ नन्दन।।

नववर्ष चेतना समिति

देवायतन की परम्परा और अयोध्या का नवनिर्मित श्रीरामजन्मभूमि मंदिर

डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह 'संजय'
प्राचार्य, भगवान सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय
दुबारकलाँ, मिर्जापुर

भारतीय संस्कृति में देव-मन्दिर, प्रासाद, देवायतन अथवा विमान एक विलक्षण आस्थामूलक वास्तु-रचना है। इष्टिका प्रमाण से निर्मित अथवा शैलकृत इस संरचना की अर्थवत्ता न तो सौन्दर्यबोध से ग्रहण की जा सकती है और न उपयोगिता की दृष्टि से। इसका सम्यक् अभिज्ञान इसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि के प्रकाश में ही सम्भव है। देवप्रासाद का दर्शन भक्ति अथवा धर्म में देवमूर्ति की अवधारणा तथा वैदिक परम्परा से निष्पन्न है। इसकी रचना-सम्बन्धी नियमावली वास्तुविद्या पर आधारित है। अतः घटाधार अधःशिला से लेकर चूड़शिला तक इसकी सांगोपांग व्याख्या वास्तुशास्त्र की पृष्ठभूमि के अभाव में सम्भव नहीं है।

भारतीय वाङ्मय में देवमूर्ति के लिए प्रतिकृति, बिम्ब, वपु, तनु, रूप, विग्रह, बेर, अर्चा, प्रतिमा प्रभृति शब्द प्रयुक्त होते हैं। अधिकांश मूर्ति-पूजक जातियों में उपास्य वस्तु अदृश्य शक्ति का प्रतीक मात्र समझा जाता है, किन्तु भारतीय अवधारणा में मूर्ति स्वयं देवता है। यह तथ्य उपर्युक्त शब्दों की विवेचना से स्वतः स्पष्ट हो जाता है। पांचरात्रों ने अपने देवाधिदेव के जिन रूपों को परिकल्पित किया है, उनमें एक अर्चा भी है। उसी मान्यता के अनुसार मूर्ति में प्राणप्रतिष्ठा होते ही विष्णु उसमें अवतरित हो जाते हैं।

वस्तुतः एवं तत्त्वतः इसी मान्यता के कारण देवता के आवास को मन्दिर, देवायतन, देवालय अथवा देवगृह कहते हैं। इस रथ में प्रासाद की पवित्रता स्वयं सिद्ध है, किन्तु भारतीय परम्परा में प्रासाद स्वयं भगवान् के श्रीविग्रह के रूप में मान्य है। मन्दिर को 'अग्निपुराण' में हरि का रूप कहा गया है, एवं 'हयशीर्षपांचरात्र' में सूर्य का ईशानशिवगुरुदेव पद्धति' में देवालय का ध्यान तथा पूजन शिव के मूर्त रूप में करने का विधान है। इसी आधार पर देव प्रासाद की परिकल्पना देवता के शरीर के रूप में की गयी है एवं उसके विविध भागों का नामकरण शरीरांगों की संज्ञा के आधार पर पाद, जंघा, स्कन्ध, कण्ठ / मस्तक आदि के रूप में किया गया है।

प्रासाद को देवस्वरूप स्वीकार कर भारतीय ऋषियों ने उनकी अर्थवत्ता को और अधिक व्यापक बना दिया है। शैवों ने प्रासाद को लिंग रूप में मान्यता दी है। 'प्रासादमण्डनम्' के अनुसार प्रासाद की जगती, शिवलिंग की पीठिका के समरूप है। उसका चतुरस्र भाग लिंग के बाह्य भाग के समान है। देवालय के अष्टास्र भाग को विष्णु भाग के समरूप तथा वर्तुलाकार शिखर को साक्षात् शिवलिंग कहा गया है। प्रायः इसी प्रकार की अवधारणा 'अग्निपुराण' में भी चरितार्थ हुई है। 'विष्णुपुराण' में विश्वेश्वर हरि का रजोगुण रूप ब्रह्मा, सत्व रूप विष्णु तथा तमोगुण रूप में रुद्र का उल्लेख किया गया है-

जुषान् रजोगुणं तत्र स्वयं विश्वेश्वरो हरिः।
ब्रह्माभूत्वास्य जगतो विसृष्टौ सम्प्रवर्तते।
सृष्टं च पात्यनुयुगं यावत्कल्पविकल्पना।
सत्त्व मद्भगवान्विष्णुरप्रमेयपराक्रमः।।
तमोद्रेकी च कल्पान्ते रुद्ररूपी जनार्दनः।
मैत्रेयाखिलभूतानि भक्षयत्यतिदारुणः।।

अर्थात् उसमें स्थित हुए स्वयं विश्वेश्वर भगवान

विष्णु ब्रह्मा होकर रजोगुण का आश्रय लेकर इस संसार की रचना में प्रवृत्त होते हैं। रचना हो जाने पर सत्त्वगुण-विशिष्ट अतुल पराक्रमी भगवान विष्णु उसका कल्पान्तपर्यन्त युग-युग में पालन करते हैं फिर कल्प का अन्त होने पर रुद्र रूप धारण कर वे जनार्दन विष्णु ही समस्त भूतों का भक्षण कर लेते हैं।

ईश्वरीय शक्ति की यह रूपत्रयी ही सृष्टि का आधार है। हिन्दू धर्म के पौराणिक आधार के रूप में यह त्रिदेव ही सृष्टि के मूल कारण हैं। पांचरात्रों के दर्शन में व्यूह अनिरुद्ध से शक्ति, शक्ति से नियति, नियति से काल, काल से सत्वगुण, सत्व से रजोगुण और उससे तमोगुण की निष्पत्ति बतायी गयी है। यह गुणत्रयी क्रमशः विष्णु, ब्रह्मा तथा रुद्र के अधीन है। सृष्टि के प्रयोजन से समन्वित होकर गुणत्रयी ही मूल प्रकृति का निर्माण करती है। शक्ति-दर्शन में जगती और उस पर निर्मित प्रासाद प्रकृति एवं पुरुष का समन्वयात्मक रूप है। सांख्य दर्शन में इन्हीं तत्त्वों से सृजन की प्रक्रिया बतायी गयी है। इस प्रकार प्रासाद सृष्टि के कारक तत्वों का प्रतीक है।

भारतीय सृष्टि विद्या का आदि स्रोत वैदिक वाङ्मय है, जिससे स्मृतियों, पुराणों एवं वैष्णव-शैव-शाक्त आगमों का विकास हुआ है। सृष्टि-प्रक्रिया अप्रमेय, शाश्वत एवं अव्यक्त पुरुष से आरम्भ होकर अन्ततः सगुण एवं मूर्त रूप धारण करती है। विष्णुनारायण का मूर्त अथवा स्थूल रूप ही विश्व है। विश्व में जितने भी पदार्थ हैं, वे सब उन्हीं के रूप हैं। हिरण्यगर्भ, ब्रह्मा, वासुदेव, प्रजापति, मरुद्गण, वसु, रुद्र, आदित्य, नक्षत्र, यक्ष, दैत्य आदि देवयोनियाँ, मनुष्य, पशु, पर्वत, समुद्र, नदियाँ, वृक्ष, सम्पूर्ण भूत, एकपाद, द्विपाद, बहुपाद अथवा सरीसृपादि समस्त प्राणी विश्व के मूर्त रूप हैं।

इसकी रचना ब्रह्मभाव, कर्मभाव और उभयात्मकभाव की त्रयी से हुई है। परब्रह्म विष्णु अपनी शक्ति से संयुक्त होकर स्वयं को ही भावत्रयी में प्रकट करते हैं। इस पृष्ठभूमि में प्रासाद एक सर्वथा विशिष्ट अर्थ ग्रहण कर लेता है। 'अग्निपुराण' में प्रासाद की पुरुष के रूप में पूजा का उल्लेख है-'प्रासादं पुरुषं मत्वा पूजयेन्मन्त्रक्तिमः।' यह पुरुष ही सृष्टि का आदि कारण है, जिसकी मूर्त अभिव्यक्ति चराचर जगत् है। 'मार्कण्डेयपुराण' में परम तत्त्व के व्यक्त रूप का स्पष्टीकरण करते हुए कहा गया है कि अनन्त-अप्रमेय भगवान शंख, चक्र, पद्म तथा गदाधारी (चतुर्भुज) रूप में मानवीय धरातल पर व्यक्त होते हैं और विश्व की स्थिति तथा पालन उन्हीं की शक्ति के अधीन है, जो अधर्म के विनाश और धर्म के आचरण हेतु उनकी लीलाएँ हैं। इस सन्दर्भ में प्रासाद के विस्तीर्ण बाह्याच्छादन पर सहस्रविध उट्टंकित आकृतियों का मर्म सहसा उद्भासित हो उठता है। देव, मानव, पशु, वानस्पतिक रूप वस्तुतः चराचर जगत की लघ्वाकृति है, जो परम पुरुष का मूर्त अथवा उनकी लीला है।

देवायतन की व्यंजना ग्रहण करने के लिए आगम परम्परा के इस वैशिष्ट्य को स्पष्टतः समझ लेना समीचीन होगा कि यह भक्तिधर्माद्भूत होने के साथ वैदिक धर्म एवं दर्शन का उद्वहन कर रही थी। इस परम्परा में वैदिक प्रतीकों एवं कर्मकाण्डों की महत्ता यथावत् स्वीकार की गयी है। भक्तिधर्म यदि प्रासाद-निर्माण पर बल देता है, तो यज्ञ के विरुद्ध नहीं, अपितु उसे यज्ञ के समकक्ष स्वीकार करते हुए।

परिणामतः प्रासाद-निर्माण की प्रक्रिया वैदिक यज्ञपरक हो गयी और उसके प्रतीक यहाँ स्थानान्तरित हो गये। फलस्वरूप वास्तुपुरुष की स्थापना के समय वास्तुयोग से लेकर मन्दिर के विभिन्न अंगों की व्याख्या यज्ञ-संबंधी कर्मकाण्ड के सन्दर्भ में की गयी और उनका नामकरण वैदिक शब्दावली के आधार पर किया गया। ऊर्ध्वच्छन्द में मन्दिर के तीन प्रमुख भाग हैं- 1. अधिष्ठान, 2. गर्भगृह तथा 3. शिखर। गर्भगृह का निर्माण अधिष्ठान अथवा पीठ पर किया जाता है। कहीं-कहीं इसके नीचे उपपीठ भी होती है। पीठ के ऊपर गर्भगृह की भित्ति उठती है, जिसका निम्नभाग वेदी अथवा वेदिका कहलाता है। गर्भगृह के पूर्व पीठ तथा उपपीठ का निर्माण ठीक उसी प्रकार किया जाता है, जिस प्रकार वैदिक चिति पूर्व वेदी या वेदिका की रचना की जाती है।

भारतीय वास्तुशास्त्रियों ने देवायतन-स्थापत्य को नागर, द्राविड़ और वेसर शैलियों में विभक्त किया है। ईशानशिवगुरुदेवपद्धति के प्रणेता ईशानशिवगुरुदेवमिश्र और शिल्परत्नकार श्रीकुमार का मत है कि जो नागर शैली के

प्रासाद हैं, वे प्रायः हिमालय से लेकर विन्ध्याचल के मध्य में बनते हैं। द्राविड़ शैली के प्रासाद द्रविड़ देश में ही बनते हैं, अन्यत्र नहीं। आगस्त्य (बादामी या वातापी से दक्षिणावर्ती) और विन्ध्याचल के मध्यवर्ती देशों में वेसर शैली के प्रासाद बनते हैं-

नागरस्य स्मृतो देशो हिमवद्विन्ध्यमध्यगः।
द्राविडस्योचितो देशो द्राविडः स्यान्न चान्यथा।
आगस्त्यविन्ध्यमध्यस्थो देशो वेसरसम्मतः।
सर्वाणि सर्वदेशेषु भवन्तीत्यपि केचन।।

हिमालय से विन्ध्याचल के मध्य का भूभाग सात्त्विक, विन्ध्याचल से कृष्णा नदी तक का भूभाग राजस एवं कृष्णा नदी से कन्याकुमारी तक का भूभाग तामस कहा गया है। क्रमशः नागर शैल्यानुवर्ती देश सात्त्विक, वेसर शैल्यानुवर्ती देश राजस एवं द्रविड़ शैल्यानुवर्ती देश तामस संज्ञाभिहित हैं। इन प्रासादों के अधिष्ठाता क्रमशः विष्णु, विधाता और शिव हैं। देवप्रासादों का एक विभाजन वर्णानुसार भी है-

नागरं भूसुरो जात्या वेसरं वैश्य उच्यते।
द्राविडं तु नृपो ज्ञेयं आकृतिकथ्यतेऽधुना।।

आशय यह है कि नागर शैली के मन्दिर ब्राह्मण, वेसर शैली के मन्दिर वैश्य और द्राविड़ शैली के मन्दिर क्षत्रिय अथवा राजन्य वर्ण के हैं। भारतीय वाङ्मय में देवालय-निर्माण के संदर्भ में जहाँ शुभाशुभ का विचार किया गया है, वहीं देवालय कहाँ और कैसे निर्मित कराना चाहिए, इसकी भी विस्तारपूर्वक विवेचना की गयी है। भारत में देवायतन की समृद्ध दार्शनिक पृष्ठभूमि को चरितार्थ करने वाले अनेक मन्दिर विद्यमान हैं। आधुनिककाल में भी अनेक मन्दिर शास्त्रोक्त परम्परानुसार बने हैं, जिनकी पंक्तिपावन परम्परा में अयोध्या का नवनिर्मित श्रीरामजन्मभूमि-मन्दिर सर्वोपरि है, जिसके साथ जन-जन की आस्था सम्पृक्त है। अयोध्या का यह मन्दिर त्रेतायुग से अब तक भारत की शाश्वत सांस्कृतिक एकता का प्रतीक बना हुआ है। सम्राट कुश के द्वारा निर्मित श्रीरामजन्मभूमि-मन्दिर के प्रांगण में हिन्दुओं ने सदैव अपनी अप्रतिम श्रद्धा के पुष्प बिखेरे हैं। विधर्मी आक्रान्ताओं के आक्रमणों के कारण इस मन्दिर के विध्वंस होने पर भारत के धर्मधुरीण सम्राटों ने समय-समय पर इसका जीर्णोद्धार करवाया है। मन्दिर की रक्षा के लिए आपातकाल में लक्षाधिक हिन्दुओं ने अपना प्राणोत्सर्ग किया है।

अयोध्या के श्रीरामजन्मभूमि-मन्दिर के निर्माण के लिए विश्व हिन्दू परिषद एवं 'श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास' के साथ न केवल भारत के, अपितु सम्पूर्ण विश्व के आस्थावान् हिन्दू खड़े हैं। विश्व हिन्दू परिषद ने गाँव-गाँव में शिलापूजन का कार्यक्रम आयोजित करके आस्थावान् हिन्दुओं को जोड़ने का व्यापक कार्य सम्पादित किया है। अक्टूबर-नवम्बर 1989 ई. में शिलापूजन के माध्यम से आठ करोड़ उनतीस लाख इकतीस हजार रुपये एकत्र हुए थे, जिनमें से लगभग एक करोड़ साठ लाख रुपये शिलापूजन तथा शिलाओं को अयोध्या पहुँचाने एवं कूपन प्रकाशित करने आदि में व्यय हुए थे और लगभग छह करोड़ साठ लाख रुपये राष्ट्रीयकृत बैंकों तथा सरकारी कम्पनियों में जमा थे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी के द्वारा 5 अगस्त, 2020 ई. को भूमिपूजन एवं शिलान्यास करने के समय तक श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के खाते में मन्दिर निर्माण हेतु 42 करोड़ रुपये जमा हो गये थे। 23 जून, 2022 ई. को आजतक के वेबसाइट पर प्रकाशित समाचार के अनुसार अब तक श्रीरामजन्मभूमि-मन्दिर निर्माण के लिए 5000 करोड़ से अधिक धनराशि का समर्पण हो चुका है। श्रीराम-मन्दिर निर्माण पर हुए व्यय के बाद भी 3500 करोड़ से अधिक धनराशि श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के विभिन्न बैंक खातों में जमा है। श्रीरामजन्मभूमि-मन्दिर के लिए रामभक्तों ने मुक्त हृदय से निधि-समर्पण किया था। मन्दिर-निर्माण के लिए 15 जनवरी से 27 फरवरी, 2021 ई. तक निधि समर्पण अभियान चलाया गया। यह अभियान इतना बड़ा था कि इसमें 9,00,000 कार्यकर्ताओं ने 175 हजार टोलियाँ बनाकर घर-घर जाकर 10 करोड़ परिवारों से सम्पर्क किया था।

श्रीरामजन्मभूमि के नवनिर्मित मन्दिर के लिए पत्थर तराशने का काम अयोध्या में रामघाट पर बनी कार्यशाला के अतिरिक्त राजस्थान में पिण्डवारा और मकराना में भी लम्बे समय तक चलता रहा। अयोध्या की रामघाट-कार्यशाला में सितम्बर, 1990 ई. से निरन्तर कार्य चल रहा है, जबकि

राजस्थान की कार्यशालाएँ फरवरी, 1996 ई. से प्रारम्भ हुईं। मन्दिर-निर्माण के पूर्व 7 मीटर लम्बे, 3.6 मीटर चौड़े और 3.2 मीटर ऊँचे मन्दिर के मॉडल के निर्माण में सात लाख रुपये व्यय हुए थे। इसी से मन्दिर-निर्माण में हुए व्यय का अनुमान लगाया जा सकता है।

विश्व हिन्दू परिषद के द्वारा अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि-मन्दिर के निर्माण के लिए बनायी गयी कारसेवा-योजना में निम्नांकित विशेषज्ञों को सम्मिलित किया गया है-

1. श्री चन्द्रकान्त बी. सोमपुरा : मुख्य वास्तुकार (पालिताना)
2. श्री विनोद मेहता : मृदा तथा भूकम्प-विशेषज्ञ (अहमदाबाद)
3. श्री आनन्दस्वरूप आर्यः विशेषज्ञ (रुड़की)
4. श्री कृष्णलाल दत्ता : विशेषज्ञ (देहरादून)
5. ब्रिगेडियर बृजमोहन सेठ : अवकाशप्राप्त सिविल इंजीनियर, असम रायफल्स (देहरादून)

नवनिर्मित मन्दिर की वास्तुयोजना गुजरात के प्रख्यात वास्तुकार श्री चन्द्रकान्त सोमपुरा ने निर्मित की है। गुजरात में मन्दिरों के नगर पालिताना का सोमपुरा परिवार, भारतीय मन्दिर-स्थापत्य के लिए विख्यात रहा है। चन्द्रकान्त सोमपुरा जब मात्र सत्रह वर्ष के थे, तब उनके पिता बद्रीनाथ-मन्दिर का जीर्णोद्धार करते हुए अलकनन्दा में गिरकर मर गये थे। उसके बाद चन्द्रकान्त सोमपुरा ने अपने पितामह प्रभाशंकर सोमपुरा से मन्दिर-स्थापत्य की शिक्षा ग्रहण की। प्रभाशंकर सोमपुरा, स्वातन्त्र्योत्तर काल में हुए सोमनाथ-मन्दिर के पुनर्निर्माण के प्रमुख वास्तुशिल्पी थे। 'समराङ्गणसूत्रधार', 'अपराजितपृच्छा', 'मयमतम्', 'देवालयचन्द्रिका' प्रभृति ग्रन्थों के सहस्राधिक श्लोकों की परिकल्पनाओं को पत्थरों के वक्षस्थल पर उत्कीर्ण करने का महती कार्य सोमपुरा परिवार पीढ़ियों से करता आ रहा है।

अयोध्या के नवनिर्मित श्रीरामजन्मभूमि-मन्दिर की परिकल्पना नागर शैली की है। इसकी योजना को मूर्त स्वरूप प्रदान करते समय वास्तुकार चन्द्रकान्त सोमपुरा ने शास्त्रीय परम्परा का पदे पदे ध्यान रखा है। श्रीनारायण नम्बूदरीपाद ने 'देवालयचन्द्रिका' में लिखा है कि किसी पवित्र तीर्थ स्थल के समीपवर्ती क्षेत्र में, नदी के तट पर, समुद्र के तीर पर, पुण्यप्रवाही नदियों के संगम पर, पर्वतों व पहाड़ों के शिखर पर और उनके आजू-बाजू में, वन-उपवन, बस्ती के समीपस्थ आरण्यकों-उद्यानों में और सिद्धों के आश्रम या गुरुकुल, ग्राम, पुर, पत्तन अथवा देश में कहीं भी मनोरम स्थल का चयन करके गुरुवर को चाहिए कि वहाँ देवताओं के लिए प्रासाद-निर्माण एवं प्रतिष्ठा का कार्य करें। ऐसी भूमि देवालयों के निर्माण की दृष्टि से श्रेष्ठ है, जहाँ कर्पूर, अगरु, नारियल, तिलक, दर्भ, कदम्ब, अर्जुन, मालेय, क्रमुक या पुंगीफल, इक्षु, केतकी, कुश, कुन्द, कमल, उत्पलादि की उपज होती हो और ऐसा स्थल जहाँ जल का प्रवाह पूर्व की ओर होता हो अर्थात् भूमि का प्लव पूर्व की ओर हो, जो भूमि बहुत जलवाली हो अथवा जहाँ उचित सुविधाएँ हो, देवाधिपति का यज्ञ होता हो और कमलों से परिपूर्ण पृथ्वी हो, वह देवालय के लिए सर्वथा उचित है। वह भूमि जो समुद्र के तट पर विद्यमान हो, नदी के प्रवाह या किसी प्रसिद्ध तीर्थस्थल के दक्षिणी भाग में हो, जो चावलों के खेतों के पश्चिम में हो, जिस पर यज्ञ के लिए उपयोगी पलाश आदि के वृक्ष उगे हुए दृग्गत हो रहे हों, जो पुष्पीय पौधों व फलों से लकदक रहने वाली हो, पेड़ों से भरे-पूरे उद्यान अथवा जलाशयवाली हो, उस भूमि को भद्रा कहा जाता है। यह भूमि यज्ञ करने वालों के लिए प्रीतिदायक होती है। इसी प्रकार पाकड़, बरगद, निम्ब, अर्जुन, बकुल, कुलस्थ, आसना, अशोक, निष्पाव, अंकोल, मालती, चम्पक, तिल, खदिर, कोदौ को उगाने के लक्षणों वाली जो भूमि हो अथवा जो भूमि पहाड़ों के शिखरों पर हो या उसके परिपार्श्व में स्थित हो अथवा स्वयं पहाड़ियों से परिवेष्टित हो, वह भूमि पूर्णा संज्ञक है, वह पुष्टिदायक होती है। उसको देवगृह के समान जानना चाहिए, चाहे वहाँ भूगर्भ जल किंचित् कम ही क्यों न हो। यदि 'देवालयचन्द्रिका' के आलोक में अयोध्या के नवनिर्मित श्रीरामजन्मभूमि- मन्दिर-स्थल की विवेचना करें, तो वह स्थान भगवान श्रीरामचन्द्र की जन्मभूमि एवं लीलाभूमि होने के कारण परम पवित्र है। त्रिभुवन में ऐसी दूसरी पुण्यभूमि कहाँ मिलेगी। यह एक ऐसी पुण्यभूमि है, जिसे वसिष्ठसुता सरयू ने अपने पवित्र जल से अभिषिक्त किया है। जिसने अपने आँचल में हिन्दू-जैन-बौद्ध एवं सिक्ख सभी को पल्लवित किया है। उसी परम रमणीक स्थल पर पुण्यसलिला सरयू के किनारे

जब सम्राट विक्रमादित्य ने श्रीरामजन्मभूमि-मन्दिर का निर्माण करवाया था, तब शाल, बाँस, मधूक, अश्वत्थ, उदुम्बर, वट, मौलश्री, आम्र आदि के परम रम्य उपवन थे। उसी उपवन की स्मृति को अपने हृदय के कमनीय कक्ष में संजोए हुए श्रीराम की यह अयोध्या आज भी अपने आराध्य के मन्दिर निर्माण की राह निहार रही है। अयोध्या के पंचक्रशी-परिक्रमा-परिपथ में, प्राचीन जलाशय, दर्भ, कुश, पलाश एवं अर्जुन, बरगद, निम्ब से अलंकृत भूमि पर, चतुर्दिक व्रीहि (धान) के खेत से आवृत, तिल-खदिर-कोदौ प्रभृति अन्न को उगाने के लक्षणों से परिपूर्ण मनोरम स्थल पर कन्नौज के प्रतापी नरेश गोविन्दचन्द्र के साकेतमण्डलपति आयुष्यचन्द्र ने जिस स्थान पर श्रीविष्णुहरि-मन्दिर का निर्माण करवाया था, उसी स्थान पर श्री रामजन्मभूमि-मन्दिर का निर्माण प्रस्तावित है। 'देवालयचन्द्रिका' में वर्णित देवायतन-निर्माण हेतु जितने भी शुभद पक्ष हैं, सब-के-सब अयोध्या के प्रस्तावित श्रीरामजन्मभूमि-मन्दिर के निर्माण स्थल एवं वास्तुशिल्प में एकत्र हो गये हैं। श्रीरामजन्मभूमि- मन्दिर की लम्बाई (पूर्व-पश्चिम) 380 फीट, चौड़ाई 250 फीट एवं ऊँचाई 161 फीट है। इसके निर्माण में राजस्थान के भरतपुर जनपद के बंसीपहाड़पुर क्षेत्र में पाये जाने वाले हल्के गुलाबी रंग के पत्थर के साथ-साथ मिर्जापुर जनपद के अहरौरा और चुनार क्षेत्र के शिल्पोपयोगी प्रस्तर का प्रयोग किया गया है।

अधिष्ठान, कुमुद, गल, कम्प और पट्टिका से अलंकृत भूतल को गर्भगृह की संज्ञा से अभिहित किया गया है। वास्तु के प्रसंग में गर्भगृह शब्द का प्रयोग सामान्य आवास के अभ्यन्तर के लिए किया जाता है, किन्तु देवप्रासाद के सन्दर्भ में देवमूर्ति का स्थान गर्भगृह नाम से अभिहित है। देवायतन-स्थापत्यविदों ने गर्भगृह सहित मन्दिर की परिकल्पना आभूषणालंकृता स्त्री-देह से की है। वस्तुतः नागर शैली के मन्दिर ठीक वैसे ही दृग्गत होते हैं, जैसी दोनों पाँवों को आगे फैलाये एवं दोनों घुटनों को किंचित् ऊपर उठाये बैठी हुई कोई स्त्री पार्श्व से दिखायी पड़ती है। आमलक एवं कलश से अलंकृत मन्दिर के शिखर चूड़ामणि से अलंकृत स्त्री के सिर की तरह, विमान स्त्री के स्कन्ध की तरह, गर्भगृह स्त्री के गर्भाशय की तरह, जगमोहन अथवा महामण्डप स्त्री के ऊपर उठे हुए घुटने की तरह, मण्डप एवं सोपान स्त्री के टखने एवं चरण की तरह होते हैं। मन्दिर की ऐसी सजीव परिकल्पना भारतीय दर्शन में ही सम्भव है। तत्त्वतः मन्दिर की यह सप्राण परिकल्पना भक्त एवं भगवान के मध्य पौत्र एवं पितामही के मधुर सम्बन्ध की तरह प्रीतिकर है। गर्भगृह के अनलंकृत, प्रकाशान्धकारयुक्त तथा ऐकान्तिक स्वरूप की व्याख्या वैदिक पृष्ठभूमि में ही की जा सकती है। यज्ञ-विधान के अन्तर्गत यजमान की दीक्षा जिस शाला में की जाती थी, वह चतुर्दिक घिरा रहता था और उसका मुख पूर्व की ओर रखा जाता था। शाला का मुख ही पूर्व में नहीं होता था, अपितु यजमान भी पूर्वाभिमुख ही बैठता था, क्योंकि देवताओं का निवास उसी दिशा में है। वैदिक शब्दावली में शाला को गर्भ और यजमान को भ्रूण कहा गया है। शाला को चतुर्दिक बन्द रखने का कारण देवलोक से मनुष्यलोक की भिन्नता व्यक्त करना ही है। दीक्षा ग्रहण करने वाला व्यक्ति देवलोक में जाता है और द्वार से वापस लौट आता है। इसी प्रकार मन्दिरों में अंगोपांग पर देवमूर्तियों की स्थापना करने की परम्परा का प्राचीनतम स्रोत ब्राह्मणग्रन्थों में उपलब्ध है। शतपथब्राह्मण में उल्लिखित है कि वेदी स्थिति बहिर्स्तरण के ऊपर पश्चिम भाग में प्रतिष्ठित किये गये दर्भतृणों पर देवताओं के लिए अच्छी बैठक है। यहीं अन्य श्लोक में वेदी के इस स्थान पर वसु, रुद्र, आदित्य आदि को प्रतिष्ठित करने का विधान दिया गया है।

वैदिक समाज के यज्ञ प्रमुख धर्म में देवप्रतिमोपासना का विधान नहीं था, किन्तु इस समाज से पृथक् वैदिकेतर समुदाय की धार्मिक मान्यताओं में मूर्ति पूजा का महत्वपूर्ण स्थान था। कालान्तर में भागवत शैव शाक्त दर्शन के विकास के साथ ही देवप्रासाद के विभिन्न भागों की व्याख्या भी नवीन रूप से की जाने लगी, जिसका उल्लेख पुराण वाङ्मय के साथ-साथ शैवागमों एवं पांचरात्र संहिताओं में उपलब्ध है। इस दृष्टि से देवप्रासाद भारतीय समन्वयवादी प्रवृत्ति के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। इस परम्परा को जीवन्त बनाने के लिए ही श्रीरामजन्मभूमि-मन्दिर के भूतल के गर्भगृह में 22 जनवरी, 2024 ई. को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश-विदेश से पधारे विशिष्ट अतिथियों एवं भारत के कोने-कोने से पधारे संत-महात्माओं की गरिमामयी उपस्थिति में प्रभु श्रीराम के बाल-रूप (श्रीरामलला) के श्रीविग्रह की

प्राण-प्रतिष्ठा की है। भगवान श्रीरामलला की नयनरम्य प्रतिमा का निर्माण मैसूर (कर्णाटक) के देवमूर्तिशिल्पी श्री अरुण योगीराज ने किया है, जबकि प्रथम तल के गर्भगृह में विराजमान होने वाले श्रीराम दरबार का भव्य स्वरूप का निर्माण कार्य चल रहा है। गर्भगृह के सम्मुख जगमोहन निर्मित है। यह मन्दिर तीन तल का है। प्रत्येक तल की ऊँचाई 20 फीट है। सम्पूर्ण मन्दिर 392 स्तम्भों के ऊपर खड़ा है। प्रत्येक स्तम्भ में देवी-देवताओं, देवांगनाओं एवं अप्सराओं की सुन्दर प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं। 'देवालयचन्द्रिका' में भी जगमोहन के स्तम्भों का स्पष्ट उल्लेख किया गया है-

अङ्गाद्यैरुदयोत्तरान्तरगतोन्मानं विभज्य क्रमात्
सङ्यानैः शिवपञ्चिमैर्निगदिते स्तम्भोच्छ्रये स्वेच्छया।
अंशं योजयतु क्वचित् त्यजतु वा मासूरके स्वोच्छयं
भङ्क्त्वाङ्गादिनवान्तिमैर्विरहयेद् विंशं यथोक्तोच्छ्रयात्।।
भक्ते प्रत्युत्तरान्तर्गतचरणसमुन्मानकेऽष्टाङ्कादिग्भि
स्तेष्वेकांशात्तमूलप्रततितदुरगांशादिहीनाग्रतानान्।
दारुस्तम्भांदर्हे विहिततितदलाग्न्यब्धि भागोनतानान्
कुडयस्तम्भांश्च कुडये रचयतु चरणाग्रप्रतानोऽत्र दण्डः।।

अर्थात् ऊँचाई के उत्तरगतोन्मान के प्रसंग में कहा जा रहा है कि भित्ति के मूल प्रदेश या पादुका के मूल प्रदेश के साथ ऊँचाई का प्रमाण होगा। इसमें आरम्भिक मान छह और अन्तिम मान ग्यारह अंश होगा। स्तम्भ की ऊँचाई को एक अंश किया जाय, यह भी एक पक्ष है और यह भी कहा गया है कि इसका त्याग किया जाना चाहिए। इसी प्रकार मासूरक या अधिष्ठान होगा। वह अपनी रचना में छह से लेकर नौ अंश तक होगा। इसमें संख्या का विभाजन ऊँचाई के अंश से होगा। इसके लिए सामान्य विचार यह होगा कि अधिष्ठान की सामान्य ऊँचाई स्तम्भ की ऊँचाई की आधी अथवा आधी में से छह, सात अथवा आठ अंश कम करके रखी जा सकेगी। प्रति और उत्तर के अन्तर्गत स्तम्भ के लिए कहा जा रहा है कि उस स्तम्भ की ऊँचाई को आठ, नौ व दस भागों में विभाजित करना चाहिए। उसमें से एक अंश ग्रहण करें और मूल तथा प्रति के विस्तार को आठ अंश न्यून आगे से करें। इस आठ के क्रम से ही नौ या दस अंश भी उसे रखा जा सकता है। इस मत से काष्ठ का स्तम्भ बनाया जाना चाहिए। इसी प्रकार भित्ति के स्तम्भ को भी बनायें। यह दो, ढाई, तीन या चार भाग न्यून होगा। इस स्तम्भ में नीचे से आगे तक का भाग दण्ड कहा जायेगा।

वस्तुतः देशकाल एवं परिस्थिति के अनुसार स्तम्भों का निर्माण काष्ठ एवं प्रस्तर से होता रहा है। हिमालय के पर्वतीय प्रदेशों में काष्ठ-निर्मित मन्दिर की परम्परा रही है। हिमाचल प्रदेश में काष्ठ-निर्मित अनेक प्राचीन मन्दिर आज भी है। इसी तरह पूर्वात्तर भारत में भी काष्ठ-निर्मित मन्दिरों का बाहुल्य है। नेपाल की राजधानी काठमाण्डू अपने मूल रूप में 'काष्ठमण्डपम्' की ही प्रतीति कराती है। 'मयमतम्' में स्तम्भों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। 'मानसार' में भी 218 श्लोकों में स्तम्भप्रकरण वर्णित है। वास्तुविदों ने स्तम्भ को 1. स्थाणु, 2. स्थूण (थूणी=थूँनहीं), 3. पाद, 4. जंघा, 5. चरण, 6. अंघ्रिक, 7. स्तम्भ, 8. तलिप और 9. कम्प संज्ञाभिहित किया है-

स्थाणुः स्थूणश्च पादश्च जङ्घा च चरणोऽङ्घ्रिकः।
स्तम्भश्च तलिपः कम्पः पर्यायवचनानि हि।।

'मयमतम्' में स्तम्भ के मान, भूम्यानुसार स्तम्भ के व्यास आदि की विवेचना के साथ ही स्तम्भ के नाना भेद के अन्तर्गत कुड्यस्तम्भ, प्रतिस्तम्भ, निखातस्तम्भ, झषालस्तम्भ, वृत्तकोणादिस्तम्भ, पूर्वाश्रस्तम्भ, रुद्रकान्तस्तम्भ, अष्टाश्रस्तम्भ, रुद्रच्छन्दस्तम्भ, भद्रकस्तम्भ, शुण्डपादस्तम्भ, पिण्डीपादस्तम्भ, चित्रखण्डस्तम्भ, श्रीखण्डस्तम्भ, श्रीवज्रस्तम्भ, क्षेपणस्तम्भ प्रभृति का सुरुचिपूर्ण वर्णन किया गया है। श्रीरामजन्मभूमि के प्रस्तावित मन्दिर के जगमोहन आदि के लिए निर्मित हुए स्तम्भ षटकोणीय हैं। 'मयमतम्' में वर्णित अधिकांश स्तम्भों एवं अलंकरणों का प्रयोग श्रीरामजन्मभूमि-मन्दिर में किया गया है। इन स्तम्भों को अलंकरणादि की दृष्टि से 'इन्द्रकान्तस्तम्भ' अथवा 'स्कन्दकान्तस्तम्भ' की श्रेणी में परिगणित किया जा सकता हैं मयमतम् में स्तम्भों के पादप्रदेश में पद्मासन का निर्देश किया गया है-

दण्डाध्यर्धे द्विदण्डेनोत्तुङ्गद्विगुणविस्तृतम्।
पद्मासनं तु कर्तृत्वं मूले पद्मासनं भवेत्।।

अर्थात् स्तम्भ के आधार पर स्थापना योग्य पद्मासन की चौड़ाई को डेढ़ अथवा दो दण्ड अथवा जो उसकी

ऊँचाई हो उसकी अपेक्षा दो गुना विस्तृत किया जा सकता है। यह 'पद्मासन' होगा। वस्तुतः एवं तत्त्वतः मन्दिर के जगमोहन में द्वादश सूर्य सदृश रुद्रकान्तस्तम्भ का विधान किया गया है। महाराज भोजदेव ने भी द्वादश स्तम्भ का ही विधान किया है-

स्तम्भैर्द्वादशभिरथ क्षेत्रे युक्त्या समुच्छ्रितैर्भव्यैः।
रूपवतीकोणस्थितिरधिका भूः प्रथमिका कार्या।।

अर्थात् इस प्रकार से यहाँ के क्षेत्र में युक्तिपूर्वक द्वादश स्तम्भ समुचित ऊँचाई सहित और भव्य होंगे। ऐसी अधिक कोण स्थिति सहित रूपवती पहली भूमि तैयार करनी चाहिए।

श्रीरामजन्मभूमि-मन्दिर में कुल पाँच मण्डप-नृत्यमण्डप, रंगमण्डप, गूढ़मण्डप (सभामण्डप), प्रार्थनामण्डप और कीर्तनमण्डप का सुन्दर विधान किया गया है। मन्दिर में कुल 44 दरवाजे हैं। चौखटों का निर्माण श्वेत संगमरमर से किया गया है। चौदह कपाट स्वर्णमण्डित हैं। वास्तुशास्त्र के आलोक में श्रीरामजन्मभूमि के प्रस्तावित मन्दिर को समग्रता से देखने पर यह अपनी स्थापत्य-संरचना की दृष्टि से मेरुप्रासाद की श्रेणी में परिगणित होता है। धाराधराधीश्वर महाराज भोजदेव ने 'समराङ्गणसूत्रधार' में मन्दिर स्थापत्य के सन्दर्भ में 'मेरु' को प्रासादराज कहा है-'मेरुः प्रासादराजश्च' (समराङ्गणसूत्रधार 55/3)। मेरु के माहात्म्य का प्रतिपादन करते हुए भोजदेव लिखते हैं-

सर्वस्वर्णमयं मेरुं यद् दत्वा पुण्यमाप्नुयात्।
तमिष्टकाशैलमयं कृत्वा तदधिकं भजेत्।।

श्रीरामजन्मभूमि-मन्दिर में प्रवेश पूर्व दिशा से 32 सीढ़ियाँ (ऊँचाई 16.5 फीट) चढ़कर सिंहद्वार से होगा। दिव्यांगजन तथा वृद्धों के लिए रैम्प एवं लिफ्ट की व्यवस्था की गयी है मन्दिर के चतुर्दिक आयताकार प्राकार (परकोटा) निर्मित हैं, जिसकी लम्बाई 732 मीटर तथा चौड़ाई 4.25 मीटर है। प्राकार के चारों कोने पर क्रमशः भगवान सूर्य, भगवान शंकर, गणपति और देवी भगवती के मन्दिर हैं। परकोटे की दक्षिणी भुजा में रामभक्त हनुमान एवं उत्तरी भुजा में माता अन्नपूर्णा का मन्दिर है। श्रीरामजन्मभूमि-मन्दिर के दक्षिणी भाग में पौराणिक सीताकूप विद्यमान है। परकोटे के बाह्यभाग की दक्षिणी दिशा में महर्षि वाल्मीकि, महर्षि वसिष्ठ, महर्षि विश्वामित्र, महर्षि अगस्त्य, निषादराज, माता शबरी एवं देवी अहिल्या के मन्दिर प्रस्तावित हैं। दक्षिणी-पश्चिमी भाग में नवरत्न कुबेर टीले पर स्थित शिव-मन्दिर का जीर्णोद्धार एवं रामभक्त जटायु राज प्रतिमा की स्थापना की गयी है।

वास्तु अध्येयता इंजी. हेमन्त कुमार लिखते हैं- 'श्रीरामजन्मभूमि के नवनिर्मित मन्दिर की डिजाइन प्राचीन भारतीय शिल्पकला की सुप्रसिद्ध नागर शैली के आधार पर तैयार की गयी है। श्रीरामजन्मभूमि-मन्दिर के प्रति हिन्दुओं की आस्था और ललक वर्णनातीत है। इस भावना को ध्यान में रखते हुए मन्दिर के भौतिक स्वरूप को भी अद्वितीय तथा नयनाभिराम बनाया गया है। मन्दिर की डिज़ाइन को उच्च सौन्दर्यबोध से सम्पन्न करने के लिए अभी तक के ज्ञात श्रेष्ठतम अलंकरणों का चयन किया गया है। सनातन संस्कृति के विकास तथा उत्तरजीविता में देवालयों की भूमिका अग्रणी और बहुआयामी रही है। मन्दिरों का परिवेश पाकर ललित कलाओं ने उच्चता को प्राप्त किया तथा शिल्पकारों को हुनर दिखाने के असीमित अवसर मिले। आध्यात्मिक केन्द्र तथा सभ्यता-संवाहक के रूप में भी मन्दिर महान प्रेरक रहे हैं। निश्चय ही श्रीरामजन्मभूमि-मन्दिर का स्थापत्य इस परम्परा को नयी ऊँचाइयों पर पहुँचाता है। स्वयं मन्दिर के वास्तुकार चन्द्रकान्त बी. सोमपुरा की आधिकारिक वेबसाइट पर इस मन्दिर की विशिष्टताओं को आरेखित करते हुए लिखा गया है कि स्थापत्य के इतिहास-कालानुक्रम में श्रीरामजन्मभूमि-मन्दिर दुर्लभ कोटि का होगा। अपने उत्कृष्ट, सौम्य और मनभावन शिल्प के आधार पर यह भारत ही नहीं, अपितु विश्व भर में अपूर्व होगा और दुनिया भर के लाखों श्रद्धालुओं, स्थापत्य के जिज्ञासुओं-अध्येताओं तथा पर्यटकों के प्रबल आकर्षण का केन्द्र सिद्ध होगा। तत्त्वतः अयोध्या में नवनिर्मित श्रीरामजन्मभूमि-मन्दिर एक ऐसी धार्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना का मूर्तविग्रह है, जिसके गवाक्ष से सम्पूर्ण भारतवर्ष के भव्य अतीत का दिव्य दर्शन किया जा सकेगा।

लेखक-डॉ० जितेन्द्र कुमार सिंह 'संजय'

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम हैं भारत की आत्मा

प्रणय कुमार
शिक्षाविद एवं वरिष्ठ स्तंभकार

राम केवल एक नाम भर नहीं, बल्कि वे जन-जन के कंठहार हैं, मन-प्राण हैं, जीवन-आधार हैं। राम भारत की चेतना हैं, प्राणशक्ति हैं। उनसे भारत अर्थ पाता है। वे भारत के पर्याय और प्रतिरूप हैं और भारत उनका। उनके नाम-स्मरण एवं महिमा-गायन में कोटि-कोटि जनों को जीवन की सार्थकता का बोध होता है। भारत के कोटि-कोटि जन उनके दृष्टिकोण से जीवन के विभिन्न संदर्भों-पहलुओं-परिप्रेक्ष्यों-स्थितियों-परिस्थितियों-घटनाओं-प्रतिघटनाओं का आकलन-विश्लेषण करते हैं। भारत से राम और राम से भारत को कभी विलग नहीं किया जा सकता क्योंकि राम भारत की आत्मा हैं। भला आत्मा और शरीर को कभी विलग किया जा सकता है। एक के अस्तित्व में ही दूसरे का अस्तित्व है। वे निर्विकल्प हैं, उनका कोई विकल्प नहीं। राम ही धर्म हैं, धर्म ही राम है। कहा भी गया है ''रामो विग्रहवान् धर्मः।'' हम भारतीयों के जीवन का आदर्शलोक राम-नाम के धागों से बुना है। हर व्यक्ति के जीवन में, हर कदम पर जो भी शुभ है, सुंदर है, सार्थक है, अनुकरणीय है, वह 'राम' हैं। इसलिए राम सबके हैं। राम सबमें हैं। उनके सुख में भारत के जन-जन का सुख आश्रय पाता है, उनके दुःख में भारत का कोटि-कोटि जन आँसुओं के सागर में डूबने लगता है। अश्रुओं की उस निर्मल-पवित्र धारा में न कोई ईर्ष्या शेष रहती है, न कोई अहंकार, न कोई लोभ, न कोई मोह, न कोई अपना, न पराया। सारा जग ही अपना जान पड़ता है। कितना अद्भुत है उनका जीवन-चरित, जिसे बार-बार सुनकर भी और अधिक सुनने की चाह बनी रहती है! इतना ही नहीं, उस चरित को पर्दे पर अभिनीत करने वाले, उस चरित को जीने वाले, लिखने वाले, उनकी कथा बाँचने वाले हमारी आत्यंतिक श्रद्धा के उच्चतम केंद्र बिंदु बन जाते हैं। उस महानायक से जुड़ते ही सर्वसाधारण के बीच से उठा-उभरा सामान्य व्यक्ति भी नायक-सा मान-सम्मान पाने लगता है। उनके सुख-दुःख, हार-जीत, मान-अपमान में हमें अपने सुख-दुःख, हार-जीत, मान-अपमान की अनुभूति होती है। उनकी प्रसन्नता में सारा जग हँसता प्रतीत होता है और उनके विषाद में सारा जग रोता। उस महामानव के प्रति यही हमारे चित्त की दशा-अवस्था है। यह अकारण नहीं कि करोड़ों लोग आज भी रामायण सीरियल के पुनर्प्रसारण और नवीन संस्करण को देख-देख भाव-विह्वल हो जाते हैं। करोड़ों लोग आज भी श्रीरामचरितमानस का पारायण कर स्वयं को कृतकृत्य अनुभव करते हैं।

शताब्दियों की प्रतीक्षा के पश्चात पौष शुक्ल द्वादशी को अभिजीत मुहूर्त में श्री रामलला के अपनी जन्मभूमि पर बने दिव्य और भव्य घर में विराजमान होने के पावन एवं महत्वपूर्ण अवसर पर यह प्रश्न उचित ही होगा कि आखिर किस षड्यन्त्र के अंतर्गत कभी तुलसी, कभी रामचरितमानस तो कभी स्वयं राम पर ही भ्रम और संशय निर्मित करने के बहुविध प्रयत्न किए जाते रहे? कौन नहीं जानता परंपरा से ही भारत की संस्कृति के केंद्र बिंदु राम एवं उनका चरित्र और उस चरित्र के सर्जक साहित्यकार रहे हैं। इसलिए विभाजनकारी शक्तियाँ वेश व रूप बदल-बदलकर इन पर हमलावर रही हैं। अधिक दिन नहीं बीते, जब तमाम पुरातात्त्विक अवशेषों और प्रमाणों के बावजूद श्रीराम के

के प्रमाण माँगे जाते थे। आखिर किस षड्यन्त्र के अंतर्गत उनकी स्मृति तक को उनके जन्मस्थान से मिटाने-हटाने के असंख्य प्रयत्न किए जाते रहे? क्यों तमाम दलों एवं बुद्धिजीवियों को न केवल राम-मंदिर से, बल्कि राम-नाम के जयघोष से, चरित-चर्चा-कथा से, यहाँ तक कि सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 9 नवंबर 2019 को उसके पक्ष में सुनाए गए ऐतिहासिक एवं बहुप्रतीक्षित फैसले तक से भी किसी-न-किसी रूप में आपत्ति रही? एक लंबे अरसे तक क्यों उन्हें एक आक्रांता की स्मृति में खड़े गुलामी के प्रतीक से इतना मोह रहा? क्या वे नहीं जानते कि मजहब बदलने से पुरखे नहीं बदलते, न संस्कृति ही बदलती है? क्या यह सत्य नहीं कि जिन दलों-राजनीतिज्ञों ने दशकों तक जातीय, सांप्रदायिक एवं पृथकतावादी राजनीति एवं खंडित अस्मिताओं को पाल-पोस- उभारकर राजनीतिक रोटियाँ सेकीं, केवल उन्हें ही भारत की सामूहिक एवं सांस्कृतिक चेतना व अस्मिता के प्रतीकपुरुष श्रीराम, श्री राम के मंदिर और गोस्वामी तुलसीदास से आपत्ति एवं शिकायत रही? विभाजनकारी शक्तियाँ भली-भाँति यह जानती हैं कि श्रद्धा, आस्था एवं विश्वास के भावकेंद्र श्रीराम और रामचरितमानस के प्रति सर्वसाधारण के गहरे झुकाव, समर्पण व पवित्र भाव के रहते उनके द्वारा प्रयासपूर्वक रोपे गए विभाजन की विष-बेल के फलने-फूलने-पनपने की संभावना नगण्य या न्यूनतम रहेंगी, इसलिए वे कोई-न-कोई बहाना बनाकर इन पर हमलावर रहती हैं। रामलला की प्राणप्रतिष्ठा के पश्चात जनमानस में आई राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक जागृति से कदाचित अब ऐसे अप्रिय प्रसंगों का पटाक्षेप हो!

प्रश्न तो यह भी उचित होगा कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी जिस एक चरित्र को हम अपनी सामूहिक एवं गौरवशाली थाती के रूप में सहेजते-संभालते आए, आखिर किन षड्यन्त्रों के अंतर्गत बड़ी ढिठाई एवं निर्लज्जता से उसे काल्पनिक बताया जाता रहा? उसके अस्तित्व को लेकर शंका के बीज वर्तमान पीढ़ी के हृदय में किसने और क्यों बोए? जो एक चरित्र करोड़ों-करोड़ों लोगों के जीवन का आधार रहा हो, जिसमें करोड़ों-करोड़ों लोगों की साँसें बसी हों, जिससे कोटि-कोटि जन प्रेरणा पाते हों, जिसने हर काल और हर युग के लोगों को संघर्ष व सहनशीलता, धैर्य व संयम, विवेक व अनुशासन की प्रेरणा दी हो, जिसके जीवन-संघर्षों के सामने कोटि-कोटि जनों को अपना संघर्ष बहुत छोटा प्रतीत होता हो, जिसके दुःखों के पहाड़ के समक्ष अपना दुःख राई-रत्ती जान पड़ता हो, जिसके चरित्र की शीतल छाया में कोटि-कोटि जनों के ताप-शाप मिट जाते हों, जिसके व्यक्तित्व के दर्पण में व्यक्ति-व्यक्ति को जन्म से लेकर मृत्यु तक के अपने सभी श्रेष्ठ-सुंदर भाव-आचार-विचार-साहस-सौगंध-संस्कार-संकल्प का सहज प्रतिबिंब दिखाई देता हो, जिसका जीवन कर्तव्य-अकर्तव्य, धर्म-अधर्म का सम्यक् बोध कराता हो, जो मानव-मात्र को मर्यादा और लोक को ऊँचे आदर्शों के सूत्रों में बाँधता-पिरोता हो, जो हर युग और काल के मन-मानस को नए सिरे से मथता हो और विद्वान मनीषियों के हृदय में बारम्बार नवीन एवं मौलिक रूप में आकार ग्रहण करता हो- ऐसे परम तेजस्वी, ओजस्वी, पराक्रमी, मानवीय श्रीराम को काल्पनिक बताना राष्ट्र की चिति, प्रकृति और संस्कृति का उपहास उड़ाना नहीं तो और क्या था? अच्छा तो यह होता कि स्वतंत्र भारत में भी श्रीराम-मंदिर के भव्य निर्माण में विलंब करने या जान-बूझकर अड़ंगा डालने वालों को कठघरे में खड़ा कर उनकी नीति और नीयत पर सवाल पूछे जाते!

पर समय और समाज आज इन प्रश्नों को छोड़कर बहुत आगे बढ़ चला है। लंबे संघर्ष के परिणामस्वरूप अंततः आस्था एवं विश्वास की विजय होनी थी, सो हुई। भव्य, दिव्य एवं विशाल मंदिर में रामलला के विराजने के पश्चात जनमानस में जो हर्ष, उल्लास एवं उत्साह दिखाई दे रहा है, वह असाधारण, अद्वितीय एवं अलौकिक है। ऐसा प्रतीत होता है कि उत्तर-दक्षिण- पूरब-पश्चिम से श्रद्धालुओं का जनसैलाब अयोध्या में उमड़ आया हो। मन, प्राण एवं चित्त को विह्वल करने वाले भावदृश्य प्रतिदिन अयोध्या से सामने आते हैं। भगवद्भक्ति में जीवन की महत्ता एवं सार्थकता ढूँढने व पाने वाले भारतवर्ष को यदि सही-सही अर्थों में समझना हो तो कुछ दिन अयोध्या में अवश्य व्यतीत करना चाहिए। और अयोध्या ही क्यों, आज तो पूरा भारत ही राममय हो उठा है। मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम केवल उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम को ही सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय एकता के सूत्र में नहीं बाँधते, अपितु वे संपूर्ण विश्व के

सनातनियों को हृदय के तल पर जोड़ते हैं। और कोई तत्त्व-ज्ञान जानें या मानें अथवा नहीं, केवल राम-नाम के तत्त्व व महत्त्व को समझ जाएँ तो सनातन का सार समझ आ जाता है। राम-नाम इस देश को जोड़ने की कुंजी है। भक्ति और भाव के आनंदित कर देने वाले ऐसे दृश्यों की आंशिक झलक देश-दुनिया ने श्रीरामजन्मभूमि निधि समर्पण अभियान के दौरान भी देखी थी। तब जितना लक्ष्य रखा गया था, श्रद्धालु समाज ने उससे कई गुना अधिक राशि 'तेरा तुझको अर्पण' के भाव से श्रीराम मंदिर निर्माण ट्रस्ट को समर्पित कर दी थी। प्रभु श्रीराम ने सर्वसाधारण यानी वनवासी-गिरिवासी, केवट-निषाद-कोल-भील- किरात से लेकर वानर-भालु-रीछ जैसे वन्यप्राणियों को भी उनकी असीमित-अपराजेय शक्ति की अनुभूति कराई थी। उन्होंने लोकशक्ति का संचय, संग्रह और संस्कार कर आसुरी व अहंकारी शक्तियों पर विजय पाई थी। श्रीराम के राघव स्वरूप विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा अपने भीतर और लोक में व्याप्त उन्हीं आंतरिक एवं सामूहिक शक्तियों को स्थापित एवं प्रतिष्ठित करने का अनूठा प्रयास व पर्व है। यह पर्व विभाजनकारी विष-बेल को सींचने-पोसने-पालने वाली आसुरी शक्तियों पर अपने सामूहिक धैर्य, विवेक, संयम, साहस और अनुशासन से विजय पाने के संकल्प का पर्व है। उत्सवधर्मिता हम भारतीयों की मूल पहचान है। प्रतिकूल-से-प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हम जीवन की अजेयता के, आस्था व विश्वास के गीत गाते रहे हैं, गाते रहेंगे। हमारी संस्कृति सृजनधर्मा है। हम सृजन के वाहक बन समय की हर चाप और चोट को सरगम में पिरोते रहेंगे। श्रीराम के प्रति अपनी सामूहिक आस्था एवं विश्वास के बल पर हम भविष्य में भी हर प्रकार की विभाजनकारी-उपद्रवी- आतंकी शक्तियों के साथ साहस-सावधानी-सतर्कता से जूझेंगे, लड़ेंगे, अंततः विजय पाएँगे और जीतकर भी विश्व-मानवता के प्रति विनयशील रहेंगे। अयोध्यापति श्रीराम हमें समाज के अंतिम व्यक्ति की चिंता और हर हाल में लोक-मर्यादा के पालन की सीख देते हैं। अतः उल्लास व उत्सव की इस बेला में अंतिम व्यक्ति की चिंता एवं मर्यादा की लक्ष्मणरेखा हमारी दृष्टि से ओझल न होने पाए!

लेखक-श्री प्रणय कुमार

विक्रम संवत् - २०८१ - "पिङ्गल" संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

शकारि विक्रमादिव्य की ऐतिहासिकता

संजय श्रीहर्ष
अखिल भारतीय सह-संगठन मंत्री, इतिहास संकलन योजना

165-60 ई.पू. के लगभग चीन के पश्चिमोत्तर में रहने वाली दुर्द्धर्ष घुमक्कड़ जाति किन्हीं कारणों से वहाँ से पश्चिम की ओर बढ़ी। इस युहची जाति ने सीर दरिया के उत्तर में रहने वाली उसी जैसी शक जाति को खदेड़ा। फलतः 140 ई.पू. के लगभग शक जाति वंक्षु नदी से सिंचित बाख्ती और पार्थव राज्यों से जा टकराई। बाख्ती राज परिवार में घनघोर गृहयुद्ध छिड़ा था। अतः शकों ने उन पर कब्जा किया और पार्थवों की ओर बढ़कर 128 ई. पू. में पार्थव शासक फात द्वितीय को मार डाला। इस समय पार्थवराज आर्तवान तुखारियों से लड़ रहा था। फलतः 123 ई.पू. में शकों ने उसे भी मार दिया। उसका उत्तराधिकारी मज्ददात-द्वितीय (123 ई.पू.-88 ई.पू.) ने शकों को बुरी तरह परास्त किया। फलतः शक पूर्व की ओर बढ़े और सीस्तान (शकस्थान) में फैल गये, फिर कन्दहार और बलूचिस्तान होते हुए सिन्धु देश में उतरे। यह समय लगभग 100 ई.पू. का था। जैन ग्रन्थ कालकाचार्य कथानक में कालकाचार्य प्रतिशोध में इन शकों को उज्जैन लाये थे। उसी कथा में है मज्ददात अपने पूर्वजों आर्तवान की मृत्यु का बदला लेने हेतु इन शकों से कहता है कि स्वयं आत्महत्या कर लो नहीं तो सम्पूर्ण 'सगकुल' को नष्ट कर देंगे। उसी समय कालकाचार्य व्याकुल होकर शकों के पास आये और हिन्दुदेश चलने का आग्रह किया। इस पर 96 साहियों ने अपनी सेना के साथ भारत में प्रवेश किया। उनमें से एक अधिपति बना और उज्जयिनी को राजधानी बना शासन करने लगा।

इस कथानक के अनुसार शकों का भारत प्रवेश और सौराष्ट्र मालवा का समय विक्रम संवत् के आरम्भ के पूर्व का है। प्रायः सभी प्रमाणों से उज्जयिनी की शकों द्वारा विजय लगभग 100 ई.पू. है और यह शक ही मालवा से मथुरा की ओर बढ़ने वाले शुगों के मथुरा के उत्तराधिकारी हैं। गार्गी संहिता का युग पुराण का वर्णन संभवतः इसी समय का वर्णन है।

Problems of Saka & Satavahana History,1930 में डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल ने ई.पू. प्रथम से किसी विक्रमादित्य की ऐतिहासिकता को स्वीकार किया है। सातवाहन राजा हाल के प्राकृत सतसई ग्रन्थ गाथा-सप्तशती में राजा विक्रमादित्य का उल्लेख हैं। उसी के समकालीन कश्मीरी कवि गुणाढय ने पैशाची प्राकृत के ग्रन्थ वृहत्कथा में भी विक्रमादित्य का वर्णन किया है। अतः विक्रमादित्य की ऐतिहासिकता को अस्वीकार्य नहीं किया जा सका। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, स्कन्दगुप्त विक्रमादित्य, यशोधर्मा विक्रमादित्य, चालुक्यों के विक्रमादित्य आदि हाल के बाद के हैं और इन लोगों ने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की है। अतः निश्चय ही विक्रमादित्य नामक कोई प्रतापी विदेशियों को खदेड़ने वाला शासक अवश्य हुआ है, क्योंकि इन शासकों ने स्वयं प्रतापी शासक होते हुये भी उपाधि धारण की है। इनके ही वंश में गौतमी पुत्र शातकर्णी का जन्म हुआ है, जिसने शकों को परास्त किया, परन्तु सातवाहनों ने विक्रम संवत अपने शिलालेखों में स्वयं नहीं लिखवाया। कुषाणराजाओं ने कनिष्क द्वारा चलाये गये संवत् का प्रयोग किया है। अतः गौतमीपुत्र

शातकर्णी को विक्रमादित्य मानना तर्कसंगत नहीं होगा।

फर्ग्युसन ने कहा है कि 544 संवत् में कोरॉर स्थान पर शकों का पराभव हुआ था। अतः उज्जैन के राजा हर्ष (मन्दसौर के राजा यशोधर्मदेव) ने इसे प्रचलित किया था, किन्तु 493 संवत् और 529 संवत् के शिलालेख मन्दसौर से प्राप्त हो चुके है। डॉ. फलीट् ने कनिष्क के राज्यारोहण का यह संवत माना है, किन्तु कनिष्क का राज्यारोहण इस संवत के बाद का है। डाक्टर विंसेन्ट स्मिथ ने विक्रम संवत का प्रवर्तक चन्द्रगुप्त द्वितीय को माना है, किन्तु गुप्तों का अपना स्वयं का संवत् है। साथ ही उनके किसी शिलालेख में विक्रम संवत् का उल्लेख नहीं है। डॉ. मार्शल पार्थियन राजा 'एजेस' को उसका प्रचलित कर्ता मानते हैं, किन्तु राजा एजेस का मालवा से कोई संबंध नहीं है। डॉ. भण्डारकर ने पुष्यमित्र शुंग को कृत संवत का प्रवर्तक बताया है, किन्तु पुष्यमित्र शुंग का समय 180 ई.पू. है।

जयपुर के निकट बरनाला ग्राम में संवत 284 के यूप लेख में 'कृत' नामक एक संवत् का उल्लेख है, कोटा के निकट 'बडवा' में संवत् 295 तथा उदयपुर के निकट नानका ग्राम में संवत् 282 का कृत संवत् पाया गया है। मंदसौर में प्राप्त संवत् 461 ''श्री मालव गणानाते प्रशस्ते'' कृत संज्ञित के लेख पाये गये हैं अर्थात् मालव गण द्वारा स्थापित कृत संवत् का उल्लेख है।

विक्रमादित्य

यूनान मिस्र रोमन सुमेरियन बेबिलोनिया आदि सभ्यताएँ आज कहां है। कोई नाम लेने वाला भी नहीं बचा, किन्तु दो सहस्राब्दियों से असंख्य भारतीय जिसके प्रबल प्रताप पुरुषार्थ न्याय धर्म की चर्चा करते हुए नहीं थकता, क्या वे शकारि विक्रमादित्य हुए ही नहीं? क्या विक्रमादित्य अनेक हुये हैं? क्या यह सिर्फ उपाधि है? विक्रम नामक शासक ईसा से पूर्व हुए या अनन्तर? कुछ कहते हैं ई.पू. 57 वर्ष में विक्रमादित्य ने शकों को निकाला है, तो कुछ गुप्तवंशी सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय को ही विक्रमादित्य बताते हैं। कुछ आन्ध्र भृत्य शातकर्णि, पुष्यमित्र, एजेत, कनिष्क यशोधर्मन को विक्रमादित्य कहते हैं। विक्रम के साथ शकारि या कालिदास आदि नवरत्नों को जोड़ देते हैं, तो यह और भी किलष्ट हो जाता है। हजारों लोक कथाओं का नायक कोई ऐसे ही नहीं बन जाता, निश्चित रूप से कुछ न कुछ तो इतिहास में ऐसा घटा है, जो गाथा के रूप में जन-जन के हृदय में हजारों वर्षों से अपना अमिट प्रभाव डाल रहा है।

विक्रम सम्बन्धी पैशाची, प्राकृत, अर्धमागधी, संस्कृत, हिन्दी, मराठी, बंगाली, गुजराती आदि भाषाओं में विपुल साहित्य है, जिनके अध्ययन से यह कह सकते हैं कि वह उज्जैन के शासक थे। उन्होंने शकों को देश से बाहर निकाला। वह बहुत पराक्रमी, साहसी, न्यायी, दानी, परोपकारी शासक थे। उनके शासन में अनेक विद्यानुरागी, कलाप्रेमी, व्यक्तियों का समूह था, क्योंकि वह स्वयं विद्या एवं कला के उपासक थे।

ई.पू. चौथी शताब्दी में पंजाब में मालव नामक एक वीर जाति बसती थी। उनका एक स्वतंत्र गणराज्य था। पाणिनि के खंडकादिभ्यश्य सूत्र के गणपाठ में 'क्षुद्रकमालवत्सेना संज्ञानाम' का उल्लेख है, जिससे क्षुद्रक मालव इन उभयजाति की सेना होना सिद्ध होती है। यूनानी इतिहासकारों ने मालवों के युद्ध का रोमांचकारी जिक्र किया है। जयपुर राज्य के करकोट नगर में ई.पू. द्वितीय शती के कई सिक्के प्राप्त है, जिनमें 'मालवानांजय' अंकित है। इसका अर्थ है कि मालवों ने इस बीच पंजाब से हटकर राजपूताने की ओर प्रस्थान किया था। अतः निश्चित ही इनका संघर्ष हुआ होगा। शक स्थान के शकों की क्षहरात नामक शाखा ने सौराष्ट्र पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया था तथा क्षहरातों का तक्षशिला और मथुरा पर भी अधिकार हो गया था। सौराष्ट्र के द्वितीय शक राजा नहयान के जामाता उषवदात ने मालवों के विरुद्ध उत्तम भद्रों की सहायता की थी, जिसका उल्लेख नाशिक गुफा के शिलालेख में पाया जाता है। अनन्तर मालव राजपूताने के मालवा में आ पहुँचे। यहाँ इनका फिर से क्षहरातों से संघर्ष हुआ हो सकता है। मालवों के सेनापति ने सातवाहनों से सहायता ली हो यह हो सकता है। नाशिक प्रशस्ति 'आकरावति राजस् सक यवन पह्लव निसूदनस वरवारण विक्रम चार

विक्कमल्य'' के अनुसार भी मालव गण के अधिपति विक्रमादित्य ही था।

भविष्य पुराण

शकानां च विनाशार्थमपिधर्मवितृद्धये
विक्रमादित्यनामानं पिता कृत्वामुमोहह।।

वायु मत्स्य विष्णु आदि पुराणों में गर्दभिल्ल राजा के साथ विक्रमादित्य का नाम आता है।

जैन ग्रन्थ धनेश्वर सूरि विरचित शत्रुंजय महात्म्य (विक्रम संवत 477), मेरुतुंगाचार्य रचित पट्टावलि, प्रबन्धकोष आदि में भी वर्णन है। कुछ इतिहासकार मानते हैं कि शुंग वंश के कमजोर होने पर मालवा पर परमार राजा का आधिपत्य हुआ। राजा देवदूत परमार का पुत्र गर्दभिल्ल अर्थात गन्धर्वसेन था। गन्धर्वसेन के पहले चार एवं बाद में तीन शासकों ने 72 वर्ष तक शासन किया। मेरुतुंगाचार्य रचित पट्टावलि में उल्लेख है कि नमोवाहन के पश्चात् गर्दभिल्ल ने 13 वर्ष शासन किया। उसके बाद 14 वर्ष शकों का आधिपत्य था।

कला

शकों को हराकर विक्रमादित्य देश को एकता के सूत्र में बांधने का प्रयत्न कर रहे थे। वहीं कला के क्षेत्र में भी क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे थे। इस कला का उद्देश्य जीवन की वास्तविकताओं का आमोद-प्रमोद का सीधा सादा अलंकरण है। जातक की प्राचीन कथाएं जीवन के साधारण पहलू को कृत्रिमता रहित रख रही थीं। भरहुत के उद्भृत चित्र भारत के तात्कालिक जीवन के अनेक पहलुओं को हमारे सामने रख रहे थे। शुंगकालीन कला जीवन के अत्यन्त निकट थी। बसाढ़, भीटा, कौशाम्बी इत्यादि जगहों से मिले उद्भृत चित्रों में सामान्य स्त्री-पुरुषों के चित्र हैं।

Some animals such as elephants, deer & monkeys are better represented than any sculpture known in any part of the world; so too are some trees and the architectural details are cut with an elegance and precision which are very admirable. The human figures too though very different from our standard of beauty and grace, are truthful to nature and where grouped together, combine to express the action intended with singular felicity.

(फर्ग्युसन, हिस्ट्री आफ इण्डियन एण्ड ईस्टर्न ऑर्किटैक्चर पृ०-36)

इस युग में भारतीय कला में एक ऐसी नूतनता और ओज का समावेश हुआ, जैसा पहले कभी नहीं हुआ। निश्चित रूप से महान राजनीतिक उथल-पुथल से कलाकारों के दृष्टिकोण में परिवर्तन हुआ। उनके हृदय के कोनों में जीर्णशीर्ण कला के सिद्धान्त नई स्फूर्ति से उत्प्रेरित होकर युग की कला को एक नये साँचे में ढालते हैं। समाज की रक्त प्रणालियों में बहते हुये सांस्कृतिक ओज को ये कलाकार मूर्त रूप देते हैं। विदेशियों के संसर्ग से दूषित कला, धर्म और संस्कृति को पुनः नवीन पथ प्राप्त करना युग की विशेषता है। विक्रम युग की कथा जो जनश्रुति में सुनते हैं, जिसमें राजा की न्याय परायणता और कवियों का समादार ही नहीं बल्कि कलाकारों का भी आदर है, जिसके फलस्वरूप उन्होंने भारतीय कला को एक नये पथ पर चलाया।

साँची के तोरणों का समय ई.पू. प्रथम शताब्दी है (यही विक्रम काल है) चार तोरण द्वार बनाये गये हैं। पहले दक्षिण का फिर अन्य कुल निर्माण में 20 से 30 वर्ष लगे हों, तो बनावट एक जैसी है। हर तोरण में दो स्तम्भ हैं, जिन पर सिंह, बौने, यक्षिणियों की मूर्तियां हैं। घुमावदार क्षेत्रों के निकले हुए हिस्से को संभालते हुए बीच-बीच में हाथी व घोड़े है। जिन पर सवार दो मुखों के हैं, दक्षिण तोरण में गंधर्व की मूर्तियां हैं। तोरणों में सिंह या हाथी पर धर्मचक्र की आकृति है उसके बगल में त्रिरत्न हैं, इस प्रकार देखते हैं कि अशोक के समय के पुराने कला सिद्धान्तों को न छोड़ते हुए नवीनता के भी स्त्रोत है। अजंता की नौंवी और दसवी गुफा में विक्रम युग की चित्रकला उन्नति अवस्था में पहुंच चुकी थी। मानव आकृतियों में अपनापन है। शायद

चित्रकार के रंग संवाद कर रहे है। इन चित्रों को देखकर कई बार लोग ग्रीक प्रभाव का अनुमान करते हैं, परन्तु शायद वह भूल जाते हैं कि भारतीय कला में सादृश्यता (चित्र देख कर नकल करना) नहीं है। वह अमूर्त में मूर्त देखता है। वह अपनी कल्पना से चित्रों को आकार देता है। उसके मन मस्तिष्क हृदय में चित्र उभरता है फिर रंगकार होता है यह विक्रम युग में दिखता है।

हमारे आचार्यों ने बड़ी तपस्या के बल पर और सर्वभौम कल्याण की दृष्टि से ही कुछ लिखा है। उनकी कला दृष्टि भीतर के अंग और उपांग में ज्यादा दिखती है। बाहर की स्निग्धता की अपेक्षा भीतर का अमृत ज्यादा दिखता है। यहाँ के भीतर की महाशक्ति अनाहतनाद की अनन्त, तान अन्तर्दृष्टि की अखण्ड अभंग ज्योति दिखती है। भारतीय मूर्तियां किसी देव या अन्य वस्तु के वास्तविक चित्रण के परिणाम स्वरूप नहीं है, उनमें कल्पना तथा दर्शन का मिश्रण होता है। कलाकार ध्यान मुद्रा में जिस रूप को देखते हैं, उसी का चित्रण प्रायः करते हैं। इस कल्पना के साथ देवताओं के शारीरिक अवयवों की रचना की गई है, फिर भावभंगिमा के लिये भी अनेक प्रकार की मुद्राओं को उत्पन्न किया गया है।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मूर्तियों का वर्णन है उनके अनुसार अपराजित, अप्रतिहत, जयन्त, वैजयन्त, वैश्रवण आदि मूर्तियां नगर के मध्य स्थापित रहती थीं। शुंगकाल की बलराम जी की मूर्ति लखनऊ म्यूजियम में है।

विक्रमकाल के मानव ने अपने अंतरंग और बर्हिरंग को इतना कला पूर्ण बना लिया था कि जीवन की विषमताएं कला के द्वारा उत्पन्न हुई आनन्दनिधि में डूब चुकी थीं। उसने अपने चारों ओर ऐसे संसार की सृष्टि कर ली थी कि जिसमें विश्व के संघर्ष कुण्ठित हो चले थे। सारा देश इसी साधना में तल्लीन था।

आज भी उस युग के अवशेष अपनी मूक भाषा में उस समाज का चित्रण हैं, जो प्रस्तुत करते हैं वह शान्त और अपनी साधनों में मुग्ध योगी रंग है। उनकी कलाकृतियां, भवन, वेशभूषा हमें चकित करते हैं। अनेक भाषाओं से युक्त मानवीय संवेदना का अबाध प्रवाह प्रस्तर प्राचीन में उत्कीर्ण है, जो अद्भुत कलामय संसार की ज्योति झलकाती है।

लेखक-संजय श्रीहर्ष

नववर्ष चेतना समिति

महाराज विक्रमादित्य की शास्त्र सम्मत जन्म कुण्डली : खगोलीय शोध-पत्र

॥ श्रीः ॥

पुष्पाञ्जलि वेदाङ्ग· पीठ

पुष्पांजलि पंचांगम्। खगोल ज्योतिष। वास्तु।
आचार्य पं. राजेश मिश्र मोवा. 9685901030
133, मास्टर्स रेजीडेन्सी, बावड़िया कला, रोहित नगर, भोपाल। पिन - 462039, email- panchang.pushpanjali@gmail.com

श्री गणेशाय नमः

प्रति,

दिनांक 02 अगस्त 2022

परमादरणीय पं. श्री राम तिवारी जी,
निदेशक
महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ
उद्यन मार्ग, अलकापुरी कालोनी,
उज्जैन (म. प्र.) पिन 456010
ईमेल - vikramadityashodhpeeth@gmail.com

विषय :- महाराज विक्रमादित्य की शास्त्र सम्मत जन्म कुण्डली : खगोलीय शोधपत्र।
;Astronomical evidence of planetary position at the time of birth of Vikramadityaद्ध

महोदय,

यह जानकर अत्यंत प्रसन्न्ता का अनुभव हो रहा है कि मध्य प्रदेश शासन की पहल पर आपके निर्देशन में विक्रम संवत् के प्रवर्तक सम्राट विक्रमादित्य के बारे में शोध चल रहा है। उल्लेखनीय है कि वीर विक्रमादित्य परमार वंशीय थे। उनका गोत्र वसिष्ठ था। कालान्तर में उनके वंशज पुण्यपाल परमार की राजधानी ग्वालियर के निकट सिंध नदी के किनारे 'पवाया' में थी। पुण्यपाल परमार ने सन् 1233 में 'पवाया' स्थान में राजधानी स्थापित की थी। कालान्तर में पुण्यपाल परमार के द्वितीय पुत्र शंकर शाह ने कर्णहार (वर्तमान करैरा, जिला शिवपुरी) में राजधानी स्थापित की थी। शंकर शाह के पुत्र कर्णदेव परमार ने सन् 1250 में करैरा में भव्य किले का निर्माण कराया। 'पवाया' ग्राम एवं करैरा का किला वर्तमान में पुरातत्व विभाग के संरक्षण में है। करेरा के किले का वर्णन अब्दुल्लाह मोहम्मद लेखक की पुस्तक 'जफरू-लवालेहु-वे-मुज्जफर-व-अले' में है।

उल्लेखनीय है कि हमारे वंशज परमार वंश के कुल पुरोहित रहे हैं। जहाँ जहाँ परमार वंश स्थापित हुए वहाँ-वहाँ हमारे वंशज भी पुरोहित के रूप में साथ - साथ रहे। हमारे पूर्वज 'पवाया' के होने के कारण वर्तमान में पमाय के मिसर कहलाते हैं। पमाय शब्द पवाया का अपभ्रंश है एवं मिसर शब्द मिश्र का अपभ्रंश है। वर्तमान में हमारे कुटुम्बीय परिजन करैरा तहसील, जिला शिवपुरी के अन्तर्गत विभिन्न ग्रामों में निवास कर रहे हैं। हमारा और परमार क्षत्रियों का एक ही 'वसिष्ठ' गोत्र है। वर्तमान में हमारा मूल निवास ग्राम डामरौन खुर्द, तहसील करैरा, जिला शिवपुरी है। इसी ग्राम में परमार वंशीय ठाकुर आज भी निवासरत हैं।

परम्परागत श्रुति से हम सुनते आये हैं कि, हमारे यजमानों में किसी भी विशिष्ट पुरुष का जन्म मध्याह्न काल में होता आया है। श्री राम जी का जन्म भी मध्याह्न काल में हुआ था। इसी आधार पर महाराजा विक्रमादित्य की जन्म लग्न का निर्धारण कर सूर्यसिद्धान्त से गणना कर कुण्डली निर्धारित की है। कुण्डली में विस्तृत फल शास्त्रीय प्रमाण सहित लिखकर इस पत्र के साथ संलग्न कर प्रेषित हैं। प्रस्तुत गणनाएँ दिनांक 6 मई 2022 को पूर्ण कर ली गईं थीं। कृपया इस कुण्डली को अपने शोध रिकार्ड में दर्ज करने का कष्ट करें।

संलग्न - महाराज विक्रमादित्य की विस्तृत जन्म कुण्डली।

आचार्य पं. राजेश मिश्र
पंचांगकर्ता- पुष्पांजलि पंचांग

प्रतिलिपि :-

(1) परमादरणीय पं. श्री शिवशेखर शुक्ला जी,
प्रमुख सचिव,
स्वराज संस्थान संचनालय, संस्कृति विभाग म.प्र. शासन,
रवीन्द्र भवन परिसर, भोपाल (म. प्र.) पिन - 462002
-की ओर अग्रिम कार्यवाही हेतु सादर प्रेषित।

नववर्ष चेतना समिति

।।श्रीः।।

परमार वंशीय सम्राट विक्रमादित्य की जन्म कुण्डली
(Astronomical Calculation of Planetary Position)

सम्राट विक्रमादित्य परमार क्षत्रिय वंश में जन्मे थे। इनका गोत्र वसिष्ठ था। विक्रमादित्य का जन्म वैशाख शुक्ल २ उपरान्त ३ तिथि, गुरुवार, गत कलि संवत् ३०००, युधिष्ठिर संवत् ३०३७ को मध्याह्न काल में उज्जैन में हुआ था। जूलियन कलेण्डर के अनुसार दिनांक १४ अप्रैल १०१ ईसा पूर्व सिद्ध होता है।

सूर्यसिद्धांतीय अहर्गण ७१४४०३३९२४२० दिन।

तिथि द्वितीया १६।४५। जन्म नक्षत्र रोहिणी २ चरण। शोभन योग। कौलव करण।

उज्जैन में स्थानीय सूर्योदय प्रातः ५।५१। दिनमान ३०।४५।

स्थानीय जन्म समय मध्याह्न दोपहर १२।००। सूर्योदयादि इष्टकाल घटी १५।२२।३०। इष्टकाल घंटा मिनट ६।०९

जन्म लग्न कर्क।

जन्मकालीन भुजान्तर संस्कार रहित ग्रह स्पष्ट इस प्रकार हैं:-

सूर्यसिद्धांतीय अहर्गण (दिन संख्या) ७१४४०३३९२४२०

True Geocentric Position of Planets (Longitude in Rashi, Degree, Minute and Seconds)

सूर्य स्पष्ट ००।१८।५२।५१

चंद्र स्पष्ट ०१।१५।२७।२२

मंगल स्पष्ट ००।२३।४२।०६

बुध स्पष्ट ००।२६।५३।०१ वक्री

गुरु स्पष्ट ११।११।५०।०६

शुक्र स्पष्ट ११।०४।३८।५८

शनि स्पष्ट ०९।१३।१०।५६,

राहु ०२।१९।३६।४९, केतु धनु में।

महादशा शुक्र भोग्य १६ वर्ष ९ माह।

॥ लग्न चक्रम्॥

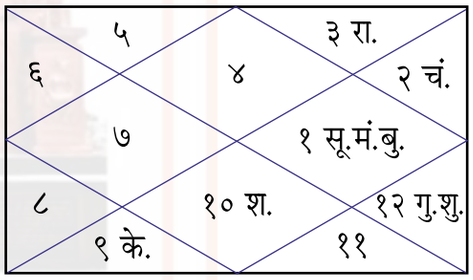

विक्रम संवत् का प्रवर्तन समय - युधिष्ठिर संवत् ३०८२, गत कलि संवत् ३०४४। उम्र ४४ वर्ष। उस समय राहु में गुरु की अन्तर्दशा समाप्त होने वाली थी।

-- जन्म कुण्डली का शास्त्रीय फलादेश --

लग्न भाव फलम्

निजोच्चे निजभे वर्गे, स्वकीये लग्नपे यदि।

दीर्घायुः सुखसन्तृप्तो, बली भोगी प्रजायते।। (भावकुतुहलम भाव विचार अध्याय/श्लोक ४)।

लग्नेश चंद्रमा उच्चराशि में होने से विक्रमादित्य दीर्घायु एवं बलवान थे। राजा होने के कारण उन्होंने सांसारिक सुखों का भोग किया।

लग्नेशे लाभगे जातः, सदा लाभ समन्वितः।
सुशीलः ख्यातकीर्तिश्च बहुदारगुणैर्युतः।। (वृहत्पाराशर अध्याय २५/श्लोक ११)।

लग्नेश चंद्रमा लाभ यानि एकादश भाव में होने से जातक आजीवन राजपद से लाभान्वित रहे। सुशील स्वभाव का हो, उनकी कीर्ति अमर है। उनकी अनेक रानियां थीं।

धन भाव फलम्

धनादिपो माननवायभावे बली यदा तिष्ठति जन्मकाले।
रमा विहारालयवासिनी वा निजोच्च मित्रालयगो जनानाम्।। (भावकुतुहलम भाव विचार/श्लोक १०)।

द्वितीय भाव के स्वामी सूर्य उच्चराशि में होकर समान भाव (दशम) में होने से रमाविहारी यानि उनके घर में सदा लक्ष्मी जी का निवास रहा।

धनेशे कर्मगे जातः, कामी मानी च पण्डितः।
बहुदारधनैर्युक्तः, किंञ्च पुत्र सुखोज्झितः।। (वृहत्पाराशर अ २५/श्लोक २२)।

वे पूर्णकाम, सम्मानित एवं विद्यावान थे। उनकी अनेक रानियां थीं। विक्रमादित्य के पुत्रगण उनके समान पुण्यवान नहीं थे, यह किंचित् पुत्र सुख की न्यूनता थी।

।।श्रीः।।

महाराजा विक्रमादित्य की जन्म कुंडली

सहज भाव फलम्

दशमे सहजाधीशे, जातः सर्वसुखान्वितः।
स्वभुजा-अर्जित-वित्तश्च दुष्टस्त्रीभरणे रतः।। (वृहत्पाराशर अ २५/श्लोक ३४)।

तृतीय भाव के स्वामी बुध दशम भाव में होने से सभी प्रकार के सुखों को भोगने वाले थे। उन्होंने अपने पराक्रम के बल पर राजकोष सुदृढ़ किया था। उनकी कोई एक रानी दुष्ट स्वभाव की अवश्य रही होगी, इसकी पुष्टि इतिहास विशेषज्ञ ही कर सकते हैं। तृतीय भाव पर बलवान गुरु एवं शुक्र (ब्राह्मण ग्रह) की दृष्टि होने से उनके भाई भर्तृहरि आध्यात्मिक स्वभाव के हुए। कन्या राशि राहु का स्वग्रह है। राहु उच्च के होकर द्वादश भाव में स्थित होने से भर्तृहरि को वैराग्य हुआ। तृतीय भाव के कारक मंगल दशम भाव में स्वक्षेत्री एवं स्थान बली होने से पराक्रम के कारण विक्रम उपाधि प्राप्त की।

चतुर्थ भाव फलम्

त्रिकोणे वाहनाधीशे, केन्द्रे च बलसंयुते।
निजोच्चादि पदे नूनं, वाहनं नूतनं भवेत्।। (भावकुतुहलम, १५/श्लोक १६)।

सम्राट होने से सभी प्रकार के वाहनों का सुख था।

वदन्ति विद्या जननी सुखानि सुगंध गो बन्धु मनोगुणानि।
महीप यान क्षिति मन्दिराणि चतुर्थ भाव प्रभवानि तज्ज्ञाः।। (जातक परिजात १२/५९)।

महाराजा विक्रमादित्य को पारिवारिक बन्धुओं, माता, गोवंश, सुगंधित द्रव्य एवं विद्या का सुख था। राजसुख, वाहनसुख, भूमि यानि राज्य क्षेत्र का लाभ एवं मंदिरों के निर्माण से आत्म सुख प्राप्त था।

पंचम भाव फलम्

लग्नादात्मनि पुंग्रहेक्षियुते पुंदेवताराधनं।

युग्मे शुक्रनिशाकरेक्षियुते स्त्री दवेतामिच्छति।। (जातक परिजात १३/२)।

लग्न से पंचम भाव पर पुरुष ग्रह गुरु की दृष्टि होने से गुरु गोरक्षनाथ के आराधक थे। इसी प्रकार पंचम भाव में सम राशि (वृश्चिक) होने तथा पंचम भाव पर चंद्रमा (स्त्रीग्रह) की दृष्टि होने के कारण हरसिद्धि माता उनकी आराध्य देवी थीं।

सुतेशे राज्य भावस्थे, राज्ययोगो हि जायते।
अनेक सुख भोगी च, ख्यातकीर्तिर्नरो भवेत् (बृहत्पाराशर.., २५/५८)।

पंचमेश मंगल, दशम भाव में बलवान होकर स्थित होने से प्रबल राजयोग एवं ख्याति और कीर्ति के योग हैं।

षष्ठम भाव फलम्

पापैः शत्रुत्क्षतादि ब्रणभय विपुलं जायते लांछनं वा। (जातक परिजात ७२/१३)।

षष्ठ भाव में केतु होने से युद्ध के दौरान शरीर में घाव होना स्वाभाविक है। केतु की दशा वृद्धावस्था में आई थी, उस समय कोई न कोई कलंक लगा होगा। इसकी पुष्टि केवल इतिहासकार ही कर सकते हैं।

सप्तम भाव फलम्

केन्द्र त्रिकोणे दारेशे, स्वोच्च मित्र स्ववर्गगे।
कर्माधिपेन वा दृष्टे, बहु स्त्री सहितो भवेत्।।
कलत्राधिपतौ केन्द्रे, शुभ ग्रह निरीक्षिते।
शुभांशे शुभ राशौ वा, पत्नि व्रतपरायणा।।
शुभांशे शुभ संदृष्टे, नाथे जाया शुवंशजा। (जातक परिजात २१-२२-२४/१४)।

सप्तमेश शनि स्वग्रही होने से बहुपत्नी योग है। उनकी पत्नियां कुलीन एवं पतिपरायण थीं।

अष्टम भाव फलम्

केन्द्रे कोणे अष्टमाधीशे, तुंगादिपगे तदा।
दीर्घायुरुदितं पूर्वैर्व्यत्यये हीनमंगिनाम्।। (भावकुतुहलम्, अध्याय १५/श्लोक ३७)।

अष्टमेश शनि केन्द्र में स्थित होने से दीर्घायु योग फलित हुआ।

स्वस्थे रन्ध्रपतौ चिरायु....., (जातक परिजात १४/४९)।
दीर्घायुर्निजतुङ्गगे शुभयुते केन्द्र त्रिकोणेऽथवा। .....,(जातक परिजात १४/५२)।

अष्टमेश शनि स्वराशि में केन्द्र स्थान में होने से दीर्घायु/चिरायु योग फलित हुआ।

।।श्रीः।।

महाराजा विक्रमादित्य की जन्म कुंडली

नवम भाव फलम्

निजोच्चे पुण्यगृहे नभगो बलिर्यदा तिष्ठति जन्मकाले।
स पुण्यशाली नवरत्नमाली धराधिपो राजकुलप्रसूतः (भावकुतुहलम् १५/४०)।

नवमेश गुरु स्वग्रही होकर बलवान होने से विक्रमादित्य पुण्यशाली राजा थे। उनके दरबार में नवरत्न थे। उनका जन्म राजकुल में हुआ था।

जीवे शुक्रयुते चिरायुरधिकश्रीमान.....,(जातक परिजात १४/७७)।

नवम भाव में गुरु शुक्र युति होने से चिरायु एवं श्री एवं कीर्ति की प्राप्ति हुई।

भाग्येशे भाग्य भावस्थे, बहुभाग्य समन्वितः।
गुण सौन्दर्य सम्पन्नो, सहजेभ्यः सुखं बहु।। (बृहत्पाराशर..२५/१०५)।

भाग्येश गुरु भाग्य भाव में स्थित होने से सहोदर भाई भर्तहरि से राज्य सुख प्राप्त हुआ।

दशम भाव फलम्

कर्ममेशे राज्य भावस्थे, सर्व कर्म पटुः सुखी।
विक्रमी सत्यवक्ता च, गुरु भक्तिरतो नरः।। (बृहत्पाराशर.., भावेश फलाध्याय २५/११८)।

कर्मेश मंगल स्वग्रही बलवान होकर कर्मभाव में स्थित होने से विक्रमादित्य की पदवी प्राप्त हुई। इस योग में जन्म लेने के कारण वे सभी कार्यों में कुशल, सत्यवादी एवं गुरु-ब्राह्मणों के भक्त थे।

कर्मपः केन्द्रकोणस्थो, ज्योतिष्टोमादि यज्ञकृत्।
कूपायतनकर्ता च, देवता-अतिथि पूजकः।। (भावकुतुहलम् भाव विचार अध्याय/श्लोक ४५)।

कर्मेश केन्द्र में होने से यज्ञकर्ता, कुंआ-तालाब धर्मशाला का निर्माण कर्ता, अतिथि एवं देवताओं का सम्मान करने वाले धार्मिक स्वभाव के थे।

गंगा स्नान फलं समेति दशमे राहौ दिनेश-अथवा। (जातक परिजात २/१५)।

दशम भाव में राहु या सूर्य होने पर गंगा स्नान के समान पुण्यफल (निष्पाप) थे।

व्यापार धर्म भवने शुभ खेट युक्ते तन्नाथ जीवतनुपा बलशालिनश्चेत्।
आचार-धर्म-गुण-कर्म विधि प्रयुक्त श्रद्धापरो भवति विप्रकुला-अग्रगण्यः।। (जातक परिजात ११/१५)।

दशम एवं नवम भाव में बलवान ग्रह (स्वग्रही मंगल, उच्चराशि के सूर्य, स्वग्रही गुरु, उच्चराशि के शुक्र) होने से जातक को आचार-धर्म-गुण-कर्म एवं विधि (न्याय) में परम श्रद्धा थी। वे अपने कुल (वसिष्ठ गोत्रजों) में अग्रगण्य थे।

एकादश भाव फलम्

लाभेशे भाग्य भावस्थे, भाग्यवान् जाये नरः।
चतुरः सत्यवादी च राज्यपूजो धनादिपः।। (बृहत्पाराशर.., भावेश फलाध्याय २५/१२९)।

लाभ भाव के स्वामी शुक्र उच्च के होकर भाग्य भाव में स्थित होने से जातक भाग्यवान, सत्यवादी, धनवान एवं राजाओं से पूज्य (सम्राट) थे।

लाभ स्थान गतः समस्तगुणवानिष्टाधिकश्चेद्बली।
जातो यान विभूषणाम्बर वधू भोगादि विद्याधिकः।। (जातक परिजात १५/६८)।

लाभ स्थान में शुभ बली उच्च का चंद्रमा होने से जातक सर्वगुण सम्पन्न, अधिक विद्वान, अच्छे मित्र (वराहमिहिर, कालिदास इत्यादि नव रत्न), अनेक प्रकार के वाहन, वस्त्राभूषण, स्त्री इत्यादि का भोगवान योग है।

द्वादश भाव फलम्

व्ययेश राजभावस्थे, व्ययो राजकुलात् भवेत्।
पितृतोऽपि सुखं तस्य, स्वल्पमेव हि जायते।। (बृहत्पाराशर.., भावेश फलाध्याय २५/१४२)।
स्याद्-उच्च-स्व-मित्र भवने तु परोपकारी।। (जातक परिजात १५/७७)।

द्वादश भाव में उच्च राशि में राहु होने से विक्रमादित्य परोपकारी स्वभाव के थे।

।।श्रीः।।

महाराजा विक्रमादित्य की जन्म कुंडली

- अन्य राजयोग -

खेटा यदा पंच निज्जोच्च संस्थाः स सर्वभौमः खलु यस्य सुतौ।
त्रिभिः स्वतुंगोपगतैः स राजा नृपालबालो अन्य सुतस्तु मंत्री।। (भावकुतुहलम् ७/४५)।

पांच ग्रह उच्च राशि में होने से सार्वभौम (पृथ्वी का) सम्राट योग है। विक्रमादित्य की कुण्डली में सूर्य, चंद्र, शुक्र, राहु और केतु अपनी उच्चराशियों में विद्यमान हैं।

विशेष निवेदन

कहीं पर विक्रमादित्य की लग्न कुण्डली में कर्क लग्न में गुरु, चतुर्थ भाव में तुला के शनि, षष्ठ भाव में धनु के राहु, सप्तम भाव में मकर का मंगल, दशम भाव में मेष के सूर्य, एकादश भाव में वृष राशि में चंद्रमा, बुध एवं शुक्र तथा द्वादश भाव में मिथुन के केतु बताते हैं। सूर्य सिद्धान्त एवं अन्य ग्रंथों के आधार पर गणना करने पर यह ग्रह स्थिति की कुण्डली काल्पनिक पाई गई है, क्योंकि किसी भी गणित से कथित ग्रह उनके जन्म के १०० वर्ष आगे या पीछे के काल में भी संभव नहीं हैं। सिद्धान्त गणित के विद्वान इसका परीक्षण स्वयं गणना कर संतुष्ट हो सकते हैं। इसी कारण शुद्ध गणना कर महाराजा विक्रमादित्य की कुण्डली प्रस्तुत की जा रही है। खगोल एवं सिद्धान्त गणित के जानकार विद्वान इस गणना से संतुष्ट होंगे। श्री परब्रह्मं अर्पणमस्तु।।

पुष्पांजलि वेदाङ्ग पीठ।।

वैशाख शुक्ल, पंचमी, संवत् २०७९, शुक्रवार, दिनांक ६ मई २०२२

आचार्य पं. राजेश मिश्र
पंचांगकर्ता- पुष्पांजलि पंचांग
133, मास्टर्स रेजीडेन्सी, बावड़िया कला, रोहित नगर,
भोपाल (मध्य प्रदेश)
पिन - 462039
मोबाइल - 9685901030, 9406902687

नववर्ष चेतना समिति

श्रीरामजन्मभूमि मंदिर संरचना का संक्षिप्त परिचय

इंजी० हेमंत कुमार
उपसम्पादक, नवचैतन्य
संयोजक-भवन निर्माण तकनीक जनजागरण अभियान,
ग्राम-फीना, बिजनौर।

श्रीरामजन्मभूमि मन्दिर जिस परिसर में बन रहा है उसका कुल क्षेत्रफल 2.7 एकड़ है। परिसर का आकार अनियमित (Not in well defined shape) है। इस परिसर के उत्तरी हिस्से में मंदिर का निर्माण किया जाएगा। निर्माण के लिए यह स्थान पूर्व निर्धारित है। मंदिर के मुख्य भवन की लंबाई 360 फीट, चौड़ाई 235 फीट तथा अधिकतम ऊँचाई 161 फीट पहुँचने का अनुमान है। मंदिर में बन रहे मंडपों के नाम नृत्य मंडप, रंग मंडप, गूढ़ मंडप (सभा मंडप), प्रार्थना मंडप और कीर्तन मंडप प्रस्तावित हैं। इस मुख्य भवन के चारों ओर पर्याप्त स्थान छोड़कर 14 फीट चौड़ाई का एक परकोटा भी बनाया जाएगा। इस परकोटे में

भूतल पर कार्यालय तथा विविध उपयोग के लिए कमरे बनाए जाने का प्रावधान है। प्रथम तल पर गलियारा बनाया जाना प्रस्तावित है जिसमें श्रद्धालु मुख्य मंदिर भवन की परिक्रमा कर सकते हैं। इस परकोटे में एक-एक मंदिर चारों कोनों पर तथा एक-एक उत्तरी एवं दक्षिणी भुजा पर बनाया जाना प्रस्तावित है। प्रथम तल पर जाने के लिए परकोटे में लिफ्ट बनाए जाने का भी प्रस्ताव है, जो वृद्ध, अशक्त और दिव्यांगों को सुविधा प्रदान करने के लिए होगी। मन्दिर के मुख्य भवन की लंबाई पूर्व से पश्चिम की ओर रखी गई है। मन्दिर में प्रवेश करते समय श्रद्धालुओं का मुँह पश्चिम दिशा में रहेगा और गर्भगृह में रखे श्रीरामलला विग्रह का मुख पूर्व दिशा में रहेगा। मंदिर में भूतल को जोड़कर अधिकतम तीन तल (Floor) बनाए जा रहे हैं। प्रत्येक तल की ऊँचाई लगभग 20 फीट होगी। भूतल पर 160 खंभे, प्रथम तल पर 132 खंभे तथा द्वितीय तल पर 74 खंभे बनाए जाएँगे। इस मंदिर में मुख्य प्रवेश द्वार के अलावा ग्यारह अन्य प्रवेश द्वार भी हैं। मंदिर में स्थापित होने वाली श्रीरामलला की प्रतिमा को देश और दुनिया के सुप्रसिद्ध मूर्तिकार श्री अरुण योगीराज ने बनाया है। ये मैसूर के रहने वाले हैं और इनके परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी मूर्ति निर्माण का कार्य होता आया है। अरुण योगीराज द्वारा बनाई गई प्रतिमा के स्वरूप को मन्दिर निर्माण के सभी ट्रस्टियों ने देखा और सहमति जताई। श्रीरामलला का विग्रह पाँच वर्ष की आयु के अनुरूप बनाने का प्रयास किया गया है। लेख स्रोत-चित्रों के झरोखे से श्रीराम जन्मभूमि मंदिर लेखक इंजी0 हेमंत कुमार। सहायक संदर्भ-https://www-anuragdarshan-com/archives/6557

नोट-बताई गई इन चीजों में निर्माण के समय परिस्थिति के अनुसार बदलाव भी किया जा सकता है।

रामकथा की व्यापकता एवं विविधता

पद्मश्री प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र
पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

आधुनिक विद्वज्जनों ने विश्वस्तरीय तीन कथानकों को सर्वाधिक प्रभावशाली माना है। ये हैं रामकथा, सीजर तथा क्लियोपेट्रा की कथा एवं रुस्तम-सोहराब की कथा। इन कथाओं का उद्भवस्थल क्रमशः भारतवर्ष, रोम-मिस्र तथा फारस (पर्शिया, वर्तमान ईरान) रहे हैं। परन्तु व्यापकता, विविधता तथा प्रभविष्णुता की दृष्टि से इन तीनों विश्वस्तरीय कथाओं में भी 'रामकथा' प्रत्येक दृष्टि से सर्वोपरि सिद्ध होती है।

व्यापकता अथवा विस्तार की दृष्टि से विश्व-मानचित्र के प्रायः दो तिहाई भूभाग ने रामकथा को आत्मसात् कर रखा है। प्राचीन मिस्र, रोम तथा एशिया माइनर से लेकर वियतनाम (चम्पा), कम्बोडिया (कम्बुज) तथा सुवर्णद्वीप (इण्डोनेशिया) तक का क्षेत्र आज भी यथाकथञ्चित रामायण-संस्कृति से प्रभावित है। रामकथा के इस कालजयी महाप्रभाव को देखकर ही श्री पेटाला रत्नमूजी ने जो अमरीका, चीन, लाओस तथा इण्डोनेशिया में भारत के राजदूत रहे, प्रथम प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू के समक्ष Ramayana Commonwealth की स्थापना का प्रस्ताव रखा था। श्री रत्नम् का विश्वास था कि ब्रितानी शासन से जुड़े राष्ट्रों की संस्था British Commonwealth की ही तरह रामायण-संस्कृति से जुड़े राष्ट्रों की यह संस्था उनके पारस्परिक हितों की रक्षा करने तथा राजनयिक सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाने में समर्थ होगी। परन्तु राष्ट्रीयता एवं राष्ट्रप्रेम को 'फैशन' के स्तर पर जीने वाले तथा एक सीमा तक नास्तिक मनोवृत्ति के पण्डित नेहरू को श्री रत्नम् का यह प्रस्ताव अटपटा लगा। काश, यही प्रस्ताव महामहिम सरदार वल्लभभाई पटेल के समक्ष उपन्यस्त हुआ होता तो Ramayana Commonwealth संयुक्त राष्ट्रसंघ से भी कहीं अधिक तेजोदीप्त, सर्वमान्य संगठन बन जाता और विश्वस्तर पर रामराज्य की संस्थापना की सम्भावना निश्चय ही बढ़ जाती।

भारतीय कालगणना के मानदण्ड अत्यन्त विज्ञान सम्मत एवं सुस्थिर हैं। यह बात और है कि सहस्राब्दियों की दासता ने हमारे ज्ञान, विज्ञान को हमारी अनन्यत्रोपलब्ध विविध उपलब्धियों को अपनी थोथी मान्यताओं से या तो 'अमान्य' सिद्ध कर दिया है या फिर उन्हें विवादास्पद बना दिया है। उससे भी बड़ा दुर्भाग्य यह है कि निरंकुश तथा सर्वतन्त्र-स्वतंत्र होते हुए भी हम आज भी बौद्धिक दासता का कंचुक ओढ़े हुए, मूर्खों की तरह रटाया गया वाक्य दुहरा रहे हैं कि रामायण-संस्कृति मात्र 1400 वर्ष ईसा पूर्व की है। हड़प्पा के अवशेषों में रामायण संस्कृति का कोई प्रमाण नहीं मिलता (फलतः उसका अस्तित्व सन्दिग्ध है) महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यास के विषय में अभी हम मैकडानेल की ही युक्ति दुहरा रहे हैं-He was a legendary personality. He was only the reteller of tales.

वस्तुतः यही समुचित अवसर है कि भारत की तर्कसम्मत, विज्ञानसम्मत एवं तपस्सिद्ध उपलब्धियों, परम्पराओं की नये सिरे से प्रतिष्ठा की जाए तथा विदेशी विद्वानों की एकांगी, निर्मूल, दुर्भावनाग्रस्त तथा भ्रान्त धारणाओं को सदा-सदा के लिए भारतीय वाङ्मय एवं जनमानस से बहिष्कृत कर दिया जाए, भारत की स्वतन्त्रता तभी सार्थक

सिद्ध होगी। अन्यथा कहने को हम तो स्वतन्त्र हैं, परन्तु हमारा साहित्य, हमारा धर्म, हमारी संस्कृति तीनों आज भी पराधीन हैं। बिना ईसवी सन् की लक्ष्मणरेखा को तिरस्कृत किये हम भारत के गौरवमय अतीत के साथ न्याय नहीं कर पायेंगे।

भारतीय परम्परा के अनुसार मर्यादा पुरुषोत्तम राम 24वें त्रेतायुग में अवतीर्ण हुए। इसके पोषक प्रमाण हमें वायु, ब्रह्माण्ड, हरिवंश पुराण तथा महाभारत में उपलब्ध होते हैं-

त्रेतायुगे चतुर्विंशे रावणस्तपसः क्षयात्।
रामं दाशरथिं प्राप्य सगणः क्षयमेयिसान्।। वायु 70.48

चतुर्विंशे युगे वत्स! त्रेतायां रघुवंशज।
रामो नाम भविष्यामि चतुर्व्यूहस्सनातनः।। ब्रह्माण्ड 2,3,36,30

चतुर्विंशे युगे चापि विश्वामित्रपुरस्सरः।
लोके राम इति ख्यातस्तेजसा भास्करोपमः।। हरिवंश 21.1.46

सन्धौ तु समनुप्राप्ते त्रेताया द्वापरस्य च।
रामो दशरथिर्भूत्वा भविष्यामि जगत्पतिः।। महा. शान्ति. 348.16

पौराणिक कालगणना-परम्परानुसार 4320000 (तैतालीस लाख बीस हजार) वर्षों की एक चतुर्युगी होती है। इस चतुर्युगी को ही पुनः संक्षिप्त करने के उद्देश्य से कृतयुग (1728000 वर्ष) त्रेता (1266000 वर्ष) तथा द्वापर (864000 वर्ष) मात्र के वर्षों को जोड़कर पुराणों में एक 'पर्याययुग अथवा परिवर्तनयुग' की कल्पना की गयी है, जो 3888000 वर्षों तक होता है। इस दृष्टि से 24वें त्रेतायुग में श्रीराम का अवतरण स्वीकार करने का अर्थ है उन्हें मनुसंवत 10,23,83300 से 102384300 वर्ष के बीच में अवस्थित मानना। मनुसंवत् का अर्थ है तेईस पर्याययुगों की तथा चौबीसवें कृतयुग एवं त्रेतायुग की समन्वित कालावधि। इसी कालावधि में अर्थात 24वें पर्याययुग में त्रेता के अंतिम सात सौ तथा द्वापर के प्रारम्भिक तीन सौ वर्षों में राम इस धराधाम पर विराजमान रहे। उनका जीवन एक सहस्र वर्ष का था न कि ग्यारह सहस्त्र वर्षों का, जैसा कि कालगणना का रहस्य ठीक से न समझ पाने के कारण लोग मानते हैं। इस संदर्भ में श्री चन्द्रकान्त बाली का शोधालेख पढ़ने योग्य है।

ईसवी सन् की मानसिकता से व्यामोहित भारतीयों को रामावतरण की यह तिथि 'कोरी गप्प' ही प्रतीत होगी। वस्तुतः इस तथ्य को आत्मसात् करने के लिए प्रभूत श्रद्धा एवं गहरी निष्ठा की आवश्यकता है। सम्प्रति 28वें कलियुग के 5057 वर्ष बीत रहे हैं। इस दृष्टि से मर्यादा पुरुषोत्तम राम आज से 14556757 (एक करोड़ पैंतालिस लाख छप्पन हजार सात सौ सत्तावन) वर्ष पूर्व भारतभूमि पर विद्यमान थे।

बहरहाल, आधुनिक इतिहासकारों को यदि राम की यह जीवन-तिथि उपहासास्पद भी प्रतीत हो तो उनकी प्राचीनता में तिलमात्र संदेह नहीं किया जा सकता है। सौभाग्यवश प्राचीन मिस्र के राजवंशों का शिलोत्कीर्ण इतिहास, (ईसा से 5702 वर्ष पूर्व प्राचीन) आज भी सुरक्षित है। इतिहासकार बोकह के अनुसार मिस्र के प्रथम शासक मन (ग्रीक मेनस) ने ई. पू. 702 वर्ष में वहाँ राज्य किया। अन्य ऐतिह्याविद यह तिथि ई.पू. 5613 वर्ष मानते है। मन अथवा मनु के अनुसार 18 वंशों के नरपतियों ने मिस्र में शासन किया। ये सभी शासक स्वयं को 'र' अथवा सूर्य कहते थे। सनफर नामक सम्राट ने 'नवमत' (नभोमत्) उपाधि धारण की। परवर्ती राजाओं में खूफ, शफर (क्षिप्र) नवम् अरवत (नभम् अक्षत) मनकर, रवनमहातप, नफर, रणअसर, मनकहर, नतराकृत (नेत्र-कृत सम्राज्ञी) अनन्फ, मन्तःतफ तथा शंखकर आदि हुए।

शंखकर ने अपने सेवक हनु को 'पनत' देश से बहुमूल्य वस्तुओं को लाने के लिए भेजा। हनु ईरान के मार्ग से पनत अर्थात् भारत तक आया। उसका रोचक यात्रावृत्त प्राचीन मिस्रभाषा में उत्कीर्ण है। 18वें वंश के राजा अहमस् ने नब पतिरे अर्थात् नमस्पति सूर्य की उपाधि धारण की। इस वंश का अन्तिम दौर ई.पू. 1400 वर्ष तक व्याप्त रहा जब सम्राट अमन होतथ ने बहुदेववाद को छोड़कर सर्वदेवमय सूर्य की उपासना प्रचलित की तथा यज्ञपरम्परा स्थापित की। सूर्य की स्तुति के भावभीने मंत्र इसी समय लिखे गये जिन्हें पढ़ने में सवितृसूक्त जैसा ही आनन्द मिलता है-हे जीवनदाता सूर्य! तुम्हारा सान्ध्यकाल कितना सुन्दर है। जब तुम अस्ताचल का संस्पर्श करते हो तो संपूर्ण चराचर जगत् तुम्हारा रूप देखकर उस परमेश्वर की वंदना करता है, जिसने उसे सिरजा है-

नत्रुइ सुनइन त्याउआसा ससु
पुआ औ आरफ हरुपन श्वन्तत पुऊन।
अरि बुनफर अरुअन् आंखियु
ववु वातु आबु बस अस आन् सुतन
ओम ओषान रपिन्तु आतन्।। डिक्री ऑफ अनोपस, 1904

सम्राट अमन होतप ने 'अखनतन' (सूर्यप्रकाश) उपाधि धारण की तथा कर्नाक में अतन देवता (सूर्य) का विशाल मंदिर बनवाया।

ई.पू. 1100 वर्ष में मिस्र का सम्राट था हरिहर जो सम्राट रामससु (त्रयोदश) का अन्तरंग था। सस का अर्थ है चन्द्र। वस्तुतः यह 'शशि' शब्द का ही मिस्र भाषान्तर है। इस प्रकार रामशशी का अर्थ है रामचन्द्र। मिस्र की शासन परम्परा में रामचन्द्र नामक तेरह सम्राट हुए जिनमें प्रथम रामचन्द्र का समय ई.पू. 1400 वर्ष माना जाता है। इसने 'रमापति' की उपाधि धारण की थी।

The splendour that was egypt नामक ग्रन्थ में सम्राट रामससु तृतीय को हल जोतते हुए चित्रित किया गया है। रामचन्द्र की ही तरह सम्राट दशरथ के कथानक मिस्र के तेल-अल-अमर्णा (सम्राट् अखनतन की प्राचीन राजधानी) नगर तथा तुर्की के बोगाज कोई से प्राप्त दस्तावेजों में उपलब्ध हैं। 1400 वर्ष ई. पूर्व में मितानी सम्राट दशरथ एवं मिस्र के शासक अमनहोतप तृतीय के बीच हुआ पत्र व्यवहार मिस्र पर भारतीय एतिह्य के प्रत्यक्ष प्रभाव का साक्षी है।

उपर्युक्त विवरण आपाततः अनपेक्षित भले प्रतीत होता हो, परन्तु इसे उद्धृत करने का मेरा एकमात्र उद्देश्य यही है कि ई. पूर्व 1400 से 1100 वर्ष के बीच मिस्र में तेरह रामचन्द्र राज्यासीन हुए। इतना ही नहीं प्रत्युत मध्य एशिया के आर्यवंशीय मितानी राजवंश में भी सम्राट दशरथ हुए। इसका सुस्पष्ट निर्गलितार्थ यही है कि ईसा के प्रायः डेढ़ हजार वर्ष पूर्व ही रामकथा मिस्र के जन-मानस में व्याप्त हो चुकी थी। रामचन्द्र नाम की इस लोकप्रियता से यह भी ध्वनित होता है कि भारतभूमि में अवतीर्ण मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का प्रजाराधक पावन चरित संपूर्ण पश्चिम एवं मध्य एशिया में स्पृहणीय बन गया था।

रामकथा की व्यापकता का यह था पश्चिमी छोर। सुदूर पूर्व में श्री रामकथा ईसा की प्रारम्भिक शतियों में ही प्रतिष्ठित हुई। बृहत्तर भारत-विषयक विस्तृत जानकारी हमें मुख्यतः चार स्रोतों से प्राप्त होती है-भारतीय, चीनी, यूनानी तथा अरबी स्रोत। पुराणवाङ्मय, रामायण-महाभारत, बृहत्कथा के परवर्ती संस्करण, महावंश, लंकावतार तथा वसुदेवहिण्डि जैसे ग्रन्थों में प्रशान्त महासागरीय द्वीपों का रोचक विवरण प्राप्त होता है। इसी प्रकार चीन के मिंगवंशीय इतिहास में तथा टालमी, प्लिनी (Periplus of the Erithrian Sea) एवं सम्राट क्लाडियस (41-54 ई.पू.) के समकालीन इतिहासकार पाम्पिनस दि मेला आदि के भी क्रिसे (Cnrise या सुवर्णद्वीप) सम्बन्धी विवरणों में प्रभूत सामग्री मिलती है। महाराज भोज के शासनकाल में भारत आये अरबी यात्री अलबरूनी तथा याकूत, हरकी, सीराजी एवं सहरयार ने भी 'जाबुज' (श्री विजय) के विषय में भरपूर लिखा है।

चम्पा (वर्तमान वियतनाम) में सम्राट श्रीमार ने, फूनान तथा कम्बुज में कौण्डिन्य प्रथम ने तथा यवद्वीप (जावा) में सम्राट पूर्णवर्मा ने ईसा की प्रारम्भिक शती में ही भारतीय उपनिवेश की स्थापना की, यह एक प्रामाणिक तथ्य है। ये भारतीय उपनिवेश चाहे शैवमत के पोषक रहे हों, चाहे वैष्णव मत के या फिर सौगतमत के हों! रामकथा इन सबकी मूल आधारशिला थी। जावा तथा वाली द्वीप की रामकथा रामायण ककविन् मलेशिया (कटाह द्वीप) की रामकथा 'हिकायत महाराज राम', थाईलैण्ड की रामकथा 'रामकियेन' लोओस की रामकथा 'फों लोंक-फों लोम' (प्रिय लक्ष्मण-प्रिय राम) तथा सिंहलद्वीप की रामकथा 'रामकेत्ति' की कालजयी सर्जना ने उन राष्ट्रों की शासनसत्ता एवं संस्कृति को एक ऐसा सम्बल प्रदान किया जो तब से लेकर आज तक अक्षुण्ण है।

सुखोदय तथा द्वारावती के अनन्तर जिस 'अयोध्या' नामक साम्राज्य की स्थापना दक्षिणी स्याम में हुई थी वह आज भी थाई राजतन्त्र के रूप में अपनी गरिमा को अक्षत बनाये हैं। 'अयुध्या' के प्रति थाईवासियों की आज भी अपार आस्था एवं श्रद्धा है। थाईनरेश आज भी स्वयं को 'राम' कहने में गौरव का अनुभव करते हैं। इस प्रकार 'रामायणसंस्कृति'थाई राष्ट्रीय परिवेश में सर्वथा जीवन्त है।

यवद्वीप में महाकवि योगीश्वर ने रामायण ककविन् की रचना मतरामवंशी नरेश वतुकुर बिलतुंग के शासनकाल में नवी शती ई. के अंतिम चरण में की। इस विलक्षण कृति में 26 सर्ग तथा 2778 श्लोक कविभाषा में लिखे गये हैं। कविभाषा स्थानीय मलय एवं संस्कृत का सम्मिश्रण है। कवि योगीश्वर ने मालिनी, उपजाति, स्रग्धरा, सुवदना, वसन्ततिलका आदि संस्कृत छन्दों का ही प्रयोग किया है तथा पदे-पदे प्रकरण वक्रताओं का समावेश किया है, जो निश्चय ही मनोमुग्धकारी है।

रामायणककविन् में वर्णित रामकथा का ही शिल्पाङ्कन मध्यजावा के जगत्प्रसिद्ध बौद्ध स्तूप चण्डी बोरोबुडर तथा प्राम्बनान के त्रिदेव मन्दिरों की दीवारों पर किया गया है। प्राम्बनान के शिव मन्दिर की भित्तियों पर 42 फलकों पर रामकथा की प्रारम्भ से सागरातिक्रमण तक की घटनाएँ महाशिल्पी गुणधर्म द्वारा महाराज दक्षोत्तम (903-18 ई.) के संरक्षण में उत्कीर्ण की गयी। बोरोबुडुर का रामकथाङ्कन (780 ई.) मुख्यतः दशरथजातक के आधार पर किया गया है। मजपहितवंशी चक्रवर्ती घावानरेश राजसनगर (1350-89 ई.) ने भी पूर्वी जावा में निर्मित पन्तरण अथवा पलह के शिव मन्दिर (शिलान्यस1346 ई.) की दीवारों पर एक बार पुनः रामकथा का अंकन कराया। दुर्भाग्यवश इस महान देवालय की कुछ ही दीवारें अब शेष बची हैं, जिनमें लंका स्थित हनुमान तथा कुम्भकर्ण के कुछ रूप उत्कीर्ण हैं।

लाओस की रामकथा 'फा लोंक-फा लाम' (प्रिय लक्ष्मण-प्रिय राम) के भी दो रूप हैं-वाङ्मय रूप तथा शिल्पाङ्कित रूप। सारी रामकथा को लाओस के प्राचीन महल की दीवारों पर उत्कीर्ण कर दिया गया है। इसी प्रकार कटाहद्वीप (वर्तमान मलेशिया) तथा कम्बुज में भी रामकथा का भरपूर प्रचार प्रसार है।

बालीद्वीप वासी आज भी विश्वास करते हैं कि उनके द्वीप का नामकरण वानरराज बाली के नाम पर आधारित है, जो त्रेतायुग में देवराज इन्द्र के अंश से उत्पन्न हुआ था। सुग्रीव से बैर होने पर बाली इन प्रशान्त महासागरीय द्वीपों में उसे खोजता फिरा था। उसके बल का प्रमाण नहीं था, वह पर्वतशिखरों को हवा में उछाल कर उन्हें हथेली पर थाम लेता था। बाली सूर्योदय से पूर्व के दक्षिण समुद्र से उत्तर तक तथा पूर्वी समुद्र से पश्चिम तक घूम आता था। यह बड़े आश्चर्य का विषय है कि समूचे इण्डोनेशियाई द्वीपों में (संख्या 13677) मात्र बाली में ही भयावह आकृति के असंख्य वानर हैं। बालर प्रान्त के शासन द्वारा संरक्षित सांगेह आदि 'वानरवनों' (Monkey Forests) को देखने के लिए पर्यटकों की भारी भीड़ प्रतिदिन जमा होती है।

मध्य जावा के प्राचीन नगर योग्यकर्ता से प्रायः सत्रह किमी. दूर पूर्व-दक्षिण दिशा में 'किष्किन्धा' (Kiskindha Cave) है जो चूने के सफेद पत्थरों (Lime stones) से भरी हुई है।

वस्तुतः सुदूर पूर्व स्थित ये समस्त द्वीप रामकथामय हैं। रामकथा इन द्वीपों में काव्य, नाट्यप्रस्तुति (वायांग) स्थापत्य, आलेख्य Architecture and Painting वस्त्राभूषण (वाटिक आदि) तथा काष्ठ-कला के रूप में आज भी भारत से भी कहीं अधिक जीवन्त तथा प्रभावी है। वर्तमान इण्डोनेशिया यद्यपि मुस्लिम मतानुयायी है-तथापि उसने अपनी प्राचीन रामायण-महाभारत-संस्कृति को जीवित रखा है। रामकथा का मंचन उनका राष्ट्रीय पर्व है। शासन की ओर से प्रतिवर्ष निश्चित कार्यक्रमानुसार यह रामलीला प्राम्बनान के शिवमन्दिर-प्रागंण में तथा सोलोनगर में निरन्तर दो महीने अभिनीत की जाती है। इस्लामी प्रत्यभिज्ञान के बावजूद भी, इण्डोनेशियावासियों को अपने अतीत 'हिन्दुत्व' का अभिमान है और वे बड़ी निष्ठा के साथ कहते भी हैं- We have changed our caps, but not our hearts (हमने अपनी टोपियाँ भर बदली हैं, हृदय नहीं) रामकथा में उल्लिखित पात्र, स्थान, नदी, पर्वत एवं अन्यान्य उपादान तो सम्पूर्ण बृहत्तर भारत क्षेत्र में आज भी उपलब्ध हैं। सरयू, अयोध्या, किष्किन्धा, सीता, राम आदि उनके जनजीवन में व्याप्त हैं।

रामकथा की व्यापकता के उपर्युक्त प्रमाण किसी-न-किसी रूप में आज भी सुरक्षित है, फलतः उन्हें अनदेखा नहीं किया जा सकता। परन्तु यदि हम प्रकीर्ण अथवा गौण स्रोतों को भी रामकथा की व्यापकता का प्रमाण माने तो निस्संदेह हमें मंगोलिया तथा अनेक यूरोपीय राष्ट्रों में भी रामायण-संस्कृति का वर्चस्व स्वीकार करना पड़ेगा। ब्रह्मलीन स्वामी करपात्री-प्रणीत रामायण मीमांसा तथा फादर कामिल बुल्के के शोधप्रबन्ध 'रामकथा' में इस आशय के

पुष्कल प्रमाण संकलित हैं। प्रस्तुत आलेख में मैं पुनरावृत्ति-भय से मात्र नवीन तथ्यों की ही समीक्षा कर रहा हूँ।

इस आलेख का दूसरा पक्ष है-राम कथा की विविधता, इस विविधता के दो प्रमुख कारण हैं-धार्मिक (साम्प्रदायिक) एवं साहित्यिक। रामकथा का उद्गमबिन्दु है-प्राचेतस महर्षि वाल्मीकि-प्रणीत पौलस्त्यवध काव्य, जिसे संसार 'वाल्मीकीय रामायण' के रूप में जानता है। महर्षि वाल्मीकि सनातन वैदिक आर्यधर्म के व्यवस्थापक एवं समर्थक हैं। वैदिक धर्म की अपनी विशिष्ट मान्यताएँ तथा आस्थाएँ हैं। परन्तु कालान्तर में विकसित बौद्ध एवं जैनमत, वैदिक धर्म के विसंवादी बनकर प्रतिष्ठित हुए। इन मतों की अपनी विशिष्ट मान्यताएँ थीं। लोक, परलोक, जीवन-मृत्यु, बन्धन-मुक्ति, ईश्वर-जीव, अवतार, तत्त्वमीमांसा तथा आचरण-संहिता, सामाजिक व्यवस्था आदि के विषय में ये मत, वैदिक धर्म से उत्तरोत्तर पृथक होते गये। फलतः राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं साहित्यिक स्तर पर इन तीनों मतों का त्रिकोण-संघर्ष गौतम बुद्ध एवं भगवान महावीर के युग से राजपूत युग तक चलता रहा।

रामकथा भी इस संघर्ष से प्रभावित हुई। उपर्युक्त धार्मिक मतभेद के ही कारण तथागतोत्तर रामकथा तीन रूपों में अग्रसर हुई-वैदिक परम्परासम्मत, बौद्धपरम्परा-सम्मत तथा आर्हतपरम्परा- सम्मत। यदि वाल्मीकि रामायण की रामकथा 'प्रकृति' थी तो अन्य दो परम्पराओं की रामकथायें उसकी 'विकृति' थी। वैदिक परम्परा के राम साक्षात् परमेश्वरावतार हैं, मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। उनके लोकोत्तर चरित में विसंगतियों का प्रतिभास भले हो, परन्तु पारमार्थिक स्तर पर वह पूर्ण संगत है। उनका प्रत्येक आचरण मर्यादा के विषय पर खरा उतरता है।

वाल्मीकि रामायण के अतिरिक्त अध्यात्मरामायण, योगवासिष्ठ, भुशुण्डिरामायण, पुराण एवं महाभारत वर्णित रामकथाएँ, रघुवंश-रामचरित-जानकीहरण-सेतुबंध-भट्टिकाव्य (रावणवध) सीताचरित-जानकीजीवन-सीताराम विहार-काव्य आदि संस्कृत महाकाव्य वैदिकपरंपरा की रामकथा का अनुमोदन करते हैं। इसी प्रकार अभिषेक नाटक, प्रतिमानाटक (भासप्रणीत), महावीरचरित-उत्तररामचरित (भवभूति), अनर्घराघव (मुरारि) बालरामायण (राजशेखर), कुन्दमाला (दिङनाग), प्रसन्नराघव (जयदेव), आश्चर्यचूड़ामणि (शक्तिभद्र), अद्भुतदर्पण (महादेव) आदि संस्कृत नाटक, भोज-प्रणीत रामायण चम्पू क्षेमेन्द्रप्रणीत रामायण मंजरी तथा अनेक रामकथापरक लघुकाव्य (रामभद्रदीक्षित आदि की कृतियाँ) उपर्युक्त परम्परा का ही समर्थन करती है। ये सभी कृतियाँ छोटे-मोटे परिवर्तनों के साथ वाल्मीकि सम्मत रामकथा को ही पल्लवित करती हैं।

सौगत एवं आर्हत परम्परा के राम 'परमेश्वरावतार' नहीं है। इन मतों में जब ईश्वर की ही प्रतिष्ठा थी, तो फिर 'ईश्वरावतार' होने का प्रश्न ही कहाँ? इतना ही नहीं, बौद्ध एवं जैन परम्परा के राम 'मर्यादा पुरुषोत्तम' भी नहीं हैं। इन मतों से उनका 'चरित' भी संगत नहीं दिखता। वैदिक परम्परा के एकपत्नी व्रतधारी राम को इन परम्पराओं ने हजारों रमणियों के भोग में आसक्त प्रदर्शित किया। इन परम्पराओं के राम सती-साध्वी, अग्निपरीक्षिता तथा गर्भवती निर्दोष पत्नी को निर्वासित करते हैं (भद्रबाहुप्रणीत आदिपुराण) निर्दोष शम्बूक (मूलतः शूर्पणखा/चन्द्रनखा का पति विद्युज्जिह्व) का वध करते हैं।

आखिर यह सब क्यों हुआ? इस प्रश्न का समाधान मैंने अपने अनेक शोधनिबन्धों तथा संस्कृत महाकाव्य 'जानकीजीवनम्' में प्रस्तुत किया है। परन्तु प्रस्तुत शोध सत्र में समधिक चिन्तन का दायित्व विद्वान सहृदयों को सौंपकर मैं आगे बढ़ता हूँ। इस परम्परा की प्रमुख कृतियाँ हैं-भद्रबाहुप्रणीत आदिपुराण, रविषेणप्रणीत पद्मचरित, स्वयंभूषणीत पउमचरिउ तथा दशरथजातकादि कुछ जातक-कथाएँ। ये सभी कृतियाँ मूल रामकथा की 'विकृति' मात्र प्रस्तुत करती हैं।

रामकथा के नायक सर्वानुग्रही राम के प्रति उपर्युक्त परम्पराओं की दृष्टिभिन्नता के ही कारण रामकथा में 'विविधता' आई। फलतः एक ही प्रकरण (उदा. राम के वनवास का कारण) के सैंकड़ों 'विवर्त' जनमानस में प्रचलित हो गये। आज भी भारत की सामान्य जनता इस विषय में सर्वथा उद्भ्रान्त एवं द्वैधग्रस्त है की 'वास्तविक रामकथा का स्वरूप क्या है?'

जैसा कि मैंने प्रारम्भ में ही संकेतित किया है प्रशान्त महासागरीय द्वीपों में स्थापित भारतीय उपनिवेश भी या तो वैदिक धर्म के अनुयायी रहे हैं या फिर सौगतमत के! ईसापूर्व द्वितीय शती में वैदिक धर्म प्रतिष्ठापरक सेनापति पुष्यमित्र शुंग के आतंक से भयभीत बौद्धों ने जब भारत से बाहर पलायन किया तो रामकथा उनके साथ सिंहलद्वीप (लंका), सुवर्णभूमि (म्यान्मार, वर्मा), लाओस तथा तिब्बत-चीन एवं मंगोलिया आदि भूभागों में पहुँची। इन द्वीपों की रामकथाएँ भी सर्वथा 'वैरूप्य' ही प्रदर्शित करती हैं।

लाओस की रामकथा में एक सन्दर्भ है : सीतान्वेषण में थके-हारे राम एवं लक्ष्मण ने एक पेड़ में फलों को देख भूख मिटानी चाही। उस पेड़ में दो शाखाएं थी जिनमें एक शाखा का प्रभाव यह था कि उस पर आया कोई भी प्राणी वानर बन जाता था। रहस्य से अनजान भूखे श्रीराम दुर्भाग्यवश उसी शाखा पर चढ़े और तत्काल वानर बन गये। शाखा पर पहले से ही एक वानरी रहती थी, जो वस्तुतः एक विद्याधरी थी। अपनी माता का जारकर्म पिता से बता देने के कारण उसकी माँ ने क्रोधावेश में उसे वानरी बन जाने का शाप दे दिया था।

इधर कुमार लक्ष्मण राम को वानर बना देख विलाप कर रहे थे। तभी किसी साधु ने उन्हें बताया कि वृक्ष की दूसरी शाखा पर आने से प्राणी अपने मूल रूप में आ सकता हैं लक्ष्मण नाना उपायों से वानर रूपधारी भाई को दूसरी शाखा पर आने के लिए ललचाने लगे। उनकी युक्ति सफल हुई। शाखा पर आते ही राम वानर-रूप त्याग कर अपने प्राकृत रूप में आ गये।

दोनों भाई पुनः व्यथित मन से सीता को खोजने आगे बढ़े।

थाईलैण्ड की रामकथा (रामकियेन) की एक ऐसी ही विचित्र घटना देखे : रावण द्वारा प्रेषित एक राक्षस कन्या बैंजकेयी मृत सीता की शवाकृति को नदी में प्रवाहित कर देती है। स्नानार्थ आए राम सीता का प्रछन्न शव देखते हैं और विलाप करने लगते हैं। लक्ष्मण भी रोते हैं। उन दोनों को खोजते सुग्रीव तथा हनुमान भी वहीं आते हैं। हनुमान को सीता के मरने का विश्वास हो जाता है। अतः चिता प्रज्ज्वलित कर वह सीता का शव उस पर रखते हैं। तभी बैंजकेयी चीखती हुई आकाश में उड़ जाती है, परन्तु हनुमान छलांग लगाकर उसे पृथ्वी पर घसीट लाते हैं। विभीषण राम को बताते हैं कि उन्हें प्रवंचित करने वाली बेंजकेयी मेरी ही कन्या हैं परन्तु वह वध योग्य है। राम उसे 'मित्रकन्या' होने के कारण मारते नहीं बल्कि हनुमान के साथ लंका भेज देते हैं। बाद में हनुमान तथा बेंजकेयी का विवाह हो जाता है फलतः हनुमान के पुत्र असुरफद् का जन्म होता है, जो लंका में ही पाला-पोसा जाता है।

असुरफद् की यह जन्मकथा मकरध्वज की ही कथा है, जो भारतीय रामकथा-ग्रन्थों में वर्णित है। ऐसी ही अनेक चित्र-विचित्र अन्य कथाएँ थाई कथा में विद्यमान हैं।

रामकथा की वैदिक तथा अवैदिक परम्परा का अन्तर एक ही सन्दर्भ से समझ में आ जाता है। वाल्मीकि की त्रिजटा सीता के प्रति वात्सल्यभाव रखने वाली एक वृद्धा राक्षसी हैं परन्तु वाल्मीकि के ही अनुयायी यवद्वीपीय महाकवि योगीश्वर त्रिजटा को यौवनसम्पन्न विभीषण की परम सुन्दरी कन्या के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जो छाया की तरह वैदेही के सुख-दुःख में साथ निभाती है। वृद्धा की अपेक्षा एक समवयस्क युवती देवी सीता की व्यथा को अच्छी तरह समझ सकती थी। इस तथ्य के आलोक में योगीश्वर की परिकल्पना की सार्थकता समझी जा सकती है। परन्तु इसके विपरीत अवैदिक थाई रामकथा की त्रिजटा अथवा बैंजकेयी विभीषण की पुत्री होते हुए भी पिता की इच्छा के विरुद्ध राम के विरुद्ध कार्य करती हैं। यह सब मूलकथा की विपरीत मानसिकता की ही उपज है।

इस प्रकार वैदिक, सौगत तथा आर्हत परम्पराएं रामकथा को विविधता प्रदान करती हैं। परन्तु इस विविधता का एक और विध्यात्मक पक्ष (Positive Approach) है। यह पक्ष विशुद्ध रूप से 'साहित्यिक' है तथा इसका उद्देश्य है काव्यात्मक चाकचिक्य (Poetic Grandeur) की सृष्टि करना। आचार्य कुन्तकी इसी को 'प्रकरणवक्रता' कहते हैं। जब कोई प्रतिभाशाली कवि मात्र सहज रसोद्रेक, चमत्कार की सृष्टि एवं प्रतिभोन्मेष को दृष्टि में रखकर मूलकथा के 'प्रकरण-विशेष' को परिवर्तित कर देता है, तो उसे 'प्रकरणवक्रता' कहते हैं।

इस प्रकरणवक्रता ने भी रामकथा को अनन्त विविधताओं से श्रीमण्डित किया है। महाकवि राजशेखर ने 'राम वनवास - प्रकरण' में एक अद्‌भुत परिवर्तन किया है। रावण स्वयंवर-क्षण से ही सीता को पाने की कामना रखता था। परन्तु शैव-धनुष न उठा पाने के कारण उसका मनोरथ पूर्ण नहीं हो सका। अब वह सीता का अपहरण करना चाहता है परन्तु यह तो तभी सम्भव था जब राम सीता के साथ वन में आएं। गुप्तचरों से राम के राज्याभिषेक का समाचार पाते ही रावण एक षड्‌यंत्र रचता है। वह अपनी बहन शूर्पणखा को सिखा-पढ़ा कर अयोध्या भेजता है जो मंथरा का रूप धारण कर कैकेयी को पूर्वप्रदत्त दो वरदान प्राप्त करने के लिए उकसाती है। इस प्रकार राम का दण्डकवन आना तथा रावण द्वारा सीता का अपहृत किया जाना संभव हो पाता है।

आचार्य कुन्तक भी एक ऐसा ही रोचक सन्दर्भ देते हैं। मारीच द्वारा श्रीराम की आवाज से 'हा सीते हा लक्ष्मण' क्रन्दन करने पर देवी सीता भर्त्सनापूर्वक लक्ष्मण को राम की रक्षा के लिए भेजती हैं - वाल्मीकि रामायण में ऐसा वर्णन हैं परन्तु उदातराघव नाटक के प्रणेता मायुराज को इस वर्णन में एक बहुत बड़ा अनौचित्य दिखा और वह था-लोकविख्यात महापराक्रमी महाधनुर्धर राम की रक्षा के लिए अपेक्षाकृत सामान्य विक्रम वाले छोटे भाई लक्ष्मण का जाना।

फलतः मायुराज ने प्रकरण ही बदल दिया। मारीचवध के लिए वस्तुतः कुमार लक्ष्मण जाते हैं और क्रियमाण मारीच उन्हीं की ओर से 'हा राम' क्रन्दन करता है। कातर सीता देवर की रक्षा के लिए राम को भेज देती है और उन्हें अकेली पाकर रावण अपहृत कर लेता है।

संस्कृत नाटककारों ने इसी 'प्रकरणवक्रता' का आश्रय लेकर रामकथा को विविधता के कंचुक से भूषित कर दिया है। यह उनकी कवित्व-प्रतिभा का पारिपाक ही है जिसकी भूरि- भूरि प्रशंसा स्वयं ध्वनिकार आचार्य आनन्दवर्धन ने भी की है।

रामकथा की विविधता का एक तीसरा भी कारण है, जिसकी चर्चा मैं अब कर रहा हूँ। भारत एक विशाल राष्ट्र है, जिसमें वेद-वेदांग एवं पुराण वाङ्मय के अनन्तर रामायण एवं महाभारत की प्रतिष्ठा 'आर्षकाव्य' के रूप में हुई है। इन आर्षकाव्यों का प्रणयन संस्कृत भाषा में हुआ हैं परन्तु संस्कृत के ही समानान्तर पालि-प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषाएं भी सामाजिक परिवेश में प्रचलित रही हैं, जो कालान्तर में आधुनिक प्रान्तीय भाषाओं के रूप में विकसित हुई हैं। तमिल, मलयालम, कन्नड़ तथा तेलुगु के अतिरिक्त मराठी, गुजराती, कोङ्कर्ण, राजस्थानी, डोगरी, काश्मीरी, हिन्दी, बांग्ला, असमिया, नेपाली, मैथिली, मणिपुरी उड़िया आदि अत्यन्त समृद्ध प्रान्तीय भाषाएं भारत में हैं। हिन्दी की भी कितनी ही बोलियां हैं-भोजपुरी, अवधी, ब्रजभाषा, बुन्देली, बदेली, छत्तीसगढ़ी, हरियाणवी आदि। इन सारी प्रान्तीय भाषाओं तथा बोलियों में भी रामकथापरक ग्रन्थों की भरमार है। इन जनकवियों ने भी विविध भावभंगिमा के साथ राम कथा कही है, जिसे गिना पाना सम्भव नहीं है।

लोकगीतों की रामकथा तो भावसंवेदना की दृष्टि से विलक्षण ही है। वनवासी राम के लिए माता कौशल्या की वेदना, निर्वासिता सीता का स्वाभिमान, दशरथ की पुत्रवियोग की पीड़ा तथा राम एवं सीता के प्रति कैकेयी का मरणान्तक ईर्ष्या-द्वेष का भाव इन प्रसंगों का जैसा निर्झर वर्णन अवधी लोकगीतों (Folk Songs) में मिलता है, उसकी तुलना में वाल्मीकि रामायण के वे ही संदर्भ नीरस एवं महत्वहीन प्रतीत होते हैं। वस्तुतः इसका कारण है लोकगीतकारों की उदग्र कवित्व प्रतिभा! आचार्य आनन्दवर्धन ने ठीक ही कहा है-

'न काव्यार्थविरामोऽस्ति यदि स्यात्प्रतिभागुणः'।

लेखक- पद्मश्री प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र
पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

रामायणकालीन भूगोल एवं राजनीति

अरुण कुमार उपाध्याय
पूर्व आई.पी.एस. एवं प्रख्यात प्राच्यविद्, भुवनेश्वर।

1. रामायण के ऐतिहासिक स्थल-इन स्थलों तथा रावण के साथ के युद्ध स्थलों के विषय में बहुत से भ्रम हैं। नासिक या कर्नाटक के किष्किन्धा विषय में बहुत प्रचार होने से वहां कई तीर्थ स्थान बन गए हैं और लोगों की श्रद्धा हो गई है।

(1) काशी राज्य-श्रीराम के काल में काशी राज्य या नगर का कोई विवरण नहीं मिलता है। काशी के राजा दिवोदास तथा सुदास बहुत पूर्व से थे जिनका उल्लेख ऋग्वेद तथा कई पुराणों में तथा सुश्रुत संहिता में है। सम्भवतः काशी क्षेत्र के अंश उस समय अयोध्या मिथिला के अंश थे। बक्सर या विश्वामित्र का सिद्धाश्रम निश्चित रूप से काशी राज्य में था, पर उसकी समस्या के लिए विश्वामित्र अयोध्या राजा के पास गये थे।

(2) विश्वामित्र आश्रम से ही रावण के विरुद्ध संघर्ष आरम्भ हो गया था, जिसकी पूर्णता रावण के विरुद्ध प्रत्यक्ष युद्ध से हुई। सिद्धाश्रम तथा दण्डकारण्य में रावण की सेनायें प्रत्यक्ष युद्ध नहीं कर रही थीं। वर्तमान पाकिस्तान के आतंकवाद की तरह छद्म युद्ध था। इसके विरुद्ध बक्सर या दण्डकारण्य में अपने ही क्षेत्र में सैनिक आक्रमण नहीं हो सकता था। इसके लिए 14 वर्ष तक वनों में घूम घूम कर देश के भीतर की असुर शक्तियों को समाप्त करना था। इसे देवों की योजना कहा गया है जिसके लिए विश्वामित्र, भारद्वाज तथा अगस्त्य ने अस्त्र शस्त्र तथा तन्त्र द्वारा सहायता की।

(3) राम जन्म से पूर्व भी दशरथ का असुरों से युद्ध हो चुका था, जिसमें कैकेयी भी गयी थी। यह शम्बर के साथ हुआ था जो वर्तमान शबर क्षेत्र दक्षिण उड़ीसा का कोरापुट, गजपति जिला, आन्ध्र प्रदेश का श्रीकाकुलम, विजयनगर आदि थे। उससे बहुत पूर्व सहस्रार्जुन से भी रावण का युद्ध हुआ था। यहां रावण कोई एक व्यक्ति का नाम नहीं था, बल्कि लंका राजा की सम्मान सूचक उपाधि थी। सम्मान के लिए काशी क्षेत्र में रवा (आप) कहते हैं, दक्षिण भारत में राव उपाधि है। जिस मनुष्य में यज्ञ रूपी वृषभ रव कर रहा है, वह रवा या राव है। रावण तथा पुरुरवा की व्युत्पत्ति भी यही कही गई है। तमिल में राव को रावण कहते हैं, जैसे रामन, कृष्णन आदि हैं।

(4) शबर क्षेत्र के निकट ही किष्किन्धा का उत्तर भाग था जिस पर बाली का प्रभुत्व था। शबर प्रभुत्व की निकटता के कारण बाली को रावण से मित्रता करनी पड़ी। रावण को समाप्त करने के लिए बाली को समाप्त कर उसके प्रतिद्वन्द्वी सुग्रीव को राजा बनाना आवश्यक था। बाली के व्यक्तिगत चरित्र का विशेष महत्व नहीं है।

(5) बाली को जहां श्रीराम ने मारा था वहां पर साल के 7 पेड़ थे। इन पेड़ों को राम ने एक बाण से काटा था। सामान्यतः उत्तर भारत में हिमालय की तराई में साल वन का क्षेत्र है। किन्तु मिट्टी के उपयोगी

खनिज तथा अधिक वर्षा के कारण साल वन का क्षेत्र गोरखपुर, सारनाथ, रोहतास, पलामू, सिंहभूमि, सुन्दरगढ़, सम्बलपुर, कालाहाण्डी होते हुए कोरापुट तक चला गया है। उत्तर भारत में साल तथा दक्षिण भारत में टीक को शक (बड़ा कुश, या स्तम्भ आकार का) वृक्ष कहा गया है। अतः साल को शक या सखुआ, टीक को शकवन या सागवान भी कहते हैं। साल वृक्ष का सबसे दक्षिण का स्थान कोरापुट का मैथिली थाना है, जहां मैथिली सीता जी का निवास था। उसके पूर्व बालिमेला थाना भी साल क्षेत्र में है, जहाँ लोकोक्ति के अनुसार बाली मरा था। उड़िया में 'बाली मला' = बाली मरा। उसके दक्षिण में साल वन नहीं है तथा अब तक के शोध अनुसार प्राचीन काल में भी नहीं था। अतः बाली का स्थान इससे दक्षिण सम्भव नहीं है।

(6) उत्तर किष्किन्धा में कोरापुट के उत्तर में कन्धमाल जिला है वह किष्किन्धा की उत्तर सीमा थी। वहां के निवासी कन्ध हैं तथा उसके ऊंचे स्थान को मेघदूत में भी माल कहा गया है। दक्षिण भारत में 'माल' का 'मलै' हो गया है- अन्नामलै, मलयालम। पर्वतीय स्थानों के मुख्य मार्ग को अंग्रेजी में माल रोड कहते हैं। कन्ध भाषा में तथा उड़िया में लांज का अर्थ लंगोटा तथा वानर की पूंछ भी है। एक लांजिगढ़ थाना भी है, जहाँ के वीरदेव रानी दुर्गावती के पति थे।

(7) आजकल कन्धमाल के पर्वतों को ही महेंद्र पर्वत कहते हैं। धनुष यज्ञ के बाद परशुराम इसी महेंद्र पर्वत पर आये थे जहां सुमेधा ऋषि ने उनको दीक्षा दी थी। उनकी शिक्षा त्रिपुरा रहस्य तथा चण्डी पाठ में है। इनको बौद्ध लोग सुमेधा बुद्ध कहते थे तथा 10 महाविद्या का नाम 10 प्रज्ञा-पारमिता कर दिया है। कालिदास ने भी रघु-दिग्विजय प्रसंग में कलिंग राजा को ही महेंद्र राज कहा है। रामायण काल में भारत के पूर्वी तट के पर्वतों को महेंद्र पर्वत कहा है, जहां से हनुमान ने लंका के लिए प्रस्थान किया था। यह सम्भवतः वर्तमान तिरुपति तक था जिसके दक्षिण का समुद्र तट 'समुद्र' राज्य था। अलाउद्दीन खिलजी ने जब मदुरा पर आक्रमण किया था तब इसे 'द्वार-समुद्र' कहा गया है। राम ने यहीं के राज्य से मार्ग देने का अनुरोध किया था, जड़ समुद्र से नहीं।

(8) दक्षिण भारत में वर्षा के अनुसार तीन क्षेत्र हैं-पश्चिम घाट की ऊंची पहाड़ियों के पश्चिम के भाग में भारी वर्षा होती है। उसके पूर्व मध्य भाग वर्षा छाया भाग है जिसमें विदर्भ (जहां कम दर्भ हो), तेलंगाना, पूर्व महाराष्ट्र, मध्य कर्णाटक आदि हैं। पूर्व तट में महेंद्र पर्वत के विस्तृत मैदान भाग में कृषि क्षेत्र है, जिसके कृषकों को वेद में रेलिह तथा आजकल रेड्डी कहते हैं (ऋग्वेद, 10/114/4)। नासिक तथा कर्नाटक का प्रचलित किष्किन्धा इस मार्ग में थे ही नहीं। भगवान राम के भी वहां जाने का कोई कारण नहीं था। केवल नासिक नाम से उसका मूल शूर्पणखा के नाक कटने से मान लिया गया है तथा पञ्चवटी आदि स्थान भी बन गए हैं।

(9) दक्षिण कोरापुट में दण्डकारण्य है। मैथिली थाना के दक्षिण में माल्यवान पर्वत था जिसे अभी मलकानगिरि कहते हैं। अभी मलकानगिरि अलग जिला है। मैथिली थाना के पूर्व बोण्डा पर्वत पर सीता झरना है। वहाँ स्थानीय स्त्रियों ने उन पर व्यंग्य किये। सीता झरना वहां के रामगिरि पर्वत के पास शबरी-सिलेरू नदी में मिलती हैं, जो गोदावरी की सहायक हैं। रामगिरि पर्वत की गुफा में गुप्तेश्वर शिवलिंग है जहां प्रतिवर्ष मेला लगता है। सीता जी के स्नान करने की घटना का उल्लेख मेघदूत के आरम्भ में है-तस्मिन्नद्रौ जनकतनया स्नान पुण्योदकेषु। श्री वासुदेव मीरासी ने इस रामगिरि को नागपुर का रामटेक सिद्ध करने की चेष्टा की थी। इस मिथ्या अभियान का प्रचार कर 4 व्यक्ति संस्कृत विश्वविद्यालयों के कुलपति भी बन गए। मीरासी जी या कोई कुलपति कितने भी विद्वान् हों, मानसून वर्षा का आरम्भ नागपुर से नहीं होगा। वह वर्षा-छाया या बिना दर्भ का विदर्भ ही रहेगा। इसके विपरीत केवल कृषि क्षेत्र दर्भङ्गा है, जहां राजा भी अनुष्ठान रूप में हल चलाते थे।

इसके चारों तरफ अरण्य क्षेत्र हैं-सारण, चम्पारण, आरण्य (आरा), कीकट (मगध), पूर्ण अरण्य (पूर्णिया)।

(10) माल्यवान गिरि या उसके कुछ दक्षिण पूर्व समुद्र तट के पर्वत ही प्रवर्षण गिरि हो सकते हैं। आजकल यह किसी पर्वत का नाम नहीं है, किन्तु यह कर्नाटक के किष्किन्धा में सम्भव नहीं है। यह मैथिली-रामगिरि से आरम्भ कर गोदावरी-सागर संगम के बीच ही हो सकता है।

(11) प्रवर्षण गिरि के निकट ही विभिन्न स्थानों से आयी सेना एकत्र हुई थी। उसके लिए समतल विस्तृत भूमि की आवश्यकता थी जिसमें जल तथा भोजन की सुविधा हो। राजमहेन्द्री के निकट गोदावरी तट पर तथा नदी के भीतर द्वीपों में 100 गाँव लंका नाम के थे जहां लंका पर आक्रमण के लिए सेना एकत्र हुई थी। आज भी 10 ऐसे गाँव हैं। इनके व्यवस्थापक या सेनापतियों की उपाधि भी लंका थी जो आज भी दक्षिण उड़ीसा तथा आन्ध्रप्रदेश के क्षत्रियों की एक प्रचलित उपाधि है। उड़ीसा में लंका को लेंका भी लिख रहे हैं।

(12) लंका नगर मालदीव के निकट था जिस देशान्तर पर उज्जैन है। लंका द्वीप को अभी लक्कादीव या लक्षद्वीप कह रहे हैं। दक्षिण भाग रामायण अनुसार माली द्वीप था, जो अभी मालदीव है। वर्तमान श्रीलंका सिंहल था जो राजनीतिक रूप से लंका का ही भाग था। यह लंका राजधानी थी, पूरा राज्य नहीं था। स्वर्ण भूमि आस्ट्रेलिया थी, जो दिव्यास्त्रों से जल गया। माली, सुमाली के राज्य आज भी अफ्रीका में हैं-पश्चिम अफ्रीका का माली, मिस्र के पूर्व का सोमालिया। रामायण के अनुसार 18 क्षेत्रों में युद्ध हुआ था, जिनके 18 सेनापतियों का नाम लिखे हैं। इनको रामचरितमानस में 'पदुम अठारह जूथप बन्दर' कहा है। आस्ट्रेलिया तथा मार्ग में इण्डोनेशिया के द्वीपों पर आक्रमण के लिए सिंगापुर सबसे महत्वपूर्ण है, जो मूल श्रृंगवेरपुर है। यह नक्शे में भी श्रृंग या सींग जैसा दीखता है। प्रयाग के निकट श्रृंगवेरपुर का राजा मिलने के लिए आ सकता है, उस स्थान का कोई सामरिक महत्व नहीं है।

2. रामजन्मभूमि-

इसमें केवल शास्त्र ही प्रमाण है। अभी तक ऐसी कोई वैज्ञानिक विधि नहीं निकली है जिससे जीवित व्यक्ति के जन्म स्थान का निर्धारण किया जा सके। जो हजारों वर्ष पहले था, उसका कैसे पता चलेगा? अयोध्या में कहाँ जन्म स्थान था यह कहना कठिन है कि मन्दिर के गुम्बद से 50 मीटर के भीतर जन्म स्थान था या 200 मीटर दूर पर। बुद्धिजीवियों तथा न्यायाधीशों को बाबर के भारतीय होने में कभी सन्देह नहीं हुआ। उनके अनुसार बाबर को अपने माता-पिता या जन्म स्थान का पता नहीं था तथा अपने को उजबेकिस्तान का समझता था।

केवल भारत के बुद्धिजीवियों को सन्देह रहता है कि अयोध्या में राम हुए थे या नहीं। मुस्लिम तथा उससे पूर्व के आक्रमणकारियों को भी पता था कि अयोध्या राम की जन्मभूमि है, अतः अयोध्या में भी केवल रामजन्मभूमि मन्दिर पर ही आक्रमण करते थे, अन्य मन्दिरों पर नहीं।

भगवान् राम ने अपने तथा भाइयों के आठ पुत्रों को आठ स्थानों पर राजा बनाया था, अतः उनके परम धाम जाने पर कुछ समय के लिए अयोध्या सूनी हो गयी। तब कुश ने वहाँ आ कर पुनः राजधानी बनाई।

श्रीहर्ष विक्रमादित्य (श्रीहर्ष शक 456 ईपू) के समय उज्जैन सत्ता का केन्द्र था, किन्तु उनके समकालीन गोविन्द शर्मा ने पतंजलि महाभाष्य के संस्करण में लिखा-अरुणद् यवनो साकेतम् अर्थात् यवनों ने साकेत या अयोध्या को घेरा। उसका एकमात्र महत्व रामजन्मभूमि होना ही है।

उसके बाद संवत् प्रवर्तक विक्रमादित्य ने अयोध्या में रामजन्मभूमि स्थल का पता लगा कर राम मन्दिर बनवाया। इस पर 1050 ई में महमूद गजनवी के भतीजे सालार मसूद ने 11 लाख सेना के साथ आक्रमण कर मन्दिर तोड़ दिया। विजय उत्सव मनाते समय आजमगढ़ के सुहेल राजभर ने अन्य राजाओं के सहयोग से बहराइच में पूरी सेना का सफाया कर दिया तथा मन्दिर का पुनर्निर्माण किया (शिव प्रसाद मिश्र 'रुद्र काशिकेय' द्वारा 'तीसरा नेत्र')।

1527 में बाबर के सेनापति मीर बाकी ने राम मन्दिर ध्वंस किया, जिसका उल्लेख तुलसीदास जी ने किया है। मस्जिद बनाने का केवल इतना ही अर्थ है कि मूर्ति तोड़ दी। ध्वंस को निर्माण मानने से अढ़ाई दिन का झोपड़ा भी बन जाता था।

फिर औरंगजेब ने तोड़ा। अयोध्या में ही बाकी मन्दिर इसलिए छोड़ दिये कि वे रामजन्मभूमि नहीं थे। बाद के विदेशी यात्रियों ने इसे औरंगजेब की बनाई मस्जिद लिखा है, पर नाम बाबरी मस्जिद या राम जन्मभूमि मस्जिद ही रहा।

3. रामायण काल की राजनीति-

रामायण पर हजारों वर्ष से चिन्तन तथा लेखन हो रहा है। कई विवाद भी हैं। एक विवाद है कि कैकेयी ने क्या राम को दण्ड देने के लिए वनवास भेजा था या यह देवताओं की योजना थी। आज की परिस्थिति के अनुसार देखा जाए तो स्पष्ट होता है कि रावण उतना शक्तिशाली नहीं था कि प्रत्यक्ष युद्ध में देवों को हरा सके या भारत पर अधिकार कर सके। इन्द्र से भी वह पराजित हो गया था, पर धोखे से मेघनाद ने उनको बन्दी बना लिया था। असुरों की छल नीति अभी तक चल रही है। शिवाजी ने उनके छल का उचित उत्तर दिया था।

अयोध्या के राजा दशरथ भी इन्द्र की सहायता के लिए असुरों से युद्ध कर चुके थे जिसमें उनके साथ कैकेयी भी गयी थी। रावण ने वही तरीका अपनाया जो आज पाकिस्तान तथा चीन भारत के विरुद्ध कर रहे हैं। उनके घुसपैठिए, समर्थक तथा भाड़े के उपद्रवी भारत में हिंसा करते रहते हैं। उनके विरुद्ध प्रत्यक्ष युद्ध नहीं लड़ा जा सकता है क्योंकि वे समाज में मिले हुए हैं। असुरों की पद्धति सदा से यही रही है। केवल उनके सम्प्रदाय या पन्थ नाम बदलते रहते हैं। अयोध्या-मिथिला की दक्षिण सीमा पर मारीच, ताड़का आदि रावण के उपद्रवी नेता थे। उनके अन्य उपद्रव स्थान थे दण्डकारण्य, पंपासर आदि। विश्वामित्र उनको रोकने के लिए अयोध्या के राजा दशरथ के पास गये तो दशरथ सेना भेजना चाहते थे परन्तु सेना द्वारा बक्सर की जनता पर आक्रमण सम्भव नहीं था। उस समय भी असुर लोग मन्दिर यज्ञशाला आदि तोड़ते थे। अतः विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण को बुलाकर यज्ञशाला का आयोजन किया जिससे असुर मन्दिर तोड़ने के लिए आयें। उस समय विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण को विशेष अस्त्रों की शिक्षा भी दी। वहां से असुरों को भगा कर मिथिला से मैत्री करायी। रावण के विरुद्ध युद्ध उसी समय आरम्भ हो चुका था। देवताओं ने देखा कि यही तरीका है समाज के छिपे हुए असुरों को समाप्त करने का। अतः राम-लक्ष्मण को वनवास दण्ड का नाटक किया गया। पर राजा वही थे, भरत उनके प्रतिनिधि मात्र थे। राजकीय आदेश पर राम की ही मुहर (पादुका) लगती थी। पुराणों में भी दशरथ के बाद राम को ही राजा लिखा है, भरत का नाम इस सूची में नहीं है। रावण को पराजित करने के बाद राम-अभिषेक के समय 300 राजा उपस्थित थे जो रावण के विरुद्ध युद्ध में सहायता कर रहे थे। उत्तर काण्ड की यह कथा नहीं समझने के कारण पूरे काण्ड तथा बालकाण्ड को भी कुछ लोग क्षेपक कहते हैं। यदि राम का न जन्म हुआ, न राजा बने तो रामायण क्यों लिखी गयी? राम ने इसलिए उनको धन्यवाद दिया तथा अपने राज्य लौटने का अनुरोध किया था।

रावण का राज्य केवल लंका में सीमित नहीं था, वह केवल राजधानी थी। उसकी स्वर्ण भूमि आस्ट्रेलिया थी। माली-सुमाली उसके नाना थे उनके नाम पर सुमालिया तथा माली अफ्रीका के देश हैं। सीता माता को खोजने के लिए यवद्वीप के सात राज्यों तथा मोरक्को तक सुग्रीव के दूत गये थे। ये क्षेत्र या तो रावण के प्रत्यक्ष शासन में थे या उसके संघ में थे। इसके अतिरिक्त मैक्सिको का राजा अहिरावण भी उसका सहायक था। वह आस्तीक (एजटेक) जाति के नागों का देश था, अतः उसके राजा को अहिरावण कहा है (अहि=नाग)। समुद्र यात्रा करने वाले नाग थे। आज भी मैक्सिको में अहिरावण तथा मकरध्वज की मूर्तियां हैं।

रावण के विरुद्ध 18 मोर्चे पर युद्ध हुआ था जिनके लिए 18 सेनापति थे। इनको रामचरितमानस में कहा है-पदुम अठारह जूथप बन्दर। यहां पद्म का अर्थ 10,000 खरब संख्या नहीं है, यह युद्ध क्षेत्रों का नाम है। वर्तमान इण्डोनेशिया, आस्ट्रेलिया पर आक्रमण के लिए सिंगापुर महत्वपूर्ण केन्द्र था, जिसे श्रृंगवेरपुर कहा गया है। उसका राजा प्रयाग के

निकट राम से मिलने आया था। केवल गंगा पार करने के लिए उसकी आवश्यकता नहीं थी। वैसी बहुत सी नदियां तथा समुद्र भी पार किया था। एक श्रृंग पूर्व अफ्रीका में भी है जो इथियोपिया का भाग है। दोनों नक्शे में श्रृंग (सींग) की तरह दिखते हैं। यह देवताओं की योजना थी, जिसे गुप्त रखने के लिए कैकेयी ने अपने ऊपर दोष लिया। इस योजना से रावण को कठिनाई हो रही थी। वह किसी देश पर सेना द्वारा आक्रमण कर सकता था, पर तपस्वी पर नहीं, जैसा वह राम-लक्ष्मण की निन्दा के लिए कहता था। रामचरितमानस में केवल इसी सम्बोधन का प्रयोग किया है। अतः उसने सीता का अपहरण किया। पर यह राजनैतिक अपहरण था। असुर राज्य के भी आन्तरिक शासन के नियम कानून थे। विभीषण के अतिरिक्त उसके कई सभासदों ने इसका विरोध किया था तथा युद्ध में पूरी सेना तथा परिवार के मरने पर भी वह सीता माता की हत्या नहीं कर सका।

लेखक-श्री अरुण कुमार उपाध्याय

विक्रम संवत् - २०८१ - ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिंङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

नववर्ष चेतना समिति

रूचि शुक्ला

विदेश विभाग प्रभारी एन.आर.आई. सेल

भा.ज.पा. उ.प्र.

देश की आर्थिक व सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र बनती अयोध्या

शिवेश प्रताप
इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियर एवं एम.बी.ए., आई.आई.एम. कोलकत्ता

22 जनवरी, 2024 को श्री अयोध्या जी में नवनिर्मित श्रीरामजन्मभूमि मंदिर में हुए प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम की धूम न केवल उत्तर प्रदेश अपितु भारत के कोने-कोने से लेकर दुनिया भर में छायी है। लगभग 500 वर्ष से संघर्ष का पर्याय बन चुकी अयोध्या अपनी अयुध्य संस्कृति की वास्तविक पहचान की जगह मुगल आक्रान्ताओं के आक्रमण और हिंदू समाज के अस्मिता के संघर्ष का अखाड़ा बनकर रह गई थी। 22 जनवरी, 2024 को अयोध्या ने पुनः अपने सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक वैभव के गौरव को हासिल किया।

कुछ देशद्रोही-वामपंथी गिरोह संगठित रूप से इस नैरेटिव का मायाजाल गढ़ने में व्यस्त हैं कि राम मंदिर से लोगों के विकास, रोजगार और देश की आर्थिकी को कुछ हासिल नहीं होगा? आइये इसी के यथार्थ की चर्चा करते हैं।

अयोध्या का यह परावर्तन न केवल इस शहर के लिए महत्वपूर्ण है, अपितु प्रदेश की योगी सरकार एवं केंद्र की मोदी सरकार को भी अयोध्या से बहुत अपेक्षाएं हैं। दोनों सरकारों की दृष्टि में अयोध्या की मृदुशक्ति के द्वारा भारत में एक पर्यटन क्रांति संभव है। भारत में पर्यटन, देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का मात्र 4.6% है। फोर्ब्स पत्रिका ने दुनिया के 50 सबसे खूबसूरत देशों की रैंकिंग में भारत को 7वां सबसे खूबसूरत देश बताया है, इसलिए मोदी सरकार यह समझती है कि देश को 5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था बनाने के लिए भारत की पर्यटन संभावनाओं को बढ़ावा देना आवश्यक है। इसलिए देश और प्रदेश की सरकार की दृष्टि में अयोध्या में मात्र एक राम मंदिर का निर्माण नहीं हो रहा है अपितु समूची अयोध्या एवं उसके आसपास के क्षेत्र में विपुल निवेश के माध्यम से देश में एक पर्यटन क्रांति सुनिश्चित की जा रही है।

SBI रिसर्च ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा है कि वित्तीय वर्ष 2025 में राम मंदिर सहित अन्य पर्यटन से उत्तर प्रदेश को 25000 करोड़ का अतिरिक्त कर लाभ होगा।

दुनिया के भव्यतम सांस्कृतिक शहरों में एक होगी अयोध्या

सरकार द्वारा अयोध्या को एक वैश्विक शहर के रूप में विकसित किया जा रहा है और जिस प्रकार से ईसाइयों के लिए वेटिकन, मुसलमानों के लिए मक्का है उसी प्रकार से हिंदुओं के लिए अयोध्या को एक सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक राजधानी के रूप में विकसित किया जा रहा है।

एक आध्यात्मिक शहर के रूप में अपनी पहचान बनाने के क्रम में अयोध्या जल्द ही बुजुर्गों एवं अवकाश प्राप्त लोगों के लिए एक ठिकाना बनेगी और इसीलिए उत्तर प्रदेश आवास एवं विकास परिषद के द्वारा 3000 करोड़ रुपए की 1200 एकड़ में फैली नवअयोध्या परियोजना विकसित की जा रही है। जहां पर राज्य अतिथि गृह बनाया जाएगा। अयोध्या विकास प्राधिकरण के द्वारा गोरखपुर लखनऊ राजमार्ग से सटे 14 कोसी परिक्रमा मार्ग पर लगभग 80 एकड़ भूमि पर आवासीय योजनाएं लाने पर कार्य चल रहा है। इसमें जमीनों की नीलामी बड़े होटल उद्योगों के लिए किया जाएगा, साथ ही कुछ आवासीय प्लाट भी मुहैया कराए जाएंगे। दूसरे घर के रूप में

आध्यात्मिक शहरों को चुनने में अब तक हरिद्वार, ऋषिकेश, जगन्नाथपुरी, मदुरई तथा रामेश्वरम महत्वपूर्ण थे परंतु अब इस सूची में अयोध्या अपना नाम प्रमुखता से दर्ज कराएगा।

अयोध्या को स्वच्छ रखने के लिए कचरा प्रबंधन तंत्र का विकास, जल आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए वाटर सप्लाई परियोजना, विद्युत आपूर्ति के लिए उच्चतम मानकों के पावर स्टेशन बनाए जा रहे हैं। सरकार के अयोध्या में होने वाले भारी निवेश को देखते हुए भारत के साथ-साथ विश्व की कई औद्योगिक संस्थाओं ने अयोध्या में अपना निवेश प्रारंभ कर दिया है।

अयोध्या में होने वाला विकास वास्तव में रामजन्मभूमि की प्राण प्रतिष्ठा के साथ ही संपन्न नहीं होगा अपितु अभी तो यह अयोध्या एवं आसपास के क्षेत्र के विकास का शुभारंभ है। अयोध्या को हर तरह से विकसित बनाने की दिशा में 10 वर्षीय योजना 2031 में पूर्ण होगी और तब तक अयोध्या का पूर्ण रूप से कायाकल्प हो जाएगा। इस क्रम में लगभग 85000 करोड़ रुपए का निवेश किया जाना सुनिश्चित है। इस 10 वर्षीय योजना में अयोध्या विकास प्राधिकरण 875 वर्ग किलोमीटर में क्षेत्रीय अवसंरचनाओं एवं पर्यटन के विकास पर कार्य करेगा। इसमें 31.5 स्क्वायर किलोमीटर में मूल अयोध्या शहर तथा 133 वर्ग किलोमीटर में इसके मास्टर प्लान की योजना रहेगी। इस प्रकार से अयोध्या को एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सांस्कृतिक शहर के रूप में विकसित किया जा रहा है।

विकास की इस प्रक्रिया में इस बात का विशेष ध्यान दिया जाएगा कि इतने बड़े पैमाने पर पर्यटकों के आवागमन से यहां की जनसंख्या तथा पर्यावरण को कोई क्षति न पहुंचे। इसके लिए अयोध्या का विकास 8 मूल बिंदुओं पर हो रहा है। सुंदर, स्वच्छ, कार्य कुशल, सुगम, अनुभवात्मक, आधुनिक, सांस्कृतिक एवं स्वस्थ अयोध्या विकसित की जा रही है।

परियोजनाओं से अयोध्या का कायाकल्पः

सरकार के द्वारा अयोध्या में रेल, रोड तथा वायु सेवाओं की बेहतर कनेक्टिविटी को सुनिश्चित करने के लिए 17 विभागों में 264 से अधिक परियोजनाएं चलाई जा रही हैं जिनकी कुल कीमत 3923 करोड़ रुपए है। एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया के द्वारा 318 एकड़ भूमि पर अयोध्या में अन्तर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट बनाया गया है जो स्वयं में एक स्टेट ऑफ द आर्ट एयरपोर्ट है। देश और विदेश के पर्यटकों को यहां तक पहुंचाने के लिए महर्षि वाल्मीकि इंटरनेशनल एयरपोर्ट अयोध्या के प्रथम चरण में टर्मिनल भवन का निर्माण ही 8000 वर्ग मीटर में किया गया है। इस एयरपोर्ट को ऐसे मानक का बनाया जा रहा है कि यह 24 वायुयानों को एक साथ व्यवस्थित कर सकता है।

रेलवे के द्वारा अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन परियोजना के अन्तर्गत 443 करोड़ रुपए खर्च करके वैदिक वास्तु के अनुसार नवनिर्माण किया जा रहा है। अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन में तीन नए प्लेटफार्म बनाए जा रहे हैं जिसका भविष्य में और विस्तार किया जाएगा। लखनऊ एवं गोरखपुर राजमार्ग के यातायात को व्यवस्थित करने के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के द्वारा 65 किलोमीटर लंबे रिंग रोड का निर्माण किया जा रहा है जिससे अयोध्या की पर्यटन गतिविधि बढ़े और सुचारु रहे।

अयोध्या विश्व भर से बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करने की तैयारी में लगा हुआ है और इसी क्रम में आज अयोध्या में 5 मल्टी लेवल पार्किंग स्थल निर्माणाधीन है।

योगी सरकार राजधानी के गोमती रिवर फ्रंट की तरह गुप्तार घाट से नया घाट तक 7 किमी के हिस्से को रिवर फ्रंट के रूप में विकसित करने की योजना बना रही है। इसके लिए काम भी शुरू हो चुका है। पूरे रिवर फ्रंट के किनारे में फुटपाथ और स्ट्रीट लाइट विकसित करने की योजना है और यह यहीं खत्म नहीं होता। यदि सभी बातें ठीक रहीं, तो आप डेढ़ घंटे लंबी यात्रा के लिए एक लक्जरी क्रूज पर हो सकते हैं, जो गुप्तार घाट से नया घाट पर समाप्त होगी।

पर्यटन क्रांति के आरंभिक रुझानः

पर्यटन के माध्यम से किसी देश या प्रदेश को केवल आर्थिक लाभ भर नहीं होता है अपितु समाज के सभी आर्थिक, शैक्षणिक स्तरों और नागरिकों पर इसका सीधा

प्रभाव पड़ता है। यानी पर्यटन के माध्यम से सितारा होटल और मनोरंजन की गतिविधियों से लेकर रेहड़ी-पटरी, ऑटो रिक्शा, कुटीर उद्योग, हस्तशिल्प आदि सभी क्षेत्र के लोगों का लाभ होता है। सेवा क्षेत्र में कर्मचारियों की मांग में बढ़ोतरी होती है।

राम मंदिर निर्माण के चलते अयोध्या में पर्यटन गतिविधियों को मानो पंख लग गए हैं। उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग का अनुमान है कि राम मंदिर निर्माण के बाद प्रतिदिन लगभग 2 लाख तीर्थ यात्री राम मंदिर का दर्शन करने आएंगे जबकि पर्व और त्योहारों में यह आंकड़ा 5 लाख तक भी पहुंच सकता है। राम मंदिर के द्वारा अयोध्या के पर्यटन की स्थिति का अंदाजा आप इस बात से लगा सकते हैं कि भारत में पर्यटन के लिए सुविख्यात ताजमहल को वर्ष भर में मात्र 80 लाख लोग देखने जाते हैं जबकि राम मंदिर को वर्ष भर में 7 करोड़ लोग देखेंगे। यदि एक व्यक्ति औसतन मात्र 5000 रुपये भी खर्च करता है तो अयोध्या वर्ष भर में 35000 करोड़ के बाजार को जन्म देगा जो पर्यटकों द्वारा प्रत्यक्ष रूप से पैदा किया जाएगा।

उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग ने अयोध्या एवं उससे जुड़े हुए आसपास के क्षेत्र के 37 धार्मिक मंदिरों या क्षेत्र को चिन्हित करके उनके भी नवीनीकरण का कार्य प्रारंभ कर दिया है। इसी क्रम में लगभग 70 करोड़ रुपए खर्च करके जानकी घाट, बड़ा स्थान, दशरथभवन, राम कचहरी, सियाराम किला, दिगंबर अखाड़ा, भरत किला, कालेराम मंदिर, नेपाली मंदिर आदि को संवारा जा रहा है।

अयोध्या दीपोत्सव एक नए त्यौहारी पर्यटन के रूप में बीते कुछ सालों में अपनी पहचान बना चुका है। 2017 से अयोध्या हर साल एक शहर में सबसे ज्यादा दिए जलाने के लिए गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज हो रहा है। लाखों लोग यह दीपोत्सव देखने आते हैं।

इन्हीं संभावनाओं के बीच बीते कुछ वर्षों से अयोध्या एवं इसके आसपास के क्षेत्र में जमीनों के दाम आसमान छू रहे हैं। प्रतिष्ठित रियल एस्टेट कंपनी के एक रिपोर्ट की माने तो वर्तमान में अयोध्या निवेश के मामले में गोवा एवं हिमाचल प्रदेश को पीछे छोड़ चुका है।

नवंबर 2023 में उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा पूरे प्रदेश में सबसे अधिक राजस्व की प्राप्ति अयोध्या में हुई। इसका मुख्य कारण अयोध्या में बड़े पैमाने पर होने वाली जमीनों की रजिस्ट्री है। उत्तर प्रदेश स्टाम्प एवं रजिस्ट्रेशन विभाग के रिपोर्ट के अनुसार अप्रैल से नवंबर 2023 के बीच 29325 रजिस्ट्रियां अयोध्या में हुई हैं, जबकि साल 2017-18 में अयोध्या में मात्र 5962 जमीनों की रजिस्ट्री दर्ज की गई थीं। देश के जाने-माने मैरियट, ताज और रेडिसन जैसी होटल श्रृंखलाओं ने अयोध्या में अपनी इकाई खोलने की योजना बनाई है।

वस्तुओं एवं सेवाओं की मांगः

इतने व्यापक स्तर पर पर्यटकों के आवागमन तथा बड़ी हाउसिंग परियोजनाओं के मध्य एफएमसीजी वस्तुओं की मांग में एक जबरदस्त उछाल आएगा और इस कारण से लगभग सभी बड़ी कंपनियों जैसे अमूल, आईटीसी, ब्रिटानिया, डाबर, नेस्ले, हिंदुस्तान यूनीलीवर आदि उत्तर प्रदेश में अपने बड़े वेयरहाउस बनाने के लिए अयोध्या क्षेत्र में संभावनाओं की तलाश कर रही हैं।

देश के प्रतिष्ठित पैकेज ड्रिंकिंग वॉटर ब्रांड बिसलेरी ने अयोध्या में अपना एक बॉटलिंग संयंत्र स्थापित करने की बात कही है। देश की जानी-मानी लगभग सभी फूड चेन कंपनियां अयोध्या में अपने प्रतिष्ठान खोलने पर कार्य कर रही हैं।

व्यापार क्षमता एवं रोजगार सृजनः

राम मंदिर का निर्माण अभी पूर्ण नहीं हुआ परंतु इसके पहले ही अयोध्या की व्यापार क्षमता का प्रभाव दिखना प्रारंभ हो गया है। अयोध्या का निर्यात 2021-22 में 110 करोड़ का हुआ, जो 2022-23 में बढ़कर 254 करोड़ हो गया, लगभग 130 प्रतिशत की वृद्धि है।

भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय की ओर से जारी आंकड़े के आधार पर नजर दौड़ाएं तो 2022-23 में अयोध्या से पारबॉइल्ड राइस का 2.76 करोड़

रुपये का निर्यात किया गया। बिटुमिनस कोयला 90.61 करोड़ रुपये, भाप कोयला 3.81 करोड़ रुपये समेत अन्य कोयला का 4 करोड़ रुपये का निर्यात हुआ है। वहीं आयुर्वेद पद्धति की दवाएं 3.18 करोड़ रुपये की निर्यात हुई हैं। पोस्टर पेपर 1.77 करोड़ रुपये, क्राफ्ट पेपर व पेपर बोर्ड 44.02 करोड़ रुपये, क्राफ्ट पेपर व पेपर बोर्ड (भार-150 जी/एम 2 या उससे कम) का 48.56 करोड़ रुपये का निर्यात हुआ। वुड पल्प बोर्ड 3.12 करोड़ रुपये, बेकरी मशीनरी का 3.24 करोड़ रुपये का निर्यात किया गया।

अयोध्या में जिस तरह से इंफ्रा निर्माण, औद्योगिक गतिविधियाँ, पर्यटन तथा सेवा क्षेत्र में वृद्धि हो रही है उससे क्षेत्रीय लोगों की रोजगार संभावनाओं में व्यापक वृद्धि दर्ज की गई है।

उपरोक्त सभी बिंदुओं से यह सुस्पष्ट होता है कि आने वाले समय में अयोध्या एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक नगर के रूप में जाना जाएगा और प्रदेश एवं देश की आर्थिक गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण केंद्र बनकर उभरेगा जिससे सरकार सहित समाज के हर वर्ग को बड़ा लाभ मिलेगा।

लेखक : श्री शिवेश प्रताप

विक्रम संवत् - २०८१ - ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

विश्वव्यापी राम

डॉ. नितिन सहारिया 'महाकौशल'
प्राध्यापक, लेखक, वक्ता, चिंतक-होशंगाबाद, मध्यप्रदेश

भारतवर्ष श्रीराम का देश है, राम यहां के रोम-रोम, कण-कण, जन-जन के मन-प्राण-आत्मा में बसे हुए हैं। यहां तो जागरण व रात्रि शयन भी श्रीराम नाम के स्मरण से ही होता है। यहां तो जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त भी राम का ही स्मरण व गायन होता है। भारत में तो अनेक रूपों, नाम, पद्धतियों, परम्पराओं, लोक-रीतियों, काव्य में, सम्प्रदायों में, श्रीराम का स्मरण व आदर्श समाया हुआ है। भारतवर्ष बिना राम के कुछ भी नहीं है। ठीक वैसे ही जैसे शरीर से प्राण के निकल जाने पर शरीर शव-अर्थी-मिट्टी ही बचता है अर्थात अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है। राम तो भारतवर्ष के प्राण/चिति हैं, आराध्य, आदर्श, अस्तित्व, मार्गदर्शक हैं, योगियों व भक्तों के इष्ट हैं। जीव-जीवन-जगत के आधार व जगत के उत्पत्ति-पालन-संहारकर्ता हैं। राम के बिना तो सृष्टि-जगत की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। श्रीराम चरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज इसीलिए तो लिखते हैं कि-

'सकल विश्व यह मोर उपाया ।
सब पर कीन समानी दाया।।'

भारत के तो जन-जन में राम रमे हुए हैं, समाए हुए हैं, यहां तो संपूर्ण अस्तित्व ही राम से ओत-प्रोत है। या यूं कहें कि राममय ही है। इसीलिए तो यहां लोक गायन में यह पंक्तियां सुनाई देती हैं-

'सीता श्रद्धा देश की, राम अटल विश्वास।
रामायण तुलसी सहित, हम तुलसी के दास।।'

यहां तो सीता के राम, दशरथ के राम, राजाराम, लक्ष्मण के राम, भरत के राम, केवट के राम, अयोध्या नाथ, अवध बिहारी, शबरी के राम, वनवासी राम, अहिल्या तारक, हनुमान जी के प्रभु, रामेश्वरम् (शिवजी के राम), ऋषि-मुनियों के राम, जटायु के राम, भक्तों के राम, मर्यादा पुरुषोत्तम राम, कौशल्या के राम, दुखियों के राम, दीनों के नाथ, जन-जन के राम का विविध रूपों में स्मरण, आराधन, पूजन-वंदन, नित्य आठों याम किया जाता है।

भारत में तो मनुष्य को कष्ट होने पर वह-हे राम! पुकारता है एवं आपस में मिलने पर राम-राम! कहता है और किसी प्रकार की अनहोनी, गलत कार्य हो जाने पर तीन बार राम नाम का उच्चारण-राम-राम-राम!! करता है, इससे अधिक बार राम नाम यानी जप/कीर्तन कहलाता है एवं विजय घोष में, सिंहनाद के रूप में-जय जय श्री राम!! जय जय सियाराम!! का उच्चारण किया जाता है। आपस में वार्तालाप में ग्रामीण क्षेत्र में लोग अपना विश्वास व्यक्त करने में कहते हैं कि-'राम दुहाई'!! 'राम की सौ'!! 'राम कसम'!! और शव को शमशान ले जाते समय तो ''राम नाम सत्य है'' इत्यादि वाक्यांश कहते हुए पाए जाते हैं। अर्थात इस जगत में सिर्फ राम /परमात्मा का नाम ही सत्य है, बाकी सब असत्य है। इन वाक्यांशों, साक्ष्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारतवर्ष के जनमानस के चिंतन-चरित्र-व्यवहार में राम किस तरह घुले, समाए हुए हैं, अतः श्रीराम की महिमा अनंत है, वह मर्यादा पुरुषोत्तम, भक्तवत्सल, प्रजा-पालक, करुणा के सागर, कृपा के धाम, कृपासिंधु, धर्म-कर्तव्य पालक व सत्य में प्रतिष्ठित हैं। वचन पालन

उनका जीवन आदर्श है। राम संपूर्ण मानवता के आदर्श व प्रेरणा स्रोत हैं। वस्तुतः राष्ट्रपुरुष राम सदैव से भारतीय जनमानस के प्रेरणा-स्रोत रहे हैं। राम का जीवन हिंदू जीवन प्रणाली की अभिव्यक्ति है। भारतवर्ष में राम या रामायण हमारे सांस्कृतिक जीवन की विरासत है। हमारे व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा राष्ट्रगत जीवन-आदर्शों का प्रतिबिंब है। अखिल विश्व गायत्री परिवार में श्रीराम भक्ति के स्वरूप पर एक गीत है। इसमें कुछ इस प्रकार के भाव हैं-

'श्रीराम भक्ति ऐसी, श्रद्धा उभारती है।
निष्काम भाव सबरी, ऋषि पथ बुहारती है।।
गाये जटायु ने थे, कब भक्ति के तराने।
श्रीराम को गिलहरी, पहुंची न जल चढ़ाने।।
पर भक्ति भावना से, जीवन संवारती है।
श्री राम भक्ति ऐसी, श्रद्धा उभारती है।।
हनुमान भक्त ऐसे, माला घुमा न पाए।
श्रीराम को पुजापा, केवट चढ़ा न पाए।।
इनका चरित्र पावन, प्रतिभा निखारती है।
यदि भक्त हम कहाये, तो श्रेष्ठ कार्य करना।।
श्री राम काज करने, अन्याय से न डरना।।
युगधर्म को निभाने, प्रज्ञा पुकारती है ।।
श्रीराम भक्ति ऐसी, श्रद्धा उभारती है।।'

भारत वर्ष ही नहीं संपूर्ण विश्व के अनेक देशों में श्रीराम कथा की व्याप्ति अनेक रूपों में दिखाई देती है। कन्याकुमारी से क्षीर भवानी तक, कोटेश्वर से कामाख्या तक, जगन्नाथ से केदारनाथ तक, सोमनाथ से काशीनाथ तक, समवेत शिखर से श्रवणबेलगोला तक, बोधगया से सारनाथ तक, अमृतसर से पटना साहेब तक, अंडमान से अजमेर तक, लक्षदीप से लेह तक पूरा भारत राममय है। रामकथा की अनेक रूपों, भाषाओं, बोलियों में व्याप्ति है। यहां तो बाल्मीकि रामायण से रामचरित मानस तक, तेलुगु रामायण (रघुनाथ व रंगनाथ रामायण) राधेश्याम रामायण, गोविंद रामायण, अध्यात्म रामायण, तमिल में कंबन रामायण, उड़िया में—रुईपात कातेय पति, कन्नड़ में कुंदेंदु रामायण, कश्मीर में रामावतार चरित्र, मलयालम में 'रामचरितं', बंग्ला में 'कृतिबास रामायण', गुरु गोविंद की 'गोविंद रामायण' है। राम सब जगह हैं एवं राम सबके हैं, राम भारत की अनेकता में एकता के सूत्र हैं। दुनिया के कितने ही देश राम के नाम का वंदन करते हैं। वहां के नागरिक खुद को श्रीराम से जुड़ा हुआ मानते हैं। विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश 'इंडोनेशिया (बाली द्वीप) में भी 'काकादिन रामायण', स्वर्णदीप रामायण, योगेश्वर रामायण, कंबोडिया में 'रामकेन रामायण', लाओस में 'फैलात फैलाद', मलेशिया में-'हिकायत श्रीराम', थाईलैंड में 'रामकियेन' है। वर्मा में 'रामयज्ञ', ईरान व चीन में भी राम के प्रसंग तथा राम कथाओं का विवरण मिलेगा। श्रीलंका में रामायण की कथा 'जानकी हरण' के नाम से सुनाई जाती है। नेपाल का तो राम का आत्मीय संबंध माता जानकी से जुड़ा है। ऐसे ही दुनिया के न जाने कितने देश हैं, कितने छोर हैं, जहां की आस्था में या अतीत मे राम किसी ना किसी रूप में रचे-बसे हैं।

भारत के बाहर दर्जनों ऐसे देश हैं, जहाँ की भाषा में रामकथा आज भी प्रचलित है। भारत में भगवान श्रीराम के चरण जहां-जहां पड़े वहां 'राम सर्किट/राम पथ का निर्माण किया जा रहा है। हमारे यहां शास्त्रों में कहा गया है-'न राम सदृशो राजा-पृथिव्यां नीतिमानभूत' यानी की पूरी पृथ्वी पर श्रीराम जैसा नीतिवान शासक कभी हुआ ही नहीं। 'रामराज्य' यानी 'सर्वोत्तम-सर्वश्रेष्ठ शासन व्यवस्था' का होना, जिसमें किसी को भी दैहिक-दैविक-भौतिक संताप, कष्ट न हो। चारों ओर शांति-समृद्धि, प्रसन्नता का वातावरण व्याप्त होना, सभी को न्याय उपलब्ध होना, भेदभाव रहित होना, यही रामराज्य की संकल्पना है।

त्रेतायुग में अमेरिका को पाताल देश के नाम से पुकारा जाता था। 'अहिरावण' का पाताल लोक में वाल्मीकि रामायण में वर्णन आता है। अमेरिका मे होंडुरास, मैक्सिको "मय सभ्यता" 'Maya culture' का क्षेत्र है। बाल्मीकि रामायण में वर्णित दुंदुभि और मायावी जिनको बाली ने गुफा में घुसकर मारा था। वह मय दानव के ही पुत्र थे। मय की एक पुत्री मंदोदरी थी। जिसका विवाह रावण से हुआ था। रामायण के किष्किंधा कांड में गुफा वाले प्रकरण में मय के जीवन व्रत तथा भवन निर्माण के उसके कौशल का अच्छा वर्णन किया गया है। सीता माता की खोज में गए बंदरों के

भूख-प्यास से व्यथित होकर एक गुफा में प्रवेश और उस गुफा में 'स्वयंप्रभा' नाम की तपस्विनी से हुई उनकी भेंट की कथा विदित ही है। हनुमान जी के पूछने पर तपस्विनी स्वयंप्रभा ने बतलाया था कि-वानर श्रेष्ठ! माया विशारद महा तेजस्वी 'मय' का नाम तुमने सुना होगा। उसी ने अपनी माया के प्रभाव से इस समूचे स्वर्णमय वन का निर्माण किया था।

'मयो नाम महातेजा मायावी वानरर्षभ ।
तेनेब निर्मित्तं सर्वं मायया कांचन वनम्।।'

(रामायण किष्किंधा कांड, सर्ग 52)

नाज ट्यूनिक गुफा, ग्वाटेमाला की गुफा, वैलीज, अल मीराडोर, होंडुरास, मैक्सिको इत्यादि सब भारतीय 'मय' दानव की कर्म स्थली रही है। ग्वाटेमाला के वन्य क्षेत्र की प्रायः हर पहाड़ी में एक 'मय' नगर छिपा हुआ है। अमेरिका (पाताल देश) का 'बोलिविया' शहर राजा 'बलि' का स्थान रहा है। अमेरिका की 'अजटेक सभ्यता' आस्तिक सभ्यता/हिन्दू संस्कृति ही थी। अमेरिका के प्राचीन मूल निवासियों के नाम के साथ 'इंडियन' शब्द लगा हुआ है अर्थात 'रेड इंडियन' भारतीय ही हैं। दक्षिण अमेरिका के हवाई द्वीप में हिंदू संस्कृति के देवी- देवताओं के हजारों चित्र/विष्णु के चक्र, गदा इत्यादि, मूर्तियाँ चट्टानों पर उत्कीर्ण हैं। 'सूरीनाम' में पारामारिबो के पास अमर इंडियन/रेड इंडियन के गांव हैं। गांव वासियों का कहना है कि हमारे पूर्वज भारत के असम क्षेत्र से उड़कर वहाँ आये थे।

विश्व के 35 देशों में 1000 स्थानों के नाम 'राम' से संबंधित हैं। मिस्र के 11 सम्राटों व रोम के आधा दर्जन सम्राटों के नाम में 'राम' शब्द जुड़ा हुआ है। भारतीय पुराण तथा सुमेर कथाओं में आए नामों की एक लंबी तुलनात्मक सूची है। 'इस्राइल' के 20 स्थान राम से संबद्ध हैं जैसे 'रामाल्ला' इत्यादि। संपूर्ण विश्व में 300 से अधिक रामायण ग्रंथ हैं। मिस्र (इजिप्ट) में 'अज' के पौत्र 'रामेशस्' ही राम हैं । अफ्रीका प्राचीन 'कुशद्वीप' के 'अंगोला' में उर के पुत्र अन्गिरा ने राज्य किया। भगवान राम के पुत्र 'कुश' ने इराक, ईरान, अरब और अफ्रीका को विजय करके शक्तिशाली साम्राज्य की नींव डाली जिसका केंद्र 'सूडान' था। सोमालिया में रावण के नाना सुमाली का राज्य था। ग्रैंड कैन्यन के विष्णु-शिव के मंदिर (प्रकृति प्रदत्त) भारतीय संस्कृति की गाथा बतलाते हैं। यूनान में भारतीय संस्कृति परम्परा के अनेकों साक्ष्य/अवशेष मिले हैं।

टोक्यो जापान के पास इंद्र मंदिर में 'हनुमान' जी की दो मूर्तियां इंद्र की रक्षा कर रही हैं। जापान में सूर्य देवता की पूजा की जाती है व अपने को सूर्यवंशी मानते हैं। चम्पा (वियतनाम) में शेषशायी चतुर्भुज विष्णु-नारायण की मूर्ति मिली है।

विश्व के सातों द्वीपों में सनातन हिंदू संस्कृति के देवी- देवताओं की मूर्तियां, मंदिरों के अवशेष तथा अनेक साक्ष्य मिले हैं। अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका, यूनान, मिस्र, (इजिप्ट), कोरिया, फ्रांस, जापान, ग्रैंड कैन्यन ,चंपा (वियतनाम), बालीद्वीप (इंडोनेशिया), अजरबैजान (बाकू), ईरान (आर्यान) इराक, अफगानिस्तान, थाईलैंड (श्यामदेश), लॉओस (लवदेश), कम्पूचिया, कलिंगद्वीप (फिलिपींस), कम्बोडिया, बर्मा, मंगोलिया, चीन, अरब प्रायद्वीप, इटली, मलेशिया, ऑस्ट्रेलिया, मॉरीशस, श्रीलंका, नेपाल, कनाडा, यूके, सिंगापुर इत्यादि देशों में सैकड़ों साक्ष्य सनातन हिन्दू धर्म के प्राप्त हुये हैं। इन देशों की परम्पराओं, रीति-रिवाजों में सनातन संस्कृति घुली हुई है व किसी न किसी रूप में भारतीय संस्कृति की अमिट छाप है। प्राचीन काल में भारतीय संस्कृति-विश्व संस्कृति Global culture रही है।

कम्बोडिया के हिन्दू मंदिर विश्व प्रसिद्ध हैं "अंकोरवाट का मंदिर" विश्व का सबसे बड़ा विख्यात हिंदू मंदिर है। यह मंदिर लगभग 1 किलोमीटर लंबाई-चौड़ाई में फैला हुआ है, इसके अवशेष 16 किलोमीटर दूर तक फैले हुए हैं। इसके मध्य मीनार की चोटी भूमि से 180 फीट ऊंची है।

इस मंदिर के अंदर चित्र उत्कीर्ण हैं। 'जिसमें रामायण, महाभारत, हरिवंश पुराण के कथानक चित्रों में अंकित हैं, अधिकांश चित्र वैष्णव हैं, लेकिन कुछ चित्र शैव भी हैं।

'सिओडिश' ने सन् 1911 ईस्वी में अंकोरवाट के 30 चित्रों का पता लगाया था। कुछ चित्रों में वासुकी सर्प, महेंद्र पर्वत, विष्णु, देव, असुर, लक्ष्मी, ब्रह्मा, गणेश, नटराज, किरात

वेशधारी शिव का अर्जुन से संग्राम आदि के चित्र सुगमता से पहचाने जा सकते हैं। आरंभ में यह विष्णु मंदिर था परंतु पीछे से बौद्धों ने विष्णु के स्थान पर बुद्ध की मूर्तियां स्थापित कर दी हैं।

अंकोरवाट के चित्रों में भारत की ही भांति कंबोज में भी स्त्री-पुरुष दोनों ही पुरुष धोती व स्त्रियां साड़ी पहनती थी। कंबोज देश में जो अभिलेख मिले हैं वह प्रायः संस्कृत में ही हैं।

कम्बोडिया में शासन व्यवस्था वेद-वेदांग, स्मृति और योग में पारंगत उच्च कोटि के ब्राह्मणों की उपलब्धता, उनका राजा और प्रजा दोनों के आधार, दंड व्यवस्था, धार्मिक दीक्षा, शैव-वैष्णव धर्म अन्य देवी-देवताओं की पूजा भारतीयों के ही समान पाई गई।

कंबोज वैसे भी भारतीय संस्कृति एवं परम्परा का प्रभावी केंद्र था ही। राजभाषा संस्कृत थी। सांस्कृतिक जीवन का केंद्र बिंदु सनातन हिंदू धर्म था। सामाजिक जीवन का अधिष्ठान रामायण, महाभारत एवं पुराण थे।

प्राचीन काल में संपूर्ण विश्व में एक ही सनातन/हिंदू संस्कृति व्याप्त थी। जिसके आज हजारों साहित्यिक व पुरातात्विक प्रमाण उपलब्ध होते चले जा रहे हैं। यूं ही नहीं भारत प्राचीन काल में 'विश्वगुरु' था। इस तथ्य को अब संपूर्ण विश्व को स्वीकार करना ही होगा, यही वर्तमान का अद्भुत व्यवहारिक सत्य है।

कंबोडिया के धर्मावलंबियों के पूजागृहों में वहां धनुषधारी राम और हनुमान जी की प्रतिमाएं भी स्थापित हैं। सरकारी मुद्रा पर हनुमान जी छपे हैं। सेना के ध्वज पर भी हनुमान जी विराजे हैं। राजधानी नामपेन्ह के आधुनिकतम खेल स्टेडियम पर हनुमान जी की विशाल प्रतिमा स्थापित है। हनुमान जी वहां के मानस देवता हैं।

इंडोनेशिया के अनेक नगरों के नाम अभी भी भारतीय नगरों के समान है जैसे अयोध्या, हस्तिनापुर, तक्षशिला, विष्णुलोक, लवपुरी आदि।

इंडोनेशिया में भारतीय संस्कृति की स्थापना और उसके विकास-विस्तार का महत्वपूर्ण विवरण 'कैंपर' के-"अर्ली इंडोनेशिया आर्ट", डॉ. कुमार स्वामी के-"हिस्ट्री ऑफ इंडिया एण्ड इंडोनेशियन यूनिटी" व स्टुटैरहिम के-"रामा लीजेन्ड एण्ड रामा रिलफिंस इन इंडोनेशियेन" में प्रमाणिक सामग्री प्रस्तुत की गई है। इन्हें पढ़ने पर यह विश्वास हो जाता है कि इंडोनेशिया द्वीप समूह में किसी समय भारतीय संस्कृति का ही बोलबाला था।

इंडोनेशिया नाम ग्रीक भाषा का है जो 'इंडो' और 'नेसी' शब्दों को जोड़कर बनाया गया है। 'इंडो' का अर्थ है भारत और 'नेसी' का अर्थ है द्वीप। 'इंडोनेशिया अर्थात "भारत का द्वीप"।' इतिहास में पिछले दिनों तक इसको 'ईस्टइंडीज' कहा जाता था अर्थात 'पूर्वी भारत'। किसी समय विशाल भारत का पूर्वी छोर इंडोनेशिया तक फैला हुआ था। उसके मध्य में आने वाले देश तो भारत के अंग थे ही। इंडोनेशिया की राजधानी 'जकार्ता' अर्थात 'जयकर्ता /योगकर्ता' है।

इंडोनेशिया के प्रथम शिक्षा मंत्री 'यासीन' ने उस देश का विस्तृत इतिहास-"ताता नगरा मजहित सप्त पर्व" नाम से लिखा है और उसमें 'रामायण' को उस देश की सांस्कृतिक गरिमा के रूप में स्वीकार किया है।

महाभारत पर आधारित देवरुचि, अर्जुन विवाह, काकविन (रामायण), द्रोपदी स्वयंवर, अभिमन्यु वध आदि कितने ही कथानक यहां की नाट्य परम्पराओं में सम्मिलित हैं। 11वीं शताब्दी में महाभारत लिख गया, जिसका नाम है-'महायुद्ध'।

'रामायण' के नाट्य के मंचन में जोग्या के सुल्तान की पुत्रियां सीता और त्रिजटा का अभिनय करती थीं। इंडोनेशिया का 'रामायण मंचन' (रामलीला) विश्व में प्रसिद्ध है।

7 सितंबर 1971 में इंडोनेशिया ने विश्व का सर्वप्रथम अन्तर्राष्ट्रीय रामायण महोत्सव किया।

वियतनाम (चम्पा) भारतवर्ष से गए 'चाम' जाति के लोगों द्वारा बसाया गया देश है। उस देश पर हिंदू राजा का राज्य था। इसके बाद वहां अनेकों हिंदू राजाओं ने राज्य किया एवं हिंदू धर्म की स्थापना की। चम्पा राज्य की सभ्यता के आदि संस्थापक 'चाम' वर्ग के लोग' अभी भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुए हैं।

पर जो कुछ प्रमाण सूत्र मिले हैं, उनसे प्रतीत होता है कि वह आर्यवंशी लोग थे और भारतीय धर्म-मान्यताओं का अनुकरण करते थे। इसके बाद वहां 'बर्मन' उपाधिधारी राजा राज करते चले आए।

युगीन अध्यात्मवेत्ता, युगऋषि, वेदमूर्ति पं. श्रीराम शर्मा आचार्य चम्पा के बारे में लिखते हैं कि-"शिवलिंग जिसे चम्पा में राष्ट्रीय देव की प्रतिष्ठा प्राप्त थी, के अतिरिक्त अन्य छोटे देवताओं की मूर्तियां भी यहां प्राप्त हुई हैं। इसमें सबसे अधिक उल्लेखनीय 'पो-नगर' में स्थित 'शंभूमुखलिंग' है। आठवीं शताब्दी ईस्वी के एक शिलालेख से ज्ञात होता है कि इस मुखलिंग की स्थापना राजा विचित्र सागर द्वारा की गई थी। अन्य दो शिलालेखों से उनकी स्थापना की निश्चित तिथि के संबंध में ज्ञान होता है। इसके अनुसार इसकी स्थापना द्वापर युग के 5911वें वर्ष में अर्थात 17,80,500 वर्ष पूर्व हुई थी। सन 774 ईस्वी में यह लिंग ध्वस्त कर दिया था। पर राजा 'सत्यवर्मन' ने इसे पुनर्स्थापित किया और इसका नाम 'सत्यमुखलिंग' रखा गया।

चम्पा में वैष्णो धर्म का एक महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है। विष्णु को विभिन्न नामों से जैसे-पुरुषोत्तम, हरि, माधव, गोविंद से संबोधित किया जाता है।

अवतारों में राम और कृष्ण का उल्लेख बार-बार आता है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि विष्णु ने अपने को चार रामों अर्थात राम और उनके तीन भाई के रूप में विभाजित कर दिया था। कृष्ण अवतार में विष्णु की वीरतापूर्ण लीलाओं की बहुत प्रतिष्ठा है।

चम्पा के राजागण अपनी तुलना विष्णु से करने में बहुत हर्षित होते थे। कभी-कभी वह स्वयं को विष्णु का अवतार मान लेते थे।

शिलालेखों से यह स्पष्ट है कि चम्पा में रामायण, महाभारत, शैव, वैष्णव एवं बौद्ध धार्मिक साहित्य, मनुस्मृति तथा पुराणों का अध्ययन बड़ी रुचि के साथ किया जाता था।

रामायण संबंधी चित्रों और मूर्तियों के दर्शन 'लुआन्ग प्रवांग' में किये जा सकते हैं। 'वाट पादुकेद' की भीतियों पर रामायण के चित्र अंकित हैं। सन 1803 में "वाट पादुकेद" का निर्माण हुआ और तभी से भित्तिचित्र बनाए गए थे। 31 चित्रों में संपूर्ण रामायण अंकित की गई थी। स्थानगत दूरी भले हो किंतु सांस्कृतिक दृष्टि से सारा दक्षिण-पूर्व एशिया भारत का अभिन्न अंग रहा है और आज भी है।

आज का 'मलेशिया' जिसे प्राचीन काल में 'मलाया' नाम से पुकारा जाता था। प्राचीन समय में वर्मा से लेकर मलेशिया का यह सारा क्षेत्र भी भारत में 'स्वर्णदीप' या 'स्वर्णभूमि' के नाम से पुकारा जाता था। अलबरूनी, इब्न, रुइँद-फरिंद के ग्रंथो में यही नाम दिया गया है। इस क्षेत्र को बसाने वाले लोगों को इतिहासकारों ने 'इंडोनेशियन' कहा है।

'फाह्यान' के अनुसार उस क्षेत्र पर हिंदू धर्म का भारी प्रभाव था। मलाया और जावा की बनी हुई भारतीय मूर्तियां पीरू और मैक्सिको तक मिलती है। मलायी भाषा में संस्कृत के हजारों शब्द मौजूद हैं।

मलाया में वर्तमान में इस्लाम धर्म के अनुयायियों का बाहुल्य है, जो वहाँ के सम्राट कहलाते हैं। सुल्तान के नाम के साथ जोड़ने वाली अनेक उपाधियां में से एक "श्री पादुका" भी है। जिस प्रकार भरत जी श्रीराम की चरण पादुकाओं को अयोध्या के शासन का स्वामी मानते थे और अपने को कार्यवाहक मात्र कहते थे। उसी प्रकार सुल्तान भी राजगद्दी का स्वामी भगवान को मानकर 'कार्य संचालन' करते हैं। यह मर्यादा "श्री पादुका" उपाधि में है। जो रामायण काल की याद दिलाता है।

मलाया के मुसलमानों में निकाह तो इस्लामी विधान के साथ ही होता है पर उस अवसर पर 'रामायण' या 'महाभारत' का कोई अभिनय अवश्य किया जाता है। यदि वैसा न किया जाए तो निकाह पूरा हुआ नहीं माना जाएगा।

चौथी सदी में भारतीयों की अनेक बस्तियां मलाया में बसी हुई थी। इनमें से बड़ी बस्तियां चुनफान, काया, नाटवान, धम्मरथ, श्रीमान याला, सीलिंन सिंग, मलक्का, बेलेसली, तकुआ, लानया नाम से प्रख्यात थीं। इन क्षेत्रों की खुदाई में जो सामग्री मिली है उससे पता चलता है कि 'पल्लव' और 'चोल वंश' के राजाओं का इस क्षेत्र पर शासन था। इन राजाओं में 'राजेंद्र चोल' का प्रभुत्व था।

मलय के उत्तरी भाग में स्थित "वेलेस्ली प्रांत" में कुछ मंदिरों के खम्भों के ध्वंसावशेष प्राप्त हुए।

मलय प्रायदीप में हिंदू उपनिवेशों की संख्या बहुत थी और यह दूरस्थ केंद्रों जैसे पूर्वी तट में स्थित 'शुभफौन', सिया, बंदोंन नदी की घाटी नरवोन श्री धम्मरत लिंगोर मल (पटनी के पास) और सेलसिंग (पेहंग में) और पश्चिमी तट में स्थित मलक्का, वेलेस्ली प्रांत, टकुअ-पा और लनय, एवंटेनस्सेरिम, नदियों के पश्चिमी तट में बसे हुए थे। इसमें नरवोन के थोड़ा उत्तर में 'सिया उपनिवेश' स्थित था। रामायण में 'सीता' जी को 'सिया' नाम से पुकारा गया है। तब हम समझ सकते हैं कि मलेशिया का यह क्षेत्र भगवान श्रीराम की धर्मपत्नी सिया (सीता) से प्रभावित/प्रेरित रहा है, जो रामायण काल त्रेतायुग की स्मृति को ताजा करता है। जहां पहले ब्राह्मण धर्म (वैदिक धर्म) बाद में बौद्ध धर्म प्रचलित हो गया।

इसी हिमालय पर्वत के संबंध में वाल्मीकि रामायण में अंगद अपने वानर दलों को सीता जी की खोज में स्थान बताते हुए कहते हैं कि उस प्रसिद्ध मलय पर्वत के शिखर पर बैठे हुए सूर्य के समान महान तेज से संपन्न मुनिश्रेष्ठ अगस्त का दर्शन करना।

मलाया में प्राप्त प्राचीन साहित्य में "हिकायत पिन्डव" प्रसिद्ध है, जिसमें महाभारत की पांडव कथा है। "पुत्ति कोल विष्णु" में 'विष्णु पुराण' की कथाएं हैं। "पिंडव जय" पांडव विजय का कथा सार है।

वर्मा के कितने ही नगर भारतीय संस्कृति का उस क्षेत्र में होना सिद्ध करते हैं। पेगु का 'विष्णुनगर' अब तक 'विष्नुम्यो' है। इस प्रकार कुछ समय तक 'रामपुरा' नाम से पुकारा जाने वाला नगर अब 'मौलमीन' हो गया है। "रामावती" का पुराना कस्बा अब नया नाम बदलकर 'दविर्ची' बन गया है।

वर्मी इतिहासकार बताते हैं कि 11वीं शताब्दी में "शीन अर्हा" नामक ब्राह्मण भारत से उत्तर वर्मा में आया और उसने बौद्ध धर्म फैलाया। तब बागान में सैकड़ों बौद्ध विहार बने। इन्हें बनाने वाले कुशल कारीगर भारत से आए थे। इस क्षेत्र में एक विशाल विष्णु मंदिर अभी भी जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पड़ा है। भीतरी दीवारों पर विष्णु के 10 अवतारों की प्रतिमाएं अंकित है। पागान पर सन 1084 से 1112 तक "क्यांजीटा" राजा का शासन रहा। वह अपने को 'राम' का वंशज बताता था। याजदी पगोड़ा में लगे हुए एक शिलालेख से वर्तमान पागान का पुराना नाम 'अरिदमनपुर' और वहां के राजा का यज्ञकुमार विदित होता है।

इतिहास वेत्ता जी. ई. हार्वे ने लिखा है कि-वर्मा में जितनी भी लोक कथाएं प्रचलित हैं, वे प्रायः सभी भारत से गई है। थारोन, प्रोम, पेगु, रंगून आदि क्षेत्रों में भारतीयों की बस्तियां थीं। भारत से ही बौद्ध धर्म वर्मा में पहुंचा। इस उत्साह में प्राचीन हिंदू-मंदिरों का परिवर्तन बौद्ध मंदिर में कर दिया गया। रंगून का "स्वेडगो पैगोड़ा मंदिर" विख्यात है। इन पैगोडा नुमा विशाल मंदिर में बड़े-बड़े घंटे टंगे हैं। इनमें से एक 140 टन और दूसरा 16 टन का है। रंगून नगर के मध्य में "सुले पैगोडा/ मंदिर" है। मांडले के पास मिंगुन पैगोड़ा-मंदिर में 12 फीट ऊँचा, 10 फीट चौड़ा, 100 टन वजन का कांसे का घंटा है। संसार का यह सबसे बड़ा घंटा माना जाता है। अतः समझा जा सकता है कि यह विशाल घंटा यहाँ मंदिर में ही लगाया गया होगा; जो की बाद में परिवर्तित होकर "बौद्ध पैगोडा" का रूप ले लिया। किसी समय यह सब प्राचीन मंदिर रहे हैं।

बर्मा में हिंदू देवी-देवताओं और रीति-रिवाजों का अनुकरण होता है। बर्मा, थाईलैंड, कंबोडिया इन तीनों ही देश में 'होली' मनाई जाती है और उसे 'जलोत्सव' कहा जाता है। भारतीय 'गणेश उत्सव' की तरह गणेश पूजा वहाँ भी उत्साहपूर्ण समारोह से की जाती है। उसका नाम है-"महा पैइने"। सन 1767 में बर्मा के शासक 'हसीब बुशीन' ने श्याम देश को जीता तो वहां से रामलीला के कुशल कलाकार अपने साथ लाया। तब श्याम के दरबारी भी 'रामलीला' खेलते थे। राजघराने के कई प्रतिष्ठित सदस्य भी उस समय अभिनय में भाग लेते थे। इन लोगों ने वर्मा आकर वहां बड़े उत्साह से रामलीला का प्रचार किया।

कविश्वर 'उतो' की लिखी 'रामयज्ञ (रामायण)' वर्मा में बहुत लोकप्रिय है। यह योग्य, नाटकों के अधिकांश विवरण इसी 'रामयज्ञ' रामायण के आधार पर बने हैं। जो प्रायः 2 सप्ताह लगातार चलता है और रात भर दिखाया जाता है। दर्शकों की भारी भीड़ उसे देखने जमा हो जाती है।

बर्मा को भारत में 'ब्रह्मदेश' कहा जाता था और वह भारत का अविछिन्न अंग माना जाता था। यहां के निवासी 'बर्मन' अथवा 'वर्मा' कहे जाते थे।' भारत में भी इस उपाधि को धारण करने वाले आज बहुत लोग हैं।

चीन की तरह जापान में भी अभी उस 'आर्य' जाति की एक शाखा मौजूद है। जिसकी अन्य शाखाओं से जापानियों की उत्पत्ति हुई है। उस मूल जाति का नाम 'एन्यु' (आर्य) है। एन्यु को काकेशियन विभाग के अन्तर्गत समझा जाता है। 'एन्यु' लोग अब तक प्राचीन ऋषियों के वेश में रहते हैं। दाढ़ी और केश नहीं निकालते हैं। इसलिए इनको आजकल 'हेयरी मैन' अर्थात "बाल वाले लोग" कहा जाता है। चाहे जापानी लोग इन काकेशियन की संतति हो, चाहे चीनियों की, दोनों स्थितियों में यह आर्य क्षत्रिय ही हैं।

जापान के गणमान्य और वृद्धतम विद्वान "श्री रिंगतारो नागासाबा" का कहना है कि-जापान का प्राचीन धर्म ब्राह्मण ओके Brahman Okyo ब्राह्मण धर्म (वैदिक धर्म) था, जो कि भारत से चीन और कोरिया होता हुआ बुद्ध धर्म के पदार्पण से बहुत समय पूर्व ही यहां आ गया था। चीन और जापान सहित संपूर्ण पूर्वी एशिया में भारत के विभिन्न देवी-देवताओं के मंदिर उनकी पूजन-अर्चन की विधि, रीति-रिवाज और परम्पराओं की व्याप्ति इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

विद्वान 'प्रोफेसर एन. नाकामुरा' का कहना है कि- "सांस्कृतिक दृष्टि से भारत जापान की मां है।"

'टोक्यो' के प्राचीन मंदिरों में विष्णु के अवतारों यथा मत्स्य, वराह, श्रीकृष्ण आदि की चित्रावलियां दीवारों पर चित्रित है। जापान की पुरानी राजधानी 'नारा' के एक प्राचीन बुद्ध मंदिर के प्रवेश द्वार पर "वेणु बजाते हुए कन्हैया" की मूर्ति उत्कीर्ण की गई है। अचल पर्वत के रूप में पूजित शिव के कई मंदिर हैं। टोक्यो में महाकाल का "मिनी मिन्मेगुरी मंदिर", कुबेर का "तागोन्जि मंदिर" और सरस्वती का "चोमेईजी मंदिर" भी यहां के प्रसिद्ध मंदिर हैं। जापान में सभी वैदिक देवताओं की पूजा- आराधना होती है।

जापान में भारतीय देवताओं के निम्न नाम है-'एम्मा सामा-यम', विरुशेम-विरोचन, 'विशामोन-कुबेर, जुटी-चंडी, फूडो-शिव, कन्गीतेन-गणेश, दाईकोकू-महाकाल, मरीशितेन-मरीचि, बोनटेन सामा-ब्रह्मा, बेनेटन सामा-सरस्वती, किंचिजोतेन-महालक्ष्मी, क्वान्नोन-सहस्त्रबाहु आदि।

जापान के 'टोक्यो' शहर में सुंदर लकड़ियों का एक मंदिर बना हुआ है जो इंद्र का प्रसिद्ध मंदिर कहलाता है। उसमें रामायण में वर्णित हनुमान देवता का चित्र लगा हुआ है।

कोरिया की फर्स्ट लेडी अपने को 'राम का वंशज' मानती है, जहां 60% लोग नास्तिक हैं। थाईलैंड का राजा "राम दशम" राम टेन्थ होल्ड करता है। जॉर्डन का शहर है 'रामाल्ला'। इसमें राम शब्द कहाँ से आया? आप समझ सकते हैं। "Ramse" फर्हानो की dynasty में प्रथम राजा है। कुर्दिस्तान के इलाके में (इराक व टर्की के बीच) धनुर्धारी राम के सम्मुख हाथ जोड़े हुये हनुमान जी का भित्तिचित्र एक गुफा में मिला है। 'होंडुरास'- लैटिन अमेरिका में 'मंकीगॉड' (हनुमानजी) हैं। जकार्ता (योगकर्ता/जयकर्ता) इंडोनेशिया की राजधानी है। पड़ोस का प्रोविंस भी 'योगकर्ता' ही है।

सनातन संस्कृति से सारा विश्व प्राचीन काल में सरावोर /ओत-प्रोत रहा है। यह सनातन संस्कृति आखिर राम की ही तो संस्कृति है। सारे विश्व में जगह-जगह सनातन संस्कृति के अवशेष, साक्ष्य, ध्वंसावशेष, मूर्तियां, शिलालेख, ताम्रपत्र लेख, ध्वस्त मंदिर इत्यादि विभिन्न रूपों में प्राप्त हो रहे हैं। सम्पूर्ण विश्व सनातन/हिंदू के पुरातन वैभव, पुरुषार्थ, शौर्य-पराक्रम की ही तो गाथा गा रहा है। भारतीय/हिंदू का तो अनादिकाल से उद्घोष ही "कृण्वन्तो विश्वमार्यन्" है।

जहाँ हजारों साक्ष्य, प्रमाण यह सिद्ध करते हैं कि सम्पूर्ण विश्व राम-रामायण व सनातन-हिन्दू संस्कृति से ओत-प्रोत है। विश्व में जहाँ भी खुदाई होती है, कोई मूर्ति अथवा मंदिर निकलता है। सारी दुनिया में सनातन संस्कृति के अवशेष मिलते चले जा रहे हैं। जो इस बात की गवाही दे रहे हैं कि प्राचीन काल में भारतवर्ष विश्वगुरु/जगतगुरु रहा है व भारतीय संस्कृति विश्व संस्कृति Global culture रही है ।

भगवान श्रीरामचंद्र के जीवन में पवित्रता, समरसता,

सह अस्तित्व एवं सत्य-धर्म के पालन की प्रधानता आग्रह प्रमुखता से दिखाई देती है। भगवान राम की इन बातों का सहज में ही अंदाजा हो जाता है कि मांस खाने वाले जटायु को अपनी गोद में बैठाया, कुशल-छेम पूछ कर उपचार किया एवं अंत में अंतिम संस्कार व तर्पण भी किया। वहीं दूसरी ओर केवट यानी निषादराज को गले लगाया, अपनी मित्रता प्रदान की और छोटे अनुज लक्ष्मण जैसा सम्मान दिया और वनवास से वापस लौटते समय निषादराज के घर पर श्रीराम पधारे, उन्हें अपने साथ वापसी में अयोध्या भी ले गए और उसे कृतार्थ किया। प्रभु श्रीराम ने अहिल्या रूपी नारी को जो पाषणवत यानी संवेदना हीन हो गई थी का उद्धार, त्राण किया। वन में रहने वाले कोल- किरात, वानर-भालुओं से मित्रता की, उन्हें धर्म ज्ञान कराया एवं कर्तव्य बोध कराकर के संगठित करके, असुरता व अधर्म पर चढ़ाई की एवं सत्य-धर्म की विजय कराई। भगवान राम ने गिलहरी जैसे छोटे जीव का भी सम्मान किया। श्रीराम का जीवन पूर्ण है। संपूर्ण विश्व मानवता के लिए वह पथ-प्रदर्शक, अनुकरणीय ही नहीं, कल्याणकारी भी हैं। भगवान का तो अवतार ही धर्म स्थापना के लिए होता है, जिसमें सज्जनों का कल्याण व दुर्जनों को दंड दिया जाता है। इसलिए गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैं कि-

निर्मल मन जन सो मोहि पावा,
मोहि कपट छल छिद्र न भावा।।
विप्र, धेनु, सुर-संत हित, लीन मनुज अवतार।।

भगवान को पवित्र मन का व्यक्ति, प्राणी, जीव ही प्रिय है और छल-कपट रखने वाले प्राणी अप्रिय हैं। संसार में विप्र- ब्राह्मणों, ऋषियों-मुनियों, गाय, देवताओं, संतो के कल्याण, लोक कल्याण के हेतु से ही भगवान का अवतरण होता है, इस धरा धाम पर। प्रत्येक युग में लक्ष्य एक ही रहता है, परिस्थिति भले ही बदलती रहती हैं। अतः राम सबके हैं, यह सारा संसार ही राममय है एवं राम की ही अभिव्यक्ति, विराट ब्रह्म का स्थूल रूप है, राम का ही विस्तार है, राम की ही लीला है। राम की महिमा से प्रभावित होकर ही तो 'राजगोपालाचारी' अपने तमिल रामायण का अंग्रेजी अनुवाद करते हुए लिखते हैं कि-"राम का जीवन पारिवारिक समरसता, राष्ट्रीय एकात्मता तथा अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री, ऐक्य तथा सौहार्द का आधार है। राम का जीवन भारतीय अतीत का गौरव, वर्तमान के आश्रय तथा भविष्य की उज्ज्वल आशा है। वह भारत के उच्चतम आदर्श हैं। निसंदेह राम के बिना भारत अकथनीय, अकल्पनीय तथा अधूरा है।"

ऐसे महान दिव्य पुरुष, गुणों के धाम, मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम को पाकर भी हम उनके जीवन से प्रेरणा नहीं लेते एवं आपस में दुराभाव, ईर्ष्या-द्वेष, अज्ञानता का जीवन जीते हैं, लड़ते हैं, तो यह हमारा दुर्भाग्य-दुर्बुद्धि ही है।

'उग कर सूरज भला, फिर क्या करेगा।
आँख पर पट्टी, मनुज यदि बांध बैठे।।'

लेखक-डॉ. नितिन सहारिया

नववर्ष चेतना समिति

'चित्रों के झरोखे से श्रीरामजन्मभूमि मंदिर निर्माण'-पुस्तक चर्चा (प्राण प्रतिष्ठा के बाद प्रकाशित होने वाली पहली पुस्तक बनी)

डॉ० निवेदिता रस्तोगी
संपादक नवचैतन्य

22 जनवरी 2024 को दोपहर लगभग 12:30 बजे अयोध्या में श्रीरामलला विग्रह प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम संपन्न हुआ। इसके ठीक बाद ''चित्रों के झरोखे से श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण'' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई। इस दिन उत्तर प्रदेश और इसके बाहर ग्यारह स्थानों पर पुस्तक परिचय का कार्यक्रम आयोजित कराया और इस पुस्तक के ई-प्रारूप को इंटरनेट पर निःशुल्क पढ़ने के लिए लिंक भी वितरित किया गया। इस पुस्तक को ग्राम फीना जनपद बिजनौर के इंजीनियर हेमंत कुमार जी ने लिखा है। आप नववर्ष चेतना समिति भारत की इस आमुख पत्रिका नवचैतन्य के सह-संपादक भी हैं। इस पुस्तक को प्राण प्रतिष्ठा के दिन सबके सामने लाने का प्रयास लेखक द्वारा लंबे समय से किया जा रहा था। इसके लिए कई बार अयोध्या का भ्रमण भी इन्होंने किया और विशेष कार्य योजना बनाकर 22 तारीख को प्राण प्रतिष्ठा के दिन ही पुस्तक प्रकाशित कराई। यह अपने आप में एक विशिष्ट उपलब्धि है। इसके लिए नववर्ष चेतना समिति की ओर से बधाई और शुभकामनाएं।

पुस्तक में श्रीरामजन्मभूमि मंदिर निर्माण के विभिन्न चरणों के महत्वपूर्ण चित्रों का क्रमिक संकलन दिया गया है। मंदिर निर्माण तकनीक के ऊपर भी महत्वपूर्ण जानकारी सहज और सरल हिंदी में लिखी गई है। पुस्तक में प्रयोग किए गए चित्रों में अद्भुत आकर्षण है। अब द्वितीय संस्करण में मंदिर कार्य पूर्ण होने तक के चित्र लगाने की योजना है। पुस्तक को अयोध्या का संक्षिप्त परिचय, मंदिर निर्माण की तीन भारतीय शैलियाँ और श्रीरामजन्मभूमि मंदिर निर्माण, श्रीरामजन्मभूमि मंदिर से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण तथ्य, श्रीरामजन्मभूमि मंदिर निर्माण के प्रमुख और मूलभूत तकनीकी पक्ष, नींव के महत्वपूर्ण चित्र, अधिष्ठान निर्माण, भूतल, प्रथम तल तथा द्वितीय तल निर्माण के चित्र जैसे कुल 15 अध्यायों में वर्णित किया गया है। पुस्तक का अवलोकन करने पर ऐसा लगता है मानो मंदिर निर्माण हमारे सामने ही हो रहा हो। पुस्तक में लगे अनेक चित्र अत्यंत दुर्लभ हैं। पुस्तक की साज-सज्जा और प्रस्तुतीकरण भी उत्कृष्ट है।

इस पुस्तक के लेखन एवं सफल प्रकाशन के लिए इसके लेखक भाई हेमन्त कुमार जी को बहुत-बहुत बधाई और हार्दिक शुभकामनाएँ।

रामकथा की विश्व-व्याप्ति

प्रो० सूर्यप्रसाद दीक्षित
पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

राम कथा की विश्व-व्याप्ति का पूर्वाभास गोस्वामी तुलसीदास जी को हो गया था। शायद इसलिए उन्होंने कहा था-''राम कथा कै मिति जग नाहीं,'' ''रामायन सतकोटि अपारा'' तथा ''राम अनंत अनंत गुन अमित कथा बिस्तार।'' उन्होंने ''मानस'' में अनेक राम कथाओं के संदर्भ दिए हैं और उनके कुछ उपयोगी प्रकरण यथाप्रसंग ''संग्रह त्याग'' नीति के सहारे अपने काव्य में रखे भी हैं। तुलसी के अनुसार राम कथा के मूल रचयिता हैं- भगवान शिव। इनके अतिरिक्त उन्होंने अगस्त्य, लोमष ऋषि, याज्ञवल्क्य और काकभुशुंडि को भी राम कथा का स्रोत माना है। वाल्मीकि कृत रामायण को प्रायः सर्वत्र आदि काव्य माना गया है। अनेक विद्वानों ने उसे लगभग 4000 ई.पू. की रचना कहा है। वेद में भी 'जनक', 'सीता', 'राम', 'मरुत' आदि शब्द आए हैं, पर कई विद्वानों ने वेद में दशरथि राम की उपस्थिति नहीं मानी है। दूसरी ओर, स्वामी करपात्री ने 'राम कथा मीमांसा' में वेद से रामकथा के अनेक संदर्भ खोज निकाले हैं। डॉ. रामभद्राचार्य ने यजुर्वेद में इस कथा के सूत्र सुझाए हैं।

एक यह जनश्रुति भी उत्तर भारत के कुछ क्षेत्रों में विद्यमान है कि पहली राम कथा हनुमान जी ने लिखी थी। रामराज्य के स्थापित हो जाने के बाद हनुमान जी कुछ समय के लिए कैलाश चले गए थे। वहाँ श्रीराम चरित का स्मरण करते हुए उन्होंने पत्थरों पर एक राम कथा उत्कीर्ण की थी। उसी बीच महर्षि वाल्मीकि कैलाश पहुँचे। वहाँ 'हनुमत रामायण' को देखकर वे दुखी हो गए। हनुमान जी ने उनके दुःख का कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि एक राम कथा मैंने भी रची है, किन्तु उसकी पहल का श्रेय अब मुझे नहीं मिलेगा। हनुमान जी ने उन्हें श्रेय देने हेतु अपने काव्य के सारे प्रस्तर खंड समुद्र में तिरोहित कर दिए। यह भी मान्यता है कि श्रीराम का राज्य त्रेतायुग में लगभग 11,000 वर्षों तक चला। उस बीच वाल्मीकि ने कुशीलवों द्वारा मौखिक राम कथा की गायन-परम्परा शुरू की थी। पहले यह श्रुति परम्परा में थी, बाद में लिपिबद्ध हुई। क्रमशः उसमें नए-नए प्रकरण-प्रक्षेप जुड़ते गए, इसलिए रामायण को विकासात्मक काव्य (एपिक आफ ग्रोथ) कहा जाता है। उसके अनेक संस्करण, अनेक आकार और अनेक पाठ हैं। दक्षिणात्य संस्करण तो काफी भिन्न है। यह भी मान्यता है कि वाल्मीकि ने यह कथा ब्रह्मा जी के आदेश एवं नारद के निर्देशानुसार रामावतार के पूर्व अपनी भविष्य दृष्टि से लिखी थी। इसीलिए गोस्वामी जी कहते हैं- ''नाना भाँति राम अवतारा, रामायन सत कोटि अपारा।''

मूलतः वाल्मीकि रामायण से प्रेरित होकर ही विभिन्न भाषाओं में राम कथाएँ रची गई हैं। संस्कृत में विष्णुपुराण, ब्रह्मपुराण, पद्मपुराण, हरिवंशपुराण, भागवतपुराण, गरुड़पुराण, नृसिंहपुराण, मत्स्यपुराण, स्कंदपुराण, अग्निपुराण, वायुपुराण आदि में न्यूनाधिक राम कथा प्रस्तुत की गई है किन्तु इनमें कहीं ज्यादा वाल्मीकि रामायण और फिर ये रामायण लोकप्रिय हुई हैं। आध्यात्म रामायण, आनंद रामायण, अद्भुत रामायण, भुशुण्डि रामायण, वशिष्ठ रामायण या महारामायण या योगवशिष्ठ, उदारराघव (साकल्य) अनर्घराघव (मुरारि) उदात्तराघव (आयुराज) उल्लासराघव (सोमेश्वर) उन्मत्तराघव

(पांडवीय) हनुमन्नाटक (मधुसूदन, दामोदर मिश्र) प्रसन्नराघव (जयदेव) आदि। संस्कृत के भास, कालिदास, भवभूति, भट्टिकाव्यकर्ता जैसे कवियों ने अनेक रामाख्यान लिखे। इसी काल क्रम में पाली भाषा में 'दशरथ जातक' तथा प्राकृत अपभ्रंश में 'उत्तर पुराण कथा' (गुणभद्र), जैन रामायण (हेमचंद्र) रामपुराण (जिनदास), पउम चरिउ (स्वयंभू, विमल सूरि, सत्य भूदेव), महा रामायण (पुष्पदंत) आदि की रचना हुई। इन सबमें अपने निहित उद्देश्य वश समय -समय पर नए-नए प्रकरण सम्मिलित किए जाते रहे। बौद्ध कथाओं में यह संकेत दिया गया है कि अयोध्या परिवार में रक्त -पात रोकने के उद्देश्य से राम अकेले ही वन गए थे। आरंभिक राम कथाओं में और उपर्युक्त कई पुराणों में सीता-निर्वासन की घटना नहीं आई। महानाटक (दामोदर मिश्र 11वीं शती) में प्रथम बार पर्णकुटी के चारों ओर लक्ष्मण रेखा का उल्लेख हुआ है और रावण, मेघनाद के माया-युद्ध के बहुशः वर्णन किए गए हैं। 9वीं शताब्दी में तमिल के प्रसिद्ध कवि कंबन के 'रामावतारम' काव्य (कंबु रामायण) की रचना हुई। इसमें प्रथम बार जनक वाटिका में राम-सीता का पूर्वराग चित्रित किया गया है। कवि कंबन की एक और नई उद्भावना यह है कि रावण ने अकेली सीता का हरण न करके, समूची पर्णकुटी को उखाड़कर अशोक वाटिका में रख दिया था। तेलुगु की 'रंगनाथ रामायण' (गोन बुद्ध 1980 ई.) में यह कथा आई है कि एक बार कंदुक क्रीड़ा करते हुए राम ने मंथरा को घायल (विकलांग) कर दिया था। अतः उसने राम से बदला लेने के लिए गृह कलह करवाई थी। तेलुगु की 'रंगनाथ रामायण', 'भास्कर रामायण', 'मोल्ला रामायण' एवं 'रामाम्युदयम' में भी ऐसी कई नई घटनाएँ हैं। कन्नड़ में पंप रामायण (नागचंद) रामायण (कुमुदेंदु) राम विजय चरितम (देवण्य) तोरावै रामायण आदि काफी चर्चित हैं। कन्नड़ की एक रामायण है 'सेतुराम'। इसमें प्रथम बार सेतु- निर्माण में गिलहरी प्रयास का उल्लेख किया गया है। कविवर कुंवेंपु ने भी अनेक नूतन वृत्तांत रचे हैं। मलयालम रामायण के कवि एषुतुच्छन तुल्लन ने सीता स्वयंवर का विवरण विस्तार पूर्वक दिया है। 'राघवीयम' काव्य में श्रीराम की जल समाधि का वृत्तांत आया है। केरल वर्मा की रामायण एवं 'इराम चरितम' में भी कई नए वृत्तांत हैं। उड़िया कवि दांडि, बलरामदास, जगमोहन की रामायण, विचित्र रामायण, विलंका रामायण (सारलादास) आदि में राम कथा विषयक कई नव वृत्तांतों को स्थान मिला है। असमिया रामायण (माधव कंदली) गीति रामायण (दुर्गाव) श्रीरामविजय (उत्तर पुराण शंकर देव) तथा रघुनाथ काव्य (18वीं शतीं) में रामचरित का विवरण मिलता है। असमिया में सीता हरण प्रसंग पर कई काव्य और नाटक लिखे गए हैं। बांग्ला की 'कृत्तिवास रामायण' में वैष्णव मत की स्पर्धा में शाक्तमत को महत्व देने के ध्येय से महाशक्ति के समक्ष राम की प्रणति (शरणागति) का विस्तृत विधान किया गया है। उसमें यह भी कथा आई है कि रावण वध के पश्चात् मंदोदरी सीता को शाप देती है कि तुम्हारा पति एक दिन तुम्हारा परित्याग कर देगा। 'अनंत रामायण' में पूरी राम कथा है। माइकेल मधुसूदन ने 'मेघनाद वध' काव्य में लक्ष्मण को खलनायक बना दिया है। पंजाब में 'गोविंद रामायण' तथा गुरु गोविंद सिंह कृत दशावतार एवं रामावतार की रामकथा में श्रीराम के शौर्य की बड़ी प्रशस्ति की गयी है। गुजराती में 'नागर कृत रामायण', कहाव की रामायण, काशी सुत का 'हनुमंत चरित', देव विजय मणि कृत 'रामचरित्र' एवं कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी के लेखन में भी राम कथा है। कश्मीरी रामायण (दिवाकर भट्ट) और मराठी की राम कथाओं में इसी प्रकार के अनेक नए एवं विचित्र प्रकरण प्राप्त होते हैं। महाराष्ट्री प्राकृत में प्रवरसेन कृत 'सेतुवंध' (5वीं शती) और एकनाथ के 'भावार्थ रामायण' में कई नई कथाएँ हैं। केशवराज की रामायण तथा स्वयंभू के रामायण पुराण में भी कई नए वृत्तांत हैं। तात्पर्य यह कि भारत की विभिन्न भाषाओं में, आदिवासी समाज की बोलियों तक में रामकथा की भरमार है।

राम कथा विदेशों में भी बहुव्याप्त रही है। स्याम देश (थाईलैंड) में राजा सेरीराम की परंपरा आज भी विद्यमान है। अभी वहाँ अयोध्या का भी अस्तित्व है। पूरे विश्व में अयोध्या नाम से मिलते-जुलते लगभग एक दर्जन स्थान हैं। वहाँ ख्मेर भाषा में रचित 'रामकियेन' (रामाख्यान) रामवस्तु, रामताज्या, रामतात्थों, थिरीराम, पोंतव राम, थामप्वे आदि राम काव्य बहु प्रचलित हैं। इसमें रावण वध के बाद राम के दर्जनों युद्ध वर्णित हैं, यह 16वीं शती की रचना है। बैंकॉक की 'खोन' नामक रामलीला भी अतिविशिष्ट है। राम कथा

के रचनाकार वहाँ के अधिपति राजाराम माने जाते है। इस काव्य की एक यह मान्यता है कि सीता की जन्मभूमि है श्रीलंका। वहाँ के राजा अतुल्यतेज (9वीं शती) स्वयं को कुश का वंशज मानते हैं। थाई देश में लवपुरी, जनकपुरी जैसे स्थान पाए जाते हैं। अभी वहाँ के राजवंश में राम पादुका-पूजन की प्रथा विद्यमान है। सत्यानंद कीर्ति रचित 'रामकीर्ति' नामक काव्य में भारतीय संस्कृति की गहरी छाप दिखाई देती है। वहाँ की कई सड़कों का और सेतुओं का नामकरण राम पर किया गया है। रामायण सर्किट वाले देशों में गणेश, लक्ष्मी, गरुड़ आदि के नाम करेंसी नोटों, बैंकों और हवाई अड्डों में दिखते हैं। बैंकॉक के रायल पैलेस की दीवारों पर राम कथा की चित्रावली अंकित है। लाओस में भी एक अयोध्या है, रामायण मंदिर है और लिंग पूजा के अवशेष हैं।

वहाँ प्राप्त 'राम जातक' लाओ भाषा में रचा गया है। उसमें कहा गया है कि सीता की रक्षा करने वाली त्रिजटा विभीषण की पत्नी थी। वहाँ पुवंग/प्रवंग में रामायण-प्रदर्शन 23 वर्षों से चल रहा है। इनके मुखौटे बड़े भव्य हैं। फालम पोंपचाक में भी चर्चित राम कथा है। इंडोनेशिया मुस्लिम बहुल राष्ट्र है। उसके बाली द्वीप में चकमक रामायण (सचित्र राम कथा) मिलती है। वहाँ गुजराती व्यापारियों द्वारा इस्लाम धर्म पहुँचा था। चीन से वहाँ बौद्ध धर्म पहुँचा था, जिससे प्रभावित होकर भी अधिकतर लोग प्राचीन सनातन संस्कृति से जुड़े रहे। आज भी भारतीय पुराख्यानों के अभिधान (संज्ञा शब्द) वहाँ बहु प्रचलित हैं। इनकी एयर लाइन का नाम है 'गरुड़'। ये स्वर्ग नरक मानते हैं और राम की पूजा करते हैं। जावा में मुस्लिम जनता 'रामायण' नृत्य करती है। उनके बैंकों में गणेश, लक्ष्मी एवं सेना में हनुमान तथा देवी के चित्र दिखाई देते हैं। जकार्ता में भीम, अर्जुन, रथारूढ़ कृष्ण की प्रतिमाएँ हैं। बाली के विद्यालयों में मार्कण्डेय, भारद्वाज, अगस्त्य आदि का स्मरण किया जाता है। वहाँ त्रिकाल संध्योपासना तथा गायत्री मंत्र का प्रचलन है। धोती कुरता उनका राष्ट्रीय परिधान है। वहाँ जनता (कृषक) प्रायः भूदेवी-श्रीदेवी की पूजा करती है। हिन्दी में इनसे संबंधित रेडियो, टी.वी. प्रसारण निरंतर होता रहता है। वहाँ की राम कथा में थोड़ा अंतर भी है। वहाँ मूर्ति निर्माण में लुवंन/ प्रवंग की बड़ी भूमिका रही है। जकार्ता की रामलीला 43 वर्षों से चल रही है। 8वीं शती में विरचित 'रामलीला' 43 वर्षों से होती चली आ रही है। वहाँ 'रामायण काकविन' की बड़ी ख्याति है। इसमें लंका को 'लंगा' लिखा जाता है। जावा द्वीप में प्राप्य 'सेरतकांड' (15वीं) और जावा के राजा सिदौक की 'जवाई रामायण' (9वीं शती) का ऐतिहासिक महत्व है। सेरतकांड में रावण के चरित्र को काफी विस्तार दिया गया है। इस कवि के अनुसार रावण मंदोदरी का पुत्र है। सीता वेदवती की अवतार है। वहाँ के मंदिरों में सीता हरण की घटना अंकित है तथा शिव धनुष के बजाय दूसरा धनुष, सीता द्वारा राम को लिखे गये पत्र और राम कथा के कई प्रसंग चित्रित हैं। सीता राम को वहाँ के राजाओं का पूर्वज माना जाता है। वहाँ देवपासर नगर की एक सड़क का नाम लक्ष्मण पर है। इनकी राम कथा के अनुसार मंदोदरी दशरथ की रानी थी। सीता रावण की बहिन थी। जकार्ता में होने वाली रामलीला इस कथन का प्रमाण है कि राम वहाँ बहुपूज्य हैं। वहाँ के कई चौराहों पर राम की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं।

कंबुज (कंबोडिया) की प्राचीन राज्यसत्ता को महात्मा कौंडिन्य से संबंधित माना जाता है। वहाँ 'रामकेति' 'रामकेर' नामक एक अधूरी राम कथा मिली है। यों सत्रहवीं शती से लेकर अद्यावधि थाई एवं कंबुज में सात राम काव्य प्रचलित हैं- 1. रामवस्तु, 2. महाराम, 3. रामतोन्यया, 4. रामताज्यी, 5. रामभगना, 6. रामातात्यों, 7. परंतुनराम। मलेशिया में हिकायत सेरीराम, मलय रामायण एवं रामलीला के कठपुतली प्रदर्शन की बड़ी ख्याति है। इसमें बौद्धों और मुसलमानों की विशेष सहभागिता रहती है। फिलीपाइन में महारादिका लखना की ख्याति है। वहाँ खमेर राज्य के महल में बालिन (बालि) और सुग्रीव के युद्ध चित्र हैं। सुमात्रा, बोर्नियों, सिंगापुर और वियतनाम (प्राचीन चम्पा नगरी) में भी रामलीला की अपनी विशिष्ट शैलियाँ हैं। लंका में सिंहली राम कथा के अनेक अवशेष द्रष्टव्य हैं। इसके अतिरिक्त इनका कुमार मणि रचित 'जानकीहरण' काव्य भी महत्वपूर्ण है। जापान में राम शाक्यमुनि के रूप में पूज्य हैं। जापान के इकेदा ने 'रामचरितमानस' का जापानी में अनुवाद किया है। चीन में वाल्मीकि रामायण का अनुवाद किया गया है। गीनशेंग

दिग्जन ने रामचरितमानस का सफल अनुवाद किया है। दक्षिण कोरिया के गिरहे से भारत का घनिष्ठ संबंध रहा है। अयोध्या की राजकुमारी (रानी हो) का विवाह वहाँ के राजा से हुआ था। वहाँ 'हांग' नाम से रामचरितमानस का अनुवाद हुआ है। इसी प्रकार ओमान में भी न्यूनाधिक राम तत्व प्राप्य है। निष्कर्ष यह है कि रामायण को 'इपिक आफ एशिया' की जो मान्यता प्रदान की गई है, वह तथ्याधारित है। राम कथा चूँकि बृहत्तर भारत से संबंधित है, इसलिए श्रीलंका, नेपाल, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि उससे जुड़े हुए हैं। अविभाजित भारत में लाहौर, स्यालकोट, ढाका और प्राचीन गुरुकुल तक्षशिला आदि रामकथा से जुड़े रहे हैं। नेपाल, तिब्बत, भूटान आदि देशों की रामायण बहुचर्चित हैं। जावा में राम, हनुमान आदि की मूर्तियाँ भरी पड़ी हैं। वहाँ मंदिरों में पूर्णिमा को मुस्लिमों का नृत्य होता है। इन देशों के स्कूली पाठ्यक्रमों, जनसंचार माध्यमों, राष्ट्रीय चिह्नों और उपासना पद्धतियों में गायत्री, त्रिशूल, भूदेवी, श्रीदेवी, धोती, त्रिकाल संध्या एवं पुराकथाओं-पौराणिक चरित्रों की बहुव्याप्ति है।

भारतवंशी बहुल राष्ट्रों में मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद, गयाना, नेटाल (दक्षिण अफ्रीका) में रामोपासना लगभग डेढ़ सौ वर्षों से प्रचलित है। वहाँ भारत के कई प्रसिद्ध तीर्थों की अनुकृतियाँ तैयार की गई हैं। प्रायः हर घर में सनातनी मंदिर हैं। उनमें विष्णु, राम, कृष्ण, हनुमान आदि कई देवी - देवताओं के श्रीविग्रह प्रतिष्ठित हैं। स्थान-स्थान पर रामायण मंडलियाँ हैं। उनमें रामलीला के आयोजन होते हैं। विश्व रामायण सम्मेलन तो प्रायः होते रहते हैं। 'मानस'-गायन प्रतियोगिता का वहाँ बड़ा प्रचलन है। दूरदर्शन का 'रामायण' धारावाहिक वहाँ बहुत लोकप्रिय है। जनसंचार माध्यमों में रेडियो, टी.वी.-सिनेमा तथा पत्र-पत्रिकाओं में राम कथा की बराबर अनुगूँज सुनाई देती है। मॉरीशस के 'रामायण सेंटर' में रामलीला, मानस - पाठ, सत्संग एवं गायन प्रतियोगिताओं के आयोजन होते रहते हैं। यहाँ के कवि लेखकों में कमलाप्रसाद मिश्र, जोगेंदर सिंह कँवल, डॉ. सुब्रमणी, कुँवरसिंह और विवेकानंद शर्मा आदि ने तथा सूरीनाम में मुंशी रहमान ने राम परक काफी साहित्य रचा है। इन देशों के लोक साहित्य में तो राम कथा की भरमार है। त्रिनिदाद में मिट्टी का राममंदिर तथा तुलसी मंदिर सुप्रसिद्ध हैं। परशुराम यहाँ पूर्वज माने जाते हैं। इन देशों में यू.पी. शैली की रामलीला बहुत प्रचलित है। गयाना की 'हिंदू धार्मिक सभा' रामलीला का आयोजन कराती रहती है।

राम कथा का परिविस्तार यूरोपीय देशों में भी देखा जा सकता है। इंग्लैण्ड के कई विद्वानों ने 'रामचरितमानस' का गहन मनन किया है। 'मानस' का पहला-पहला अनुवाद ग्राउज ने 1868 ई. में किया था। कॉरपेंटर ने 'थियोलॉजी ऑफ तुलसीदास' नामक शोध प्रबंध लिखकर 1918 में लंदन विश्वविद्यालय से हिन्दी की प्रथम डॉक्ट्रेट (उपाधि) प्राप्त की थी। जॉर्ज ग्रियर्सन ने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखकर, विशेषतः 'नोट्स ऑन तुलसीदास' लिखकर तथा 'ब्रितानिया विश्वकोष' में टिप्पणी देकर गोस्वामी जी को विश्व के सर्वश्रेष्ठ कवियों के बीच प्रतिष्ठित किया। एच.एन. विल्सन, एडमिन ग्रीब्ज, एटकिंस, स्मिथ, ग्राहमबेली, फर्गुसन, पिंकाट आदि ने राम कथा के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला और यह सिद्ध किया कि तुलसी जैसा लोकप्रिय कवि कहीं अन्यत्र नहीं दिखाई देता। फ्रांस के गार्सा द तासी ने जो इतिहास लिखा, उसमें तुलसी को पहली बार स्थान दिया। वादविल ने पेरिस यूनिवर्सिटी से 'मानस' पर डी.लिट् की उपाधि प्राप्त की। इटली की तसमानिया को पाँचवी शती में निर्मित 'राम कथा चित्रावली' प्राप्त हुई। वहाँ एल.पी. तेस्सोतरी ने जितना शोधपरक कार्य किया है, वह स्तर की दृष्टि से अतुलनीय है। वेटिकन स्टेट और इथिपीय संग्रहालय में सीता हरण, जटायु, लवकुश आदि के राम कथा संबंधी कई चित्र, सिक्के एवं अभिलेख पाए गए हैं। नीदरलैण्ड (हॉलैंड) में राम कथा का काफी प्रचलन है। पॉलैण्ड में प्रो. विस्की जैसे प्रसिद्ध भारत विद्या प्रेमी रहे हैं। वारसा विश्वविद्यालय की तात्याना ने मानस का पोलिश भाषा में अनुवाद किया है। रूस में राम संस्कृति की विश्वयात्रा काफी चर्चित है। लेनिनग्राद में वारान्निकोव ने 'मानस' का रूसी में अनुवाद करते हुए जो भूमिका लिखी, वह आज भी बड़ी प्रासंगिक है।

यही स्थिति जर्मनी एवं चेकोस्लाविया की है। बेल्जियम

के फादर कामिल बुल्के ने तो राम कथा के क्षेत्र में अतुलनीय काम किया है। रूस में राम कथा के अध्ययन की शुरुआत चिश्तीकोव ने की थी। चेलीशेव ने उसे और ऊँचाई प्रदान की थी। अमेरिका के होडरास कैलिफोर्निया तथा यूनेस्को में राम कथा पर बहुत सामग्री प्राप्य है। वहाँ लगभग चार सौ मंदिर हैं। 55 मंदिर अकेले कैलिफोर्निया में हैं। दक्षिण अमेरिका के देश ब्राजील में और सर्वाधिक कैरीबियन देशों में राम कथा अति प्रचलित है। प्रो. वेंडर सैमुल्ल जैसे प्राच्यविदों की यहाँ सक्रियता रही है। यही ख्याति कनाडा के क्रिष्टोफर की है। ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड में लोक चित्रशैली की राम कथा का पर्याप्त विकास बसंत निर्गुणे के माध्यम से हुआ है। अफ्रीकी देशों में विशेषतः नेटाल-प्रिटोरिया क्षेत्र में भारतवंशियों के बीच राम कथा का पर्याप्त प्रचार-प्रसार है। खाड़ी देशों में ईरान, मुख्यतः इराक में राम कथा विषयक कुछ गुफा चित्र प्राप्त हुए हैं। दोनों देश आर्य संस्कृति से जुड़े रहे हैं। दुबई (संयुक्त अरब गणराज्य) में भी राम कथा लोकप्रिय है। सुलेमानिया में आज भी राम और हनुमान की कई मूर्तियाँ हैं। इसी प्रकार जर्मनी के ईनेसफार्नेल, हेलगुट नेस्पिताल की, स्वीडन के प्रो. लेनार्ड एवं पेर्सन की और जापान के तोमियों निजोकामी तनाका आदि की सक्रियता सराहनीय रही है।

भारत के पड़ोसी देशों में नेपाल, अफगानिस्तान तो वृहत्तर भारत के पहले अंग ही थे। राम कथा के कई पात्र और प्रकरण अफगानिस्तान से जुड़े हुए हैं। नेपाल का जनकपुर, मिथिला और मधेस क्षेत्र राम कथा से ओत-प्रोत है। नेपाल के कवि भानुभक्त की रामायण 18वीं शती की महत्वपूर्ण रचना है पाकिस्तान के दो नगर-कसूर और लाहौर क्रमशः कुश और लव से संबंधित माने जाते हैं। जिन्ना ने अपनी डायरी में लिखा था कि कसूर के इन अपने पूर्वजों पर हमें गर्व है। इकबाल की एक उक्ति है- ''है राम के वजूद पर हिंदोस्तां को नाज।'' निष्कर्ष यह है कि वर्तमान विश्व न्यूनाधिक रूप में 'सियाराममय' है।

हिन्दी में रामानंद, ईश्वरदास, नाभादास, सूरदास, अग्रदास (रामध्यानमंजरी), तुलसीदास, केशवदास, मधुसूदन (रामाश्वमेध), विश्वनाथ सिंह (आनंद रघुनंदन), सरयू पंडित (जैमिनी पुराण), नवलसिंह (रामचंद्र विलास), सहजराम (रघुवंश दीपक), बनादास, (उभय प्रबोधक), ललकदास (सत्योपाख्यान), शीतल (श्रीरामचरितायन) रुद्रप्रताप (सुसिद्धांतोत्तम रामखण्ड), लालदास (अवध विलास), रामनाथ जोतिषी (रामचंद्रोदय), मैथिलीशरण गुप्त (साकेत) रामकुमार वर्मा (उत्तरायण, ओ अहल्या), बलदेव मिश्र (साकेत संत, कोशल किशोर, रामराज्य, सीता वनवास) हरिऔध (वैदही वनवास), नरेश मेहता (संशय की एक रात), प्राणचंद चौहान, बैजनाथ, हृदयराम, सेनापति, पद्माकर, जगदीशगुप्त (जयंत, शांता) आदि सहस्रों ग्रंथ रचे गए हैं। (द्रष्टव्य-राम काव्य कोश-सूर्य प्रसाद दीक्षित)

राम कथा से संबंधित अनेक काव्य, नाटक, जीवनी, स्फुट ग्रंथ और इतिहास ग्रंथ तो रचे ही गए हैं, अन्य कलाओं में भी इसे पर्याप्त प्रश्रय दिया गया है। महाराष्ट्र की चित्रवीथी, आंध्र की चित्रकलमकारी, उड़िया की पट्टचित्रावली, साथ ही पहाड़ी, राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी, बुंदेली, अवधी आदि की लोक चित्रकारी, संगीत एवं स्थापत्य में भी राम कथा की व्याप्ति है। कंबोडिया का अंकोरवाट मंदिर विश्व का सबसे बड़ा विष्णु मंदिर है। तिब्बत के जातकों में और मंगोलिया में राम कथा के अनेक चित्र पाए जाते हैं। दक्षिण भारत में 'कोदंड राम' के मंदिर अत्यंत प्रसिद्ध हैं। उत्तर-पूर्व के आदिवासी बहुल राज्यों में राम कथा के कई संकेत मिलते हैं। आदिवासी समाज की 'कर्वी रामायण' इस दृष्टि से विचारणीय है। भारत में आरण्यक राम की अनेक छवियाँ उकेरी गई हैं। इन सबके माध्यम से राम को मर्यादा पुरुषोत्तम माना गया है और रामराज्य को आदर्श राज्य। यह कथा मातृ-पितृ-भक्ति, वात्सल्य, भ्रातृप्रेम, सतीत्व, राजा-प्रजा संबंध, आस्तिक्य भाव, संतत्व अर्थात् परिपूर्ण ''मानुष भाव'' का प्रतिमान बन गई है। वस्तुतः सनातन, शाश्वत मानवीय मूल्यों को स्थापित करने के कारण यह राम कथा आज भी विशेष रूप से प्रासंगिक मानी जा रही है।

लेखक-प्रो० सूर्य प्रसाद दीक्षित

सनातन धर्म के मूल संस्कारों को पुनर्स्थापित करने वाले महाराजा विक्रमादित्य

सर्वेश चन्द्र द्विवेदी
प्रभारी निदेशक, राष्ट्रधर्म प्रकाशन लि., लखनऊ

भारतवर्ष विश्व का सबसे पुरातन सनातन धर्म संस्कृति का देश रहा है। अतः युगानुरूप संस्कारों में क्षरण व वृद्धि होती रही। वर्तमान समय कलियुग में भी हिन्दू सनातन धर्म संस्कृति का आधार संस्कार ही है।

संस्कार

संस्कारौ संस्कृतं यदयन्मेध्यमत्र तदुच्यते।
असंस्कृतं तु यल्लोके तद मे ध्यंप्त कीर्त्यते।।
अतः संस्कारकरणो क्रियतामुद्यमो बुधैः।
शिक्षयोषधिमिनित्यं सर्वथा सुख वर्धनः।।

अर्थात् संस्कारों से संस्कृति ही पवित्र तथा असंस्कृत को अपवित्र कहते हैं।

संस्कारणं गुणन्तराधान संस्कार- अन्य गुणों के आधान को संस्कार कहते हैं। जिसे करने से शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से चारों पुरुषार्थों धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति हेतु संतान योग्य होती है। इसलिए परिवार में संस्कारों का करना मनुष्यों को अति आवश्यक है। प्रमुखतः द्विजातियों को आवश्यक है जिन्हें द्विज कहा है।

आजकल इसकी उपेक्षा यह कहकर की जा रही है कि यह अवैज्ञानिक तथा पाखण्ड है। ब्राह्मणों का धन्धा है। कहा गया जीवात्मा अजर अमर तथा नित्य है यही सूक्ष्म शरीर जन्म जन्मान्तरों के संस्कारों-वासनाओं का वाहक होता है। शुभ तथा अशुभ दोनों प्रकार के संस्कार होते है। जब जीवात्मा दूसरे शरीर में प्रवेश करता है तो उसकी नयी परिस्थिति के भी बहुत से शुभाशुभ प्रभाव मिलते हैं। उनमें बुरे प्रभावों को अभिभूत करने तथा शुभ प्रभावों को उन्नत करने के लिए संस्कारों तथा स्वस्थ, स्वच्छ, सात्विक, पवित्र वातावरण की परम आवश्यकता है।

संस्कार कुल, गोत्र व स्थान, क्षेत्र विशेष के आधार पर कुछ अन्य भी होते हैं लेकिन वह वेद, शास्त्र सम्मत नहीं कहे जाते। गीता में भी कहा गया है - जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् भवेत् द्विजः।

अर्थात् लोग जन्म से शूद्र होते हैं लेकिन संस्कार द्वारा द्विज हो जाते हैं। अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य संस्कार के माध्यम से मिलने वाली शिक्षा से ही ज्ञान, रक्षा, व्यवसाय (अर्थ) कार्य में निहित होते हैं। अतः जन्मना ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र वगैर संस्कार के शूद्र ही है।

संस्कार के बाद भी यदि कर्म शूद्र या वैश्य या क्षत्रिय के करने पड़े तो जो जिस कार्य को करेगा, उसकी उस कार्य की प्रधानता रहेगी, यदि संस्कार जन्य कर्म नहीं किये तो।

अतः कर्म की प्रधानता होने से शुभ कर्म से ही सुख व शान्ति प्राप्त होती है, जो (1) आध्यात्मिक (2) आधिभौतिक (3) आधिदैविक तीन प्रकार की होती है।

चार पुरुषार्थों में धर्म, अर्थ, काम का आधार शुभ कर्म ही है, तभी मोक्ष अर्थात् सुख-शान्ति प्राप्त होती है।

पुरा कल्पे समुत्पन्ना भूर्भुवः, स्वः सनातनाः।
महाव्याहृतयस्तिस्रः सर्वाशुभनिबर्हणाः।

प्राचीनकाल में सभी प्रकार के अमंगलों को दूर करने

वाली 'भू', 'भुवः' तथा स्वः यह तीन सनातन महाव्याहतियाँ समुद्भूत हुई।

सर्वेषामेव भूतानां वेदश्चक्षः सनातनम्। सभी प्राणियों के लिए वेद सनातन नेत्र रूप हैं।

सर्वलोकैकनिर्माता सर्वलोकैक रक्षिता।
सर्वलोकैक संहर्ता सर्वात्माहं सनातनः।।

मैं ईश्वर (शिव) सनातन सर्वात्मा सभी लोकों का एकमात्र निर्माण करने वाला। सभी लोकों का एक अद्वितीय रक्षक और सभी लोकों का एकमात्र संहार करने वाला हूँ।

अतः सनातन को जानना तदानुरूप कर्म धर्म के अनुरूप करना, कराना इसका एकमात्र रास्ता संस्कार ही है, जिसे अपनाना परम कर्तव्य है।

विक्रमादित्य संवत्सर निर्माता

भारत वर्ष के बहुत बड़े भूभाग में महाराजा विक्रमादित्य जी द्वारा शुरू किया गया संवत्सर हिन्दू समाज में पारिवारिक संस्कारों तथा व्यापारिक कार्यों, ज्योतिष कालगणना में प्रयोग होता है। कलियुग में यीशु के जन्म के 57 वर्ष पूर्व विक्रम संवत्सर का प्रारम्भ अवन्तिका अर्थात् उज्जयिनी के सम्राट के रूप में शुरू हुआ जो विदेशी शक आक्रान्ताओं पर प्राप्त ऐतिहासिक विजय से भी जुड़ा हुआ है।

ज्ञातव्य है कि भारत में संस्कार, शिक्षा, धार्मिक अनुष्ठान, व्रत, उपवास, यज्ञ आदि शुभ कर्म कालगणना के आधार पर ग्रह, नक्षत्र आदि को देखकर शुभ कर्म, तीर्थ आदि किये जाते हैं, को महत्व देकर महाराज विक्रमादित्य जी ने तीर्थों, पुरियों व मन्दिरों के पुनर्निर्माण में प्रभावी भूमिका निभायी थी, जो आज भी इतिहास का अंग बना हुआ है।

अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्ष दायनी।।

सप्त पुरियों में उज्जैन की गणना होती है। जो मोक्ष को देने वाली है।

तीर्थ नदियों के संगम, वन, पर्वतों का महत्व है अतः चार धाम पुरी (कांची), शृंगेरी (रामेश्वरम्), द्वारिका, बद्रीधाम का महत्व है तो धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति हेतु कालगणना समय, तिथि, वार, स्थान का भी महत्व है। इसलिए कालगणना का संस्कार देने हेतु उक्त सभी का महत्व समझकर सनातन धर्म संस्कृति को पुनः जाग्रत कराने में सम्राट विक्रमादित्य का बड़ा योगदान रहा है। इनमें सोलह संस्कारों की पुनर्स्थापना भी शामिल है।

महाराजा विक्रमादित्य ने नदी के घाटों, मन्दिरों का पुनर्निर्माण तीर्थस्थलों को विकसित करने की अहम भूमिका निभायी थी। अतः सनातन धर्म तथा उसके मूल संस्कार को जानने की महती आवश्यकता है। वैदिक ज्ञान परम्परा में ब्रह्म, जीव व माया को सनातन कहा है।

आत्मायः केवलः स्वस्थः शान्तः सूक्ष्मः सनातनः
अस्ति सर्वान्तरः साक्षाच्चिन्मात्रस्तमसःपरः।।
सोऽन्तर्यामी स पुरुषः स प्राणः स महेश्वरः।
स कालोऽग्निस्तदव्यक्तं स एवेदमिति श्रुतिः।।

जो आत्मा अद्वितीय, स्वस्थ, शान्त, सूक्ष्म, सनातन, सभी का अन्तरतम साक्षात चिन्मात्र और तमोगुण से परे है। वही (आत्मा) अन्तर्यामी है, पुरुष है, यही प्राण है, वही महेश है। वही काल तथा अग्नि है और वही अव्यक्त ऐसा श्रुति का कथन है।

सर्व लोकैक निर्माता सर्वलोकैक रक्षिता।
सर्वलोकैक संहर्ता सर्वात्माहं सनातनः।।

मैं सनातन सर्वात्मा सभी लोकों का एकमात्र निर्माण करने वाला, सभी लोकों का एक अद्वितीय रक्षक और सभी लोकों का एक मात्र संहार करने वाला हूँ। भगवान शिव कहते हैं-

आश्रमाणां च गार्हस्थमीश्वराणां महेश्वरः।

आश्रमों में गृहस्थाश्रम और ईश्वरों में महेश्वर हूँ। पुराण तथा धर्मशास्त्र वेदों के उपवृंहण हैं, विस्तार हैं। एक से ब्रह्म का विशेष ज्ञान होता है। दूसरे से धर्म का ज्ञान होता है। धर्म की जिज्ञासा करने वालों के लिए धर्म शास्त्र श्रेष्ठ प्रमाण कहा गया और ब्रह्म ज्ञान के लिए पुराण उत्कृष्ट है। वेद से अतिरिक्त अन्य किसी से धर्म का तथा वैदिक ब्रह्म-विद्या का ज्ञान नहीं होता, इसलिए द्विजातियों

को धर्मशास्त्र तथा पुराण पर श्रद्धा रखनी चाहिए। गीता में ब्राह्मण कर्म का कथन है-

शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्म कर्म स्वभावजम।।

अतः संस्कार में सहायक होगा ब्रह्म कर्म। धर्म के परिज्ञान के लिए वेद आश्रय ग्रहण करना इससे धर्म सहित ज्ञान परमब्रह्म प्रकाशित हो जाता है। यदि सभी समाज परिवार में संस्कारों के प्रति जागरूक हो जाये तो कार्य संस्कृति, धर्म संस्कृति, कर्त्तव्यपरायणता होने लगे तो पाप कर्म, अपराध स्वतः कम होंगे। देश पुनः विश्व बन्धुत्व व गुरु की भूमिका में आ जायेगा।

संस्मरन्ति च ये तीर्थ देशान्तर गता जनाः।
तेषां च सर्व पापानि नाशयामि द्विजोत्तमाः।।
श्राद्धं दानं तपो होमः पिण्डनिर्वयण तथा।
ध्यानं जपशनियमः सर्वमत्राक्षयं कृतम्।।

हे द्विजोत्तमों, दूसरे देशों में गये हुए जो लोग इस तीर्थ का स्मरण करते हैं उनके सभी पापों को मैं नष्ट कर देता हूँ। यहाँ किया हुआ श्राद्ध, दान, तप, होम, पिण्डदान, ध्यान, जप तथा नियम सर्वदा के लिए अक्षय हो जाता है।

तस्मात सर्वप्रयत्नेन द्रष्टव्यं हि द्विजातिभिः।
देवदारु वनं पुण्यं महादेव निषेवितम्।।56।।
यत्रे स्वरो महादेवो विष्णुर्वा पुरुषोत्तमः।
तत्र सन्निहिता गंगा तीर्थोन्यायते नानि च।।57।।

इसलिए द्विजातियों को महादेव द्वारा सेवित पुण्य देवदारु-वन का सभी प्रयत्नों द्वारा दर्शन (सेवन) करना चाहिए। जहाँ ईश्वर महादेव अथवा पुरुषोत्तम विष्णु रहते हैं वहाँ गंगा सभी तीर्थ तथा सभी मन्दिरों की भी स्थिति होती है।

कहा गया कि सतयुग में ब्रह्म क्षेत्र, त्रेता में प्रभाष क्षेत्र, द्वापर में कुरुक्षेत्र तथा कलियुग में गंगा सबसे बड़े तीर्थ माने गये हैं।

अतः मानव जीवन के लिए तीर्थ, मन्दिर, शिक्षा तथा संस्कार का विशेष स्थान रहा जो पुरी, नदी, वन, पर्व में विशेष महत्व रखते हुए परिवार समाज को संस्कार देने व दिलवाने का कार्य होता रहा। संस्कार से ही संस्कृति अक्षुण्ण बनी हुई है। विक्रमादित्य जी जैसे महाराजाओं का संस्कृति संर्वधन में बड़ा योगदान रहा है। वर्तमान समय में केन्द्र की मोदी जी की सरकार तथा प्रदेश में योगी जी की सरकार इस दिशा में प्रभावी कार्य कर रही है, जो प्रशंसनीय है।

लेखक-श्री सर्वेश चन्द्र द्विवेदी

नववर्ष चेतना समिति

अत्याचार की पीड़ा ने घर पर विराजमान कराया श्रीरामदरबार

धर्मेन्द्र सक्सेना
सम्पादक, सेहत टाइम्स

साढ़े पांच सौ वर्ष के लम्बे संघर्ष और प्रतीक्षा के बाद अयोध्या में प्रभु श्रीराम के जन्मस्थान पर भव्य मन्दिर के पुनर्निर्माण का भक्तों का सपना पूरा हो चुका है। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा हो चुकी है। गर्भ-गृह पर अपने आराध्य के भव्य मन्दिर की प्रतीक्षा पिछली कई पीढ़ियों से असंख्य भक्त कर रहे थे। मुस्लिम आक्रांताओं ने जहां रामजन्मभूमि पर बने मन्दिर के स्थान पर मस्जिद बनवाकर भक्तों की आस्था को ठेस पहुंचायी थी, वहीं आजाद भारत में वर्ष 1990 में जब जन्मभूमि आंदोलन से जुड़े निहत्थे राम भक्तों पर तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने गोलियां चलवायीं तो अयोध्या में सरयू का जल रक्त से लाल हो गया था। हालात ऐसे थे कि अयोध्या की गलियों में गोलियों की तड़तड़ाहट, लाठियां, सुरक्षा बलों के बूटों की आवाजें, राम का नाम लेने पर रोक, यहां तक कि अर्थी ले जाते समय सनातनी परम्परा के अनुसार लिए जाने वाले राम के नाम को लेना भी दुश्वार हो गया था। इस घटना से प्रभु श्रीराम के भक्त अत्यधिक व्यथित हो गए। उन्हें लगा कि विदेशी आक्रांता द्वारा हिन्दुओं की भावनाओं को रौंदते हुए किये गए इस कुकृत्य के खिलाफ आवाज उठाते हुए अपने आराध्य का मन्दिर पुनः स्थापित करने की मांग करना क्या गुनाह है? श्रीरामजन्मभूमि पर मन्दिर बनने की अभिलाषा कब पूरी होगी? इस पीड़ा को जिन राम भक्तों ने अनुभव किया था, उनमें एक हैं लखनऊ के वरिष्ठ होम्योपैथिक चिकित्सक, गौरांग क्लीनिक एंड सेंटर फॉर होम्योपैथिक रिसर्च के संस्थापक डॉ. गिरीश गुप्ता।

राम भक्तों पर गोलियां चलने व दूसरे अत्याचारों के सारे प्रकरणों से अत्यंत व्यथित डॉ0 गिरीश बताते हैं कि ''कुछ माह बीतने के बाद 15 अगस्त, 1991 को जानकीपुरम में उनके नवनिर्मित मकान का गृह प्रवेश हुआ, अयोध्या में राम मंदिर न बन पाने की छटपटाहट मन में बराबर बनी हुई थी, अचानक मेरे और मेरी पत्नी सीमा गुप्ता के मन में आया कि अयोध्या में मंदिर बनने में अभी बहुत सारी राजनीतिक एवं कानूनी अड़चनें हैं इसलिए क्यों न हम

प्रतीकात्मक रूप से मंदिर की स्थापना अपने घर पर ही कर लें।'' बस, फिर इसके बाद इस दम्पत्ति ने मूर्तियां लाने के लिए जयपुर का रुख किया एवं स्थानीय होम्योपैथिक मेडिकल कालेज के प्राचार्य डॉ. गिरेन्द्र पाल जी के प्रयास से अति सुंदर साढ़े तीन फीट की मूर्तियों वाला राम दरबार लाये। इसके बाद अक्टूबर 1991 में घर पर एक सप्ताह तक मन्दिर की स्थापना का कार्यक्रम चला, जिसमें पूरे

विधिविधान से प्राण प्रतिष्ठा के साथ राम दरबार स्थापित किया गया। कार्यक्रम में अनेक रस्मों का आयोजन किया गया, गाजे-बाजे के साथ भगवान राम की बारात निकली, सीता जी का पैर-पूजन हुआ उनका कन्यादान उसी विधिविधान से किया गया जैसे कि कन्या के विवाह के समय किया जाता है। इस कार्यक्रम में हमारे रिश्तेदार, मित्र एवं पास-पड़ोस के सभी लोग सम्मिलित हुए।

डॉ० गिरीश गुप्ता बताते हैं कि इसके बाद स्थापित राम दरबार की नियमित रूप से सुबह-शाम पूजा, आरती व भोग वे और उनकी पत्नी मिलकर करते रहे। कुछ वर्षों बाद लोगों ने मुझे राय दी कि ऐसा नियम है कि प्राण प्रतिष्ठित मूर्तियों की विधिवत पूजा हमेशा ही करनी होती है, ऐसे में आगे चलकर अगर बच्चे इस सेवा को न निभा पाये तो यह ईश्वर का अपमान होगा, इसलिए उचित होगा कि इन मूर्तियों को किसी मंदिर में स्थापित करा दें, जहां इनकी रोज पूजा होती रहे। उन्होंने बताया कि इसके बाद अलीगंज स्थित पुराने हनुमान मंदिर के पुजारी श्री गोपाल दास जी से बात हुई तो उन्होंने इसे अयोध्या में उनके द्वारा बनवाये जा रहे मंदिर परिसर में स्थापना की सलाह दी, लेकिन लगभग 22 साल से राम दरबार की सेवा करती आ रहीं पत्नी का मन विचलित होने लगा कि इतनी दूर हम लोग जल्दी-जल्दी कैसे दर्शन कर पायेंगे तो पुजारी बाबा जी ने लखनऊ स्थित सुनारन बाग, चांदगंज गार्डन में बने प्राचीन हनुमान मंदिर में राम दरबार को स्थापित करने का सुझाव दिया।

डॉ. गिरीश बताते हैं कि मई 2013 में पूरे विधि-विधान से गाजे-बाजे के साथ राम बारात निकली और हमारी क्लीनिक के पास ही चांदगंज गार्डन में बने हनुमान मंदिर में रामदरबार की स्थापना कर दी गयी। लगभग एक सप्ताह तक होने वाले पूर्ण प्राण प्रतिष्ठा समारोह में वर्तमान

विधायक डॉ. नीरज बोरा, पूर्व मुख्य सचिव श्री अतुल गुप्ता, पूर्व मुख्य आयकर आयुक्त श्रीमती उषा गुप्ता, लखनऊ के महापौर डॉ. दिनेश शर्मा, कई वरिष्ठ पुलिस अधिकारी, चिकित्सक बन्धु, अधिवक्ता गण, मित्र व रिश्तेदार के साथ-साथ भारत विकास परिषद व नववर्ष चेतना समिति के कई सम्मानित सदस्य गण, कुल मिलाकर लगभग 500 भक्त सम्मिलित हुए थे। तब से राम दरबार की अनवरत पूजा-अर्चना हो रही है तथा प्रत्येक मंगलवार सायं यहां सुंदरकांड का पाठ होता है, जिसमें डॉ. गुप्ता की पत्नी श्रीमती सीमा गुप्ता जाती हैं और सुंदर कांड पाठ में सम्मिलित होती हैं। इस मौके पर बड़ी संख्या में भक्त जुटते हैं।

डॉ. गिरीश कहते हैं कि अब अयोध्या में भगवान राम का भव्य मंदिर बनने का सपना पूरा हो चुका है और इस छोटे से मंदिर में रामलला की वही छवि दिखती है जिसको संजोने में 34 वर्ष लग गए। जय श्री राम।।

लेखक-श्री धर्मेन्द्र सक्सेना

एक आस्था एक विश्वास

डॉ० संगीता शुक्ला
सह-सम्पादक, नवचैतन्य,
आचार्य, नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ।

श्री राम के बारे में कहा जाता है कि 'रामो विग्रहवान् धर्मः।' यदि धर्म का हमें स्वरूप देखना है तो वह श्री राम जैसा होगा अर्थात् श्रीराम साक्षात् धर्मस्वरूप हैं। उनके जीवन से हमें धर्मपालन कैसे करना है यह समझ सकते हैं, सीख सकते हैं। स्वामी विवेकानंद कहते थे, 'भारत राष्ट्र का प्राण धर्म है और धर्म का स्वरूप श्री रामचन्द्र हैं।' इसलिए श्रीराम इस भारत राष्ट्र के प्राण हैं।

श्री रामचन्द्र जिन्होंने अपनी नितांत कर्तव्य परायणता से, वचनबद्धता से पूरे जीवन को धन्य किया, धर्मस्वरूप बनाया उसी प्रकार हम भी अपने जीवन को धन्य करेंगे।

वाल्मीकि ने श्रीराम को विविध गुणों का भण्डार बताया है। वे गंभीरता में समुद्र के समान, धर्म में हिमालय के समान, पराक्रम में विष्णु के समान हैं और क्षमाशीलता में पृथ्वी के समान हैं। आदि कवि वाल्मीकि के पश्चात विभिन्न भाषाओं में श्रीराम के आदर्श चरित्र का विविध प्रकार से वर्णन हुआ है। वस्तुतः राम का चरित्र मानव का हृदय और निःश्रेयस दोनों का उत्थान करता है। राम के लौकिक चरित्र और उनकी विविध लीलाओं के द्वारा समाज के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत होता है, जो भारतीय संस्कृति के लोक कल्याण की भावना का प्रतिपादक है। इसके साथ ही भक्ति की प्रतिष्ठा भी स्थापित होती है। प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में सत असत प्रवृत्तियों का द्वंद निरंतर चलता रहता है, जिससे मुक्ति का उपाय है ईश्वर भक्ति और सम्यक् ज्ञान। इसीलिए कहा जाता है कि श्रद्धावान् लभते ज्ञानम् अर्थात श्रद्धावान ही ज्ञान प्राप्त कर पाता है।

मिनिंडर से लेकर बाबर और फिर औरंगजेब तक क्रमशः तमाम विदेशी आक्रमणकारियों ने अयोध्या के माध्यम से भारतीयों के मन को आहत किया। अपने सामने अपने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के मंदिर को टूटते देखने से अधिक पीड़ादायी और क्या हो सकता है। 22 जनवरी, 2024 को श्री राम मंदिर का पुनः निर्माण और उनकी मूर्ति की मंदिर में पुनः स्थापना नये युग के आगमन का प्रतीक है और एक ऐतिहासिक घटना है। यह एक मंदिर में देव की प्राण प्रतिष्ठा ही नहीं है बल्कि भारतीय स्वाभिमान की पुनः प्रतिष्ठा है। यह इस देश के चरित्र का अभीष्ट और उन्नयन का मापदण्ड है।

हिन्दू दृष्टि से राम कथा मात्र एक कहानी नहीं है, बल्कि भारतीय संस्कृति का आधार है। राम कथा मित्रों, परिवार जनों और पड़ोसियों के साथ बैठकर आदर पूर्वक सुनी जाती है। राम कथा का वर्णन करने वाले को कथावाचक कहते है और कथावाचक के सहयोग के लिए विभिन्न वाद्ययन्त्रों एवं गीतों का प्रयोग किया जाता है। समय के साथ श्री राम के गुणगान करते हुए कई राम कथाएं लिखी गयी। तुलसीदास कृत रामचरितमानस उनमें से एक है। कथा के प्रारम्भ में मंगलाचरण का उच्चारण कर अपने इष्ट देव भगवान विष्णु से भक्त प्रार्थना करते है। महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में वर्णन किया है कि लव और कुश ने इसे राम के समक्ष गाया था। राम कथा धर्म, अर्थ और काम गुणों की संरक्षक है। इस कथा के वाचन, पाठन एवं श्रवण करने से धर्म अर्थ एवं काम के महत्व और उसके संयमित उपयोग की पद्धति को समझ सकते हैं।

भारत में राजनीतिक संगठन का प्रारम्भ छोटे-छोटे राज्यों की निम्नतम इकाई ग्राम की व्यवस्था के लिए नियुक्त 'ग्रामणी' के साथ हुआ था, धीरे-धीरे क्रमशः पुर, नगर और दुर्गों का निर्माण हुआ। मनु, कामंदक, शान्ति पर्व और अर्थशास्त्र में राजनीति का सूक्ष्म और विस्तृत वर्णन मिलता है। उससे बहुत पहले वाल्मीकि की रामायण में भी राजनीति के तत्व दिखाई देते हैं। ऐतरेय ब्राहम्ण में 8 प्रकार की शासन पद्धतियों का उल्लेख मिला है। एक राजा से यह अपेक्षा की गई कि वह जन की रक्षा जनमत के अनुरूप करेगा। जनमत को ध्यान में रखकर ही भारतीय ऋषियों ने राज्य के शासन की कई पद्धतियों के उदाहरण दिये हैं, ऐसी ही एक पद्धति है साम्राज्य। यहां जिस साम्राज्य शब्द का प्रयोग किया गया है उसका अर्थ इस्लाम के अनुयायियों और ईसाइयों के साम्राज्यवाद की अवधारणा से भिन्न है। शत्रु को परास्त करना और उसे आर्य विधान देना वैदिक ऋषियों की दृष्टि में साम्राज्यवाद था। विजेता का दायित्व पराजितों की उन्नति और उनको अधिक उत्तम शासन विधान देना होता था। इस अवधारणा का अवलम्बन अशोक मौर्य, पुष्यमित्र शुंग और राजा विक्रमादित्य ने भी किया था।

इन सभी साक्ष्यों में समान रूप से एक बात मिलती है कि राजा का सर्व प्रमुख कर्तव्य धर्म प्रजा रंजन था। इस धर्म का पालन राजा जनक, दशरथ, श्रीराम ने आदर्श रूप में किया। लोक प्रिय राजा को प्रजा का इतना अधिक सहयोग रहता था कि राजा का पद त्याग या निर्वासन राजकीय सुख समृद्धि में विशेष बाधक नहीं होता था। इसीलिए राजा दशरथ के आकस्मिक मरण और राम के दीर्घ वनवास का प्रभाव अयोध्या की सुख समृद्धि पर नहीं पड़ा। वस्तुतः रामायण काल में लोकनीति और राजनीति में कोई अन्तर नहीं था और दोनों का आधार धर्म था। धर्म का आशय रिलीजन से कदापि नहीं है। भारतीय शास्त्रों में धर्म को परिभाषित करते हुए कहा गया है 'धर्मों धारयते' प्रजा' अर्थात धर्म प्रजा एवं समाज को धारण करता है। धर्म वह आचार-विचार एवं आदर्श है जिससे समाज एवं राष्ट्र एकजुट समृद्ध एवं सुदर्श रहता है। धर्म सनातन आर्य जीवन पद्धति का केन्द्र बिन्दु है। धर्म और राष्ट्र एक है। धर्म के लिए राष्ट्र और राष्ट्र के लिए धर्म महत्वपूर्ण है। धर्म ही संस्कृति है जो समष्टि के लिए व्यष्टि के त्याग का आदर्श सिखाता है और यही योग्य व्यक्ति का दायित्व भी होता है। मंदिर का पुनः निर्माण अपनत्व से परिपूर्ण एवं आनन्दप्रदायी राजनीति में लोक आस्था का परिचायक है। राजनीति में केवल दो तत्व या शक्तियां अति महत्वपूर्ण है-चरित्र तथा दण्ड। ये दोनों ही अन्योन्याश्रित हैं। चरित्र की रक्षा दण्ड से होती है और दण्ड के समुचित प्रयोग का आधार चरित्र है। इतिहास के पन्नों को पलटने से स्पष्ट होता है कि जिस राज्य में चरित्र बल होता है और दण्ड का सम्यक प्रयोग होता है उसका स्थायित्व शताब्दियों तक बना रहता है।

वेदानुशासन से संयमित होकर निष्काम भाव से कर्तव्य निर्वहन की प्रवृत्ति होने से क्षुद्र स्वार्थ बलवती नहीं हो पाता। श्रीराम धर्मज्ञ, क्षमाशील, धैर्यवान, जितेन्द्रिय, मृदु, कृतज्ञ, स्थिरचित्त, सत्यवादी, स्नेही, शीलवान आदि नैतिक गुणों से युक्त थे। वे शासन संचालन के नियमों के ज्ञाता थे। वे मंत्र को गुप्त रखने की क्षमता वाले, प्रजापालक, धनोपार्जन के उपायों एवं उसके सदव्यय के ज्ञाता थे। राजा राम ने ऋषियों के यज्ञ की रक्षा के लिए युद्ध किये और संत्रस्त को सुरक्षा देने के लिए यज्ञ किये और प्रवंचना से अपहृत अपनी भार्या को प्राप्त करने के लिए आक्रमण किया। पश्चिमी इतिहास में ऐसा एक भी उदाहरण ज्ञात नहीं होता जहां किसी भी देश पर किसी भी कारण से आक्रमण किया गया हो और विजित देश को संत्रस्त करने के बजाए उस देश का कल्याण किया गया हो। ये भारतीय वैदिक ऋषियों द्वारा दी गई वैदिक दृष्टि थी। जिसे राजा राम के द्वारा आदर्श उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया था, जिसके कारण राम ने लंका पर विजय की किन्तु उसके निवासियों का शोषण न कर उसके कुशल सुशासन के लिए विभीषण को राज्य का उत्तरदायित्व आदर पूर्वक सौंपा। इसी आदर्श के चलते कालान्तर में महाराजा विक्रमादित्य ने कश्मीर में व्याप्त अराजकता को दूर करने के लिए अपने प्रतिनिधि को भेजकर सुशासन स्थापित किया। महाराजा विक्रमादित्य ने स्वयं कश्मीर पर अधिकार नहीं किया केवल उसके सुशासन में सहयोग दिया।

राम के चरित्र की एक और विशेषता तब दिखती है

जब भरत और दूसरे संत राजा दशरथ की मृत्यु के बाद श्रीराम को अयोध्या लौटने के लिए मनाने का प्रयास करते हैं और राम से कहते हैं कि राम ने अपने पिता से वादा किया था और अब उनकी मृत्यु के बाद वे उस वादे से बंधे नहीं हैं, लेकिन राम सवाल करते हैं कि अगर प्रतिज्ञा को इतनी आसानी से तोड़ दिया गया तो प्रतिज्ञा पर लोगों का भरोसा कैसे कायम रहेगा। ये सभी राष्ट्रों के लिए एक सीख है कि वे समझौतों का पालन करें और अपने उत्तरदायित्व पूरे करें। इस तरह से आज भी अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में राम राज्य के सिद्धान्त प्रासंगिक हैं जहां हम नियम आधारित व्यवस्था के लिए प्रयास कर रहे हैं। वर्तमान में वैश्विक व्यवस्था बदल रही है, ऐसे में नियम आधारित व्यवस्था की जरुरत बढ़ गई है।

श्री राम-रावण संघर्ष में एक समय जब रण-स्थल में श्रीराम के अनुज लक्ष्मण मरणासन्न मूर्छित पड़े हुए थे तब शत्रु पक्ष से आये सुषेण वैद्य की बात पर विश्वास करना और हनुमान जी को दक्षिण से उत्तर ठीक विपरीत दिशा में औषधि लाने के लिए भेजना श्री राम के स्वभाव में दूसरे के प्रति विश्वास की पराकाष्ठा का प्रमाण है। साथ ही यह प्रसंग वैद्यों के मानवता के संरक्षक स्वरूप को भी रेखांकित करता है। संरक्षक भगवान श्रीराम का बौद्धिक कौशल यह है कि वे कभी भी मिथ्या धारणा और कल्पना में न रहकर यथार्थ की भूमि पर भावना का रथ चलाते हैं। लोक कल्याण उनका लक्ष्य होता है। व्यक्तिगत लाभ-हानि उनके चिंतन का विषय कभी नहीं रहा। किसी से किसी तरह का बन जाने की दुराशा के अभाव के कारण श्रीराम के जीवन में कभी कोई निराशा का क्षण नहीं आया। उन्होंने किसी एक पात्र से किसी दूसरे पात्र की तरह बन जाने की आशा नहीं की है। ऐसे राम की स्मृति को सजीव करने का अर्थ है, उन्हें जीवन में उतारना। राम हमाारे पाथेय हैं और उनके मार्ग पर चल कर ही हम आगे बढ़ सकते हैं। राम जो सारे रिश्ते निभाते हैं, पर कभी न्याय पथ से विचलित नहीं होते।

स्वयं को निमित्त मानकर ईश्वर प्रदत्त भूमिकाओं को स्वीकार कर निःस्वार्थ भाव से उनका पालन करने से ही रामराज्य आ सकेगा।

राष्ट्र के नागरिकों के लिए केवल उन्नत भौतिक सुविधाएं ही पर्याप्त नहीं होतीं, उन्हें अपनी आत्मिक सुख शांति के लिए संस्कृति एवं स्वाभिमान के प्रेरक स्थल भी चाहिए होते हैं। राम मंदिर एक ऐसा ही स्थल है। प्राण-प्रतिष्ठा समारोह केवल आस्था का उत्सव नहीं है। यह अन्याय के प्रतिकार के साथ भारतीय सभ्यता और स्वाभिमान के गौरव गान का भी उत्सव है। इस प्रकार राम मंदिर का पुनर्निर्माण न केवल भारत के प्रत्येक जन के लिए वरन समस्त विश्व के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करता है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सन्देश को भी रेखांकित करता है।

लेखिका- डॉ० संगीता शुक्ला

नववर्ष चेतना समिति

श्रीरामजन्मभूमि मन्दिर की नींव विशिष्ट है

नववर्ष चेतना समिति ने अपनी आमुख पत्रिका नवचैतन्य के 2024 अंक के संदर्भ में पत्रिका के सह-संपादक इंजी० हेमंत कुमार जी को श्रीरामजन्मभूमि मंदिर पुनर्निर्माण की धरातलीय जानकारी जुटाने के लिए अयोध्या भेजा था। जिसके क्रम में उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण जानकारियाँ और फोटोग्राफ एकत्र किए। श्री हेमन्त कुमार ने श्रीरामजन्मभूमि मंदिर निर्माण के तकनीकी पक्ष पर केन्द्रित एक पुस्तक लिखी है। यह पुस्तक 'चित्रों के झरोखे से श्रीरामजन्मभूमि मंदिर निर्माण' नाम से श्री रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के दिन 22 जनवरी, 2024 को प्रकाशित हुई। इस पुस्तक का एक लेख यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है। -सचिव नववर्ष चेतना समिति

इं० हेमन्त कुमार
उप-सम्पादक, नवचैतन्य,
संचालक-भवन निर्माण तकनीक जनजागरण अभियान,
ग्राम-फीना, बिजनौर।

श्रीरामजन्मभूमि मंदिर सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक दृष्टि से तो अत्यंत महत्वपूर्ण है ही इसके अलावा यह परम्परागत और प्राचीन भारतीय स्थापत्य कला का भी उत्कृष्ट उदाहरण है। श्रीराम मंदिर के निर्माण में पारम्परिक निर्माण विधि को प्राथमिकता दी गयी है, परन्तु आधुनिक तकनीकों का भी सम्यक प्रयोग किया गया है, इस बात का सबसे अच्छा उदाहरण इसकी नींव है।

श्रीरामजन्मभूमि मंदिर का भवन एक भारी संरचना के अन्तर्गत आता है, क्योंकि इसमें खम्भे, बीम और छत सभी वजनी पत्थर से बने हैं। मंदिर संरचना के भारी वजन से कहीं नींव के नीचे की मिट्टी धंस न जाये, इसलिए निर्माण से पहले मृदा की भार सहने की क्षमता ज्ञात करने के लिए निर्माण स्थल पर आधुनिक अभियन्त्रण विधि से परीक्षण किया गया। प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर नींव का निचला हिस्सा रोलर कॉम्पैक्टेड कंक्रीट से बनाया गया और इसके ऊपर ग्रेनाइट पत्थर की गढ़ी शिलाओं से चटाई नींव बनाई गयी।

रोलर कॉम्पैक्टेड कंक्रीट/आर.सी.सी.- इसे सामान्य कंक्रीट की तरह ही पत्थर की गिट्टी, बालू, पानी और सीमेंट को आपस में मिलाकर बनाया जाता है। ठोस बनाने के लिए सामान्य कंक्रीट की कुटाई वाईब्रेटर नामक मशीन से करते हैं, परन्तु रोलर कॉम्पैक्टेड कंक्रीट की कुटाई कम्पन पैदा करने वाले भारी रोलर द्वारा की जाती है। श्रीरामजन्मभूमि मंदिर की नींव में जो रोलर कॉम्पैक्टेड कंक्रीट है, उसकी एक विशेषता और है कि इसमें विद्युत संयंत्रों के जले कोयले की छनी हुई राख तथा स्टोन डस्ट को भी पत्थर की गिट्टी, बालू, पानी और सीमेन्ट के साथ

वांछित अनुपात में मिलाकर बनाया गया है। अच्छी तरह कुटी हुई इस कंक्रीट का घनत्व 2300 से 2400 किलोग्राम प्रति घन मीटर होता है। रोलर कॉम्पैक्टेड कंक्रीट को इंजीनियरिंग फिल के नाम से पुकारा जा रहा है।

रोलर कॉम्पैक्टेड कंक्रीट में सरिया या धातु की छड़ नहीं डाली जाती। सामान्य सीमेंट मसाले की तुलना में इसमें पानी कम मिलाया जाता है इसलिए इस मसाले की सभी सामग्रियों को मिलाने के बाद यह गाढ़े और भुरभुरे हलुए की तरह दिखाई देती है। मंदिर में इसे एक-एक फुट (बारह इंच) मोटी परतों में धरातल पर बिछाकर रोलर से दबाया गया। हर लेयर/परत पर रोलर को तब तक चलाया जाता था जब तक कि इसकी बारह इंच मोटी परत दबकर दस इंच न हो जाए। रोलर चलाने के बाद कंक्रीट को जमने के लिए तीन से चार दिनों तक छोड़ दिया जाता है। उसके बाद फिर एक फुट मोटी परत डालकर यही प्रक्रिया अपनाई गई। मंदिर में रोलर कॉम्पैक्टेड कंक्रीट की ऊँचाई लगभग चालीस फीट के आसपास बनाई गई है।

ग्रेनाइट पत्थर के गढ़े हुए शिलाखंडों से बनाई गयी प्लिंथ-रोलर कॉम्पैक्टेड कंक्रीट के ऊपर ग्रेनाइट पत्थर के गढ़े हुए शिलाखंड़ों से एक ऊँची, ठोस और मजबूत भवन-कुर्सी बनाई गई है। ग्रेनाइट पत्थर सबसे मजबूत पत्थरों में से एक है, यह काफी वजनी भी होता है। मंदिर में प्रयुक्त अधिकांश ग्रेनाइट ब्लॉक पांच फीट लम्बे, ढाई फीट चौड़े और तीन फिट ऊँचे हैं। मंदिर की नींव में ग्रेनाइट ब्लॉक्स की कुल सात परत बिछाई गयीं। एक लेयर की ऊँचाई तीन फिट रही। इस प्रकार सात लेयर बिछाने से कुल इक्कीस फीट ऊँची कुर्सी अर्थात प्लिंथ तैयार हुई।

श्रीरामजन्मभूमि मंदिर की नींव में लगे ग्रेनाइट ब्लॉक्स भूकंप की हलचल से अलग-थलग न हों या अपनी स्थिति को न बदलें इसके लिए इन ब्लॉक्स की ऊपरी और निचली सतह में लगभग चार इंच गहरे और लगभग तीन इंच व्यास के छिद्र किए गए हैं। ब्लॉक्स की परत बिछाने के बाद इनकी ऊपरी सतह के छिद्रों में ग्रेनाइट की बेलनाकार कुंजी लगा दी जाती है, जोकि लगने के बाद निचले ब्लॉक से लगभग पौने चार इंच ऊपर निकली रहती है। इस कुंजी का व्यास ब्लॉक्स के छिद्र से तनिक कम रखा जाता है,

ताकि वह छिद्र में आसानी से प्रवेश कर जाए। कुंजी की ऊँचाई लगभग पौने आठ इंच रखी जाती है। फिर ऊपरी परत के ब्लॉक्स इन कुंजियों पर इस प्रकार रखे जाते हैं कि कुंजियों का ऊपर निकला हिस्सा उनकी निचली सतहों में बने छिद्रों में चला जाय। ब्लॉक्स की ऊपरी और निचली सतहों में छिद्र इस नाप-तौल से किये जाते हैं कि इनको बिछाते समय निचली परत के ब्लॉक्स के छिद्र तथा ऊपरी ब्लॉक्स के छिद्र एक रेखा में आ जाएँ। श्रीराम मंदिर की कुर्सी में प्रयोग किए गए ब्लॉक्स की ऊपरी और निचली सतहों में सामान्यतया दो-दो छिद्र किए गए हैं।

लेख स्रोत- चित्रों के झरोखे से श्रीरामजन्मभूमि मन्दिर निर्माण-इं० हेमन्त कुमार

प्रेरक व्यक्तित्व : डॉ0 सूर्यकान्त और उनके अयोध्या संस्मरण

प्रो0 सूर्यकान्त
विभागाध्यक्ष-पल्मोनरी विभाग
किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय

डॉ0 सूर्यकान्त का जन्म एक आध्यात्मिक परिवार में हुआ है। उनके बाबा स्व. श्री गंगा प्रसाद त्रिपाठी व परबाबा स्व0 श्री जमुना प्रसाद त्रिपाठी इटावा जनपद के भागवत के बड़े विद्वान थे। डॉ0 सूर्यकान्त ने वर्ष 1983 में किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय में एम.बी.बी.एस. में प्रवेश लिया था। वर्ष 1986 में जब राम मन्दिर का ताला खुला, उस समय डॉ0 सूर्यकान्त एम.बी.बी.एस. के तृतीय वर्ष के छात्र थे। उस वर्ष हड्डी विभाग के शिक्षक डॉ0 जी0 के0 सिंह के नेतृत्व में एम.बी.बी.एस. के छात्र अयोध्या गए। उसके बाद हर साल यह सिलसिला चलता रहा। डॉ0 सूर्यकान्त का लगभग 4 दशकों से अयोध्या से नाता रहा है। उन्होंने बताया कि पिछले 40 साल में अयोध्या 40 हजार गुना बदल गई है। अयोध्या की हर गली, मोहल्ला में साफ-सफाई के साथ सुंदरीकरण हो रहा है। पहली बार जब प्रभु राम का जन्म हुआ होगा। दूसरी बार जब उनका विवाह हुआ होगा तथा तीसरी बार जब वे रावण को मारकर अयोध्या वापस लौटे होंगे। इससे पहले अयोध्या मात्र इन तीन अवसरों पर ही इतना सजाई गई होगी।

डॉ. सूर्यकान्त ने बताया कि वर्ष 1990 में कारसेवकों पर गोली चलने की घटना हुई। उस समय वहां का जिला अस्पताल बहुत छोटा था। समाचार पत्रों में हमने खबर पढ़ी कि डॉक्टर सभी का इलाज नहीं कर पा रहे थे। ऐसे में हमने वहां जाने की इच्छा जताई। माहौल ठीक नहीं था। बाराबंकी से आगे जाने पर पूरी तरह से रोक लग गयी थी। ऐसे में के.जी.एम.यू. के एनेस्थीसिया विभाग के प्रोफेसर डॉ. नारायण स्वरूप भटनागर ने याचिका की व्यवस्था कराई। इलाज के लिए कोर्ट ने हमें जाने का आदेश अगले ही दिन जारी कर दिया। इसे लेकर हम कुल 12 डॉक्टर वहां जाने के लिए तैयार हो गए। हम लोगों ने कोर्ट का आदेश लिया और वहां पहुंचे। रास्ते में कई जगह वह आदेश सुरक्षाबलों को दिखाना पड़ा। अयोध्या पहुंचने पर हमारे रुकने की वी. आई.पी. व्यवस्था कराई गयी। अयोध्या के अस्पताल में लगभग 70-72 घायल कारसेवक थे जिनके घावों की ड्रेसिंग आदि हम लोग करते थे। जिस आश्रम में हम पहुंचते वहां दो-चार घायल कारसेवक मिल जाते। कई घायलों को तो केजीएमयू रेफर करना पड़ा। वैसे तो सभी चिकित्सकों के लिए रहने व खाने की उत्तम व्यवस्था थी लेकिन इन सभी को लाइन में लगकर खिचड़ी प्रसाद खाने में विशेष आनन्द आता था।

वास्तव में डॉ0 सूर्यकान्त बाल्यावस्था से ही जन सेवा और आध्यात्मिक गतिविधियों में हिस्सा लेते रहे हैं। एम.बी.बी.एस. के द्वितीय वर्ष के छात्र के रूप में 1984 में लखनऊ में आई बाढ़ के समय बाढ़ पीड़ितों को भोजन, वस्त्र व दवा आदि के वितरण में डॉ0 सूर्यकान्त शामिल थे। बाद में पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी की संस्था ''भाऊराव देवरस सेवा न्यास'' में 21 वर्ष (1993 से 2014) तक स्वास्थ्य सचिव, ट्रस्टी एवं कोषाध्यक्ष के रूप में कार्य किया। इस दौरान उन्होंने निःशुल्क नेत्र शिविर, विकलांग शिविर, चिकित्सा शिविर आदि के माध्यम से हजारों लोगों की सेवा व सहायता की। उनकी देखरेख में गरीब लोगों के लिए मुफ्त ओपीडी 21 वर्षों के दौरान

135000 से अधिक रोगी इससे लाभान्वित हुए हैं। उनकी देखरेख में एक साप्ताहिक मोबाइल मेडिकल वैन ओपीडी भी चलाई गई है जिसने 420000 से अधिक लोगों की मदद की है। डॉ. सूर्यकान्त ने इस संस्था के कोषाध्यक्ष के रूप में कार्य करते हुए एस.जी.पी.जी.आई के रोगियों एवं परिजनों हेतु एक रैन बसेरा ''माधव सेवा आश्रम'' का भी निर्माण कराने में सक्रिय भूमिका निभाई। इस रैन बसेरा का उद्घाटन पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री अटल जी ने वर्ष 2002 में किया था।

डॉ. सूर्यकान्त ने उ.प्र. जूनियर डाक्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष (1993-1995) रहते हुए के.जी.एम.यू. में जूनियर डॉक्टर्स व छात्रों द्वारा रक्तदान, निःशुल्क चिकित्सा शिविर आदि सम्पन्न कराये। प्रतिवर्ष 12 जनवरी (स्वामी विवेकानन्द जयन्ती) से 23 जनवरी (नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती) तक विशेष रक्तदान शिविर का आयोजन के.जी.एम.यू. के ब्लड बैंक में किया जाता था। डॉ. सूर्यकान्त प्रतिवर्ष दो बार स्वयं भी रक्तदान करते थे।

इसके साथ ही के.जी.एम.सी./के.जी.एम.यू. की प्रथम गैर सरकारी संस्था ''हरिओम सेवा केन्द्र'' की स्थापना भी 22 जून 1998 को डॉ. सूर्यकान्त के रेस्पिरेटरी मेडिसिन विभाग के कक्ष में हुई। यह संस्था आज भी के.जी.एम.यू. के गरीब रोगियों की दवा आदि से मदद करती है। पिछले पांच वर्षों से डॉ. सूर्यकान्त ''धन्वन्तरि सेवा न्यास'' के अध्यक्ष के रूप में लखनऊ के बहुत से सरकारी अस्पतालों में रोगियों के लिए सेवा कार्य कर रहे हैं। इसके साथ ही 20 अन्य स्वयं सेवी संस्थाओं के साथ निःशुल्क चिकित्सा सेवा एवं समाज सेवा का कार्य कर रहे हैं। उन्होंने 100 से अधिक टी.बी. के रोगी, एक ग्राम पंचायत व एक स्लम एरिया को भी टी.बी. मुक्त बनाने हेतु गोद ले रखा है। इसके साथ ही वे पर्यावरण व योग के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं।

डॉ. सूर्यकान्त ने कोविड के इलाज के लिए आइवरमेक्टिन पर श्वेत पत्र प्रकाशित किया, जिसे विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लू.एच.ओ.) की वेबसाइट पर भी प्रदर्शित किया गया है। उन्होंने केजीएमयू में सबसे पहले और पहली डोज कोविड वैक्सीन की लगवायी। जिस कारण राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) द्वारा डॉ. सूर्यकांत को कोविड वैक्सीन का ब्रांड एंबेसडर के रूप में चुना गया। इसके अतिरिक्त उन्होंने भारत के ग्रामीण लोगों के लिए 'ना जांच, ना रिपोर्ट, करो कोरोना पर सीधी चोट' नामक एक सरल और अद्वितीय उपचार का प्रोटोकॉल भी बनाया और विभिन्न स्वैच्छिक संगठनों और ग्राम प्रधानों को नेटवर्किंग के माध्यम से कोरोना की दवाएं वितरित की और ग्रामीणों की जान बचाई। उन्होंने केजीएमयू में कोविड अस्पताल के प्रभारी के रूप में काम किया है और यूपी के 58 कोविड अस्पतालों के कोविड आईसीयू की निगरानी भी की। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय और राज्य कोविड ट्रेनर के रूप में भी काम किया। कोरोना में उनके अनुकरणीय कार्य के लिए उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी मान्यता मिली और उन्हें फ्रंट लाइन कोविड-19 क्रिटिकल केयर अलायंस का अन्तर्राष्ट्रीय भागीदार बनाया गया। क्रिस्टीन क्लार्क (यूनाइटेड किंगडम), केली जॉन्स (यूएसए) आदि जैसे प्रसिद्ध अन्तर्राष्ट्रीय पत्रकारों ने उनका साक्षात्कार लिया। कोविड संकट के दौरान उन्हें यूपी सरकार द्वारा पीएम के निर्वाचन क्षेत्र वाराणसी सहित विभिन्न स्थानों पर कोविड समीक्षा के लिए विशेषज्ञ के रूप में भेजा गया था।

एक और महत्वपूर्ण स्थान पर विक्रम संवत का प्रयोग

अनूप शुक्ल
महासचिव- इतिहास समिति, कानपुर

पाश्चात्य इतिहासकार उज्जैन के महाराजा विक्रमादित्य को इतिहास लेखन में स्थान नहीं देते। उनके अनुसार महाराजा विक्रमादित्य के साक्ष्य उपलब्ध नहीं हैं जबकि महाराज विक्रमादित्य लोक कथाओं के माध्यम से तो पूरे भारत वर्ष में पहचाने जाते ही हैं साथ ही इनके नाम पर कालगणना हेतु स्थापित विक्रम संवत् भी असंख्य स्थानों पर प्रयोग किया गया और किया जा रहा है। इस क्रम में बिठूर, कानपुर (ब्रह्मावर्त) के एक मराठाकालीन महत्वपूर्ण स्थापत्य के शिलापट्ट पर विक्रम संवत् का प्रयोग उल्लेखनीय है।

श्रीमता बाजिरायेण प्रासादो वै समंडपरू।
गंगा सरस्वती शस्य निर्मितोयं महाफलः।
शाकेतु विक्रमार्कस्य षडेष्ट वसु भूमि ते।

बिठूर, कानपुर (ब्रह्मावर्त) के पास ही महाराजघाट स्थित सारस्वतेश्वर शिव मन्दिर है। मन्दिर के मुख्य द्वार पर संगमरमर की पट्टिका लगी है, जिसमें उपरोक्त श्लोक अंकित हैं। श्लोक के मुताबिक पेशवा बाजीराव द्वितीय ने उक्त मन्दिर विक्रमी संवत् 1886 अर्थात सन् 1819 ई. मे बनवाया था।

पेशवा बाजीराव द्वितीय ने पूना में छः विवाह किए थे। बिठूर में प्रवास के समय छोटी पत्नी सरस्वतीबाई इनके साथ आईं थीं, बाद मे ज्येष्ठ पत्नी वाराणसीबाई भी बिठूर आ गईं। सरस्वतीबाई के निधन पर दाह स्थल पर ही सुन्दर शिवाला व घाट बनवाया जो आज सारस्वतेश्वर शिव मन्दिर व महाराजघाट के नाम से प्रसिद्ध हैं।

पेशवा बाजीराव द्वितीय ने बुढ़ापे में बिठूर प्रवास के दौरान पांच विवाह किए मतलब कुल ग्यारह विवाह किए। बाजीराव के दो पुत्रियां योगाबाई व कुसमाबाई हुईं, एक पुत्र भी हुआ परन्तु शीघ्र ही काल कवलित हो गया था। अतः बाजीराव द्वितीय ने गोत्रज माधव राव भट के दो पुत्र व एक भतीजे को गोद लिया उनमे से बड़े नाना साहेब को दत्तक बनाकर उत्तराधिकार दे दिया था। मन्दिर के अंदर दो प्रस्तर पट्ट जीर्णोद्धार की सूचना देते हैं। मंदिर के अंदर के उकेरे गए चित्र अब बेरंग हो गए हैं।

लेखक-श्री अनूप शुक्ल

विक्रम संवत् - २०८१ - "पिङ्गल" संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिंङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

नववर्ष चेतना समिति

डॉ. एल.पी. मिश्रा

वरिष्ठ अधिवक्ता उच्च न्यायायल
लखनऊ उत्तर प्रदेश

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिंङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

नववर्ष चेतना समिति

प्रो. बी. एन. सिंह

राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष - आरोग्य भारती,
संरक्षक नव वर्ष चेतना समिति एवं पूर्व चेयरमैन - होम्योपैथिक मेडिसीन बोर्ड, उ.प्र.

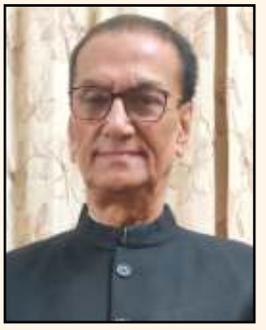

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिंङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

नववर्ष चेतना समिति

बी.पी. हलवासिया फाउन्डेशन

लखनऊ

सुधीर हलवासिया
फाउन्डर ट्रस्टी

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिंङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

नववर्ष चेतना समिति

डॉ. नीरज बोरा

विधायक, लखनऊ उत्तर

विक्रम संवत् – २०८१ – ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

With best compliments from

ESTD. 1987

ST. JOSEPH GROUP OF INSTITUTIONS
LUCKNOW, UTTAR PRADESH

Contact us as :9792167777 www.stjosephlucknow.com

SECT. 6, C-BLOCK, RAJAJIPURAM, LKO.
Contact @ 0522-2416973, 9792167777

SECTOR-B, PRIYADARSHINI YOJANA, SITAPUR RD., LKO.
Contact @ 7408501555, 7408714714,

RUCHI KHAND-1, SHARDANAGAR, LKO.
Contact @ 7408492222, 7408493333

COMING SOON!

Launching Our Dream Project

"Gyanshila"

विक्रम संवत् – २०८१ – ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

Sona Chandi

Gold | Silver | Diamond | Kundan-Polki | Coloured Stones

विक्रम सम्वत्
२०८१

भारतीय नव वर्ष की आप सभी को शुभकामनाएं

39, Janpath (Basement) Hazratganj, Lucknow - 226001

Phone: 0522 - 4236977

विक्रम संवत् – २०८१ – ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

श्री कृष्णा ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स

अल्पसंख्यक संस्थान

Approved by : PCI, BCI & NCTE Affiliated to : Lucknow University, AKTU, BTE & SCERT

Offering Courses

फार्मेसी में छात्रावास की सुविधा उपलब्ध है

B.Pharm & D. Pharm
B.Sc., M.Sc.
B.Com., M.Com.
B.A., M.A.
D.El.Ed., B.Ed.
LL.B. & B.A. LL.B.
NCC पाठ्यक्रम संचालित

D.El.Ed. (B.T.C.) & B.Ed. में सीधे प्रवेश

कैम्पस: अहमद नगर, नैपालापुर-कसरैला मार्ग - सीतापुर-261125

CONTACT US - **1800-1020-662** (TOLL FREE NO.)

9450382107, 9956694954, 8874270999

विक्रम संवत् – २०८१ – ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

आलोक गोयल
प्रबन्धक राजकिशोर दुबे सरस्वती शिशु मन्दिर
सरस्वती पुरम, निकट पी.जी.आई. लखनऊ

SVJ
Since 2002

SHRI VRANDAVAN JEWELLERS

A UNIT OF S V B JEWELLWERS LLP

30% OFF ON DIAMOND JEWELLERY AVAIL THE COUPON NOW

Opposite Ram Bharose School Gate,
Telibagh, Lucknow

svj_lko 7800089666

विक्रम संवत् - २०८१ - "पिङ्गल" संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

CHANDRA'S
GIFTS & TOYS
Exclusive Gift & Toys Shop in Your Area.

Show This Pamphlet & Get 10% Cash Discount.
Chawla Market, Telibagh, Lucknow | Call : 7668422065

प्रो. अनुज अग्रवाल

विक्रम संवत् - २०८१ - "पिङ्गल" संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

रजनीश त्रिवेदी

SHRI GANPATI SWEETS & RESTAURANT

EXPERIENCE A SYMPHONY OF SUGAR AND DELIGHT

SWEETS | RESTAURANT | BAKERY | BANQUET | HOTEL

3M/3, Opp. SKD Academy, Vrindavan Yojana, Lucknow
Uthrathia Bazar, Shaheed Path Raebareli Road, Lucknow

+91 7317514493 | +91 7080601151 www.shriganpatisweets.com sweets.ganpati@gmail.com

विक्रम संवत् - २०८१ - "पिङ्गल" संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

LAXMI LAWN & RESORT

Navikot Nandna, Sitapur Road, Lucknow. (1 Km. Before B.K.T.)

OUR FACILITIES

- A. C. Room (36 rooms)
- Banquet hall with A. C. (7000 sq. ft.)
- Banquet hall with A. C. (1200 sq. ft.)
- 100 car parking space
- Banquet hall non A. C. (5500 sq. ft.)
- Marriage lawn (20,000 sq. ft.)
- Marriage lawn (12,000 sq. ft.)

Mob: 8957414243, 7318314131, 9140709755

विक्रम संवत् – २०८१ – ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

Maata Shree Plywood Industries

Manufactures of

ISI plywood, Flushdoor, Black Board, Marine Ply & Shuttering Plywood

Our Brands - AUSTRICH, MERCY

Director

Mr. B.P. Singhal +91 9936274366

Mr. Vikas Singhal +91 9793179009

Mr. Mudit Singhal +91 9005110900, 9415138806

Mr. Anuj Singhal +91 9935212228

विक्रम संवत् - २०८१ - ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

TSIFIRA JEWELS & GEMS

B-14 F, Sector-F Kapoorthala Chauraha, Aliganj, Lucknow

Mob. : 7860877749

विक्रम संवत् - २०८१ - ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

ठहरने का उत्तम प्रबन्ध

(ओ. पी. मिश्र)

नमन अतिथि गृह

हवादार स्वच्छ कमरे, एक्वागार्ड, ए.सी.रुम, कूलर, वाटर कूलर फ्रिज, टी.वी., जनरेटर लिफ्ट आदि सुविधायें उपलब्ध है।

8ए/3, श्यामकुंज, सरस्वतीपुरम (निकट एस.जी.पी.जी.आई. हास्पिटल)
रायबरेली रोड, लखनऊ - 226014
संपर्क: 0522-2668629, 9453220220

विक्रम संवत् – २०८१ – ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

Hotel G3

A UNIT OF JAI MAA GARGI HOTEL & RESORTS PRIVATE LIMITED

HOTEL ✣ RESTAURANT ✣ BANQUETS

Hotel G3 is located on 82/74, Guru Govind Singh Marg, Lucknow & near to all business & shopping district of Lucknow.

Hotel G3 is situated 1 kilometer from main Railway Station Charbagh & 12 kilometer from the Amousi Airport.

विक्रम संवत् – २०८१ – ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

Mera Mann

Geniality of Awadh

EST. 1999

Scan Me

1, Station Rd, Husainganj, Lucknow,
Ph.: 0522-4011997, 9919931144
email : asha@hotelmeramann.com

विक्रम संवत् – २०८१ – ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

NISHITH RASTOGI

Proprietor

LATA ENTERPRISES

A REPUTED HOUSE IN WHOLE SALE MEDICINE

113/10, Aminabad Park

Old medicine Market, Aminabad

Lucknow - 226018

Mobile : 9415108876 / 8765959595

E-mail : nishithrastogi.le@gmail.com

विक्रम संवत् – २०८१ – ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

SANJEEV AGRAWAL

GOEL

SWEET HOUSE

Telibagh, Raibareli Road,

Lucknow.

Mobile-9450465380

विक्रम संवत् – २०८१ – ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

VIPIN CLOTHING PRIVATE LIMITED

35- A CHANDRALOK COLONY KAPOORTHALA ALIGANJ LUCKNOW

PH. NO.= 0522-2334016,2332228 ,4105444

VIPIN CLOTHING PRIVATE LIMITED

48-C KANPUR ROAD SINGAR NAGAR ALAMBAGH LUCKNOW

PH.NO-0522-2987788 , 7718091

VIPIN CLOTHING PRIVATE LIMITED

HAJRATGANJ CHAURAHA SHOP NO -86 COCOGEM BLOCK HAJRATGANJ LUCKNOW

PH. NO -0522-2983619

VIPIN CLOTHING PRIVATE LIMITED

PATRAKARPURAM CHAURAHA 4/301 VIVEK KHAND GOMTINAGAR LUCKNOW

PH.NO -0522-4349239

विक्रम संवत् - २०८१ - ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

हिन्दू नव वर्ष विक्रम सम्वत २०८१ की हार्दिक शुभकामनाएं

SHYAM'S®

Since 1997

SHRI SHYAM FOOD PRODUCTS

G-49/50, Industrial Area Phase-II, Agro Park,
Kursi Road, Dist. Barabanki - 225302

Mo. No. +91-9415016825, +91-8528980791

Email : shyamfood@gmail.com

Website : www.shyamfood.com

Manufacturer of all types of Sauces, Mayonnaise,
Hakka Noodles & various food products.

विक्रम संवत् - २०८१ - "पिङ्गल" संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

(An ISO : 9001 : 2015 Certified Co.)

2020

RAJEEV INDUSTRIES

Manufacturer of :

P.V.C. & L.L.D.P.E. Pipes

Customer Care No. : 9415087563, 7880364141

Website : www.rajeevindustriesindia.co.in, **E-mail :** rajeevindustries123@gmail.com

Mareting Partner : Pandey & Sons*

विक्रम संवत् – २०८१ – ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

OLLiE PLY
Bharose ka Sathi

Distributor :

Doorkit hardware Pvt. Ltd.

592/258, Defence Colony, Telibagh, Lucknow
DD. Agarwal : 9415468294, Vivek Agarwal : 95801924483

दाऊ दयाल अग्रवाल
महामंत्री अग्रवाल सभा (दक्षिण)
नगर संघचालक, वासुदेव नगर, आर.एस.एस. (लखनऊ, दक्षिण)

विक्रम संवत् – २०८१ – ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

Ashwani Gupta
9839009900

Pankaj Agarwal
9415089210

MANI FOUNDATION

225, TEJ KUMAR PLAZA, HAZRATGANJ, LUCKNOW.

विक्रम संवत् - २०८१ - ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

C.B.S.E. CODE-2131432

ELPIS GLOBAL SCHOOL

C.B.S.E. AFFILIATED

Director

Mr. Mudit Singhal
+91 9005110900

Mr. Umang Rajwanshi
+91 9005331800

Mr. Anuj Singhal
+91 9935212228

Mr. Nisheeth Goel
+91 9838004655

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

नववर्ष चेतना समिति

फैन्सी वस्त्रालय
तेलीबाग, लखनऊ

अशोक अग्रवाल
अध्यक्ष, अग्रवाल सभा (लखनऊ दक्षिण)

विक्रम संवत् - २०८१ - ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

With Best Compliments From :

Rajendra Kumar Agarwal : 9335914861
Jitendra Agarwal : 9935483794
Sachin Singhal : 9918300385

Singhal Enterprises

Doodhmalai Basmati Rice & Agrodelight Regional Rice Range Available

Regd. Office : 215/162 A, Pandey Ganj Galla Mandi, Lucknow.
Mill : Mohibullapur, Sitapur Road, Lucknow

विक्रम संवत् - २०८१ - "पिङ्गल" संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिंङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

देशराज अग्रवाल

अध्यक्ष

महाराजा अग्रसेन पब्लिक स्कूल मोती नगर, लखनऊ

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिंङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

नीलेश गोयल

संरक्षक द्वादश ज्योतिर्लिंग मंदिर सदर

संरक्षक नव वर्ष चेतना समिति / मंत्री लखनऊ व्यापार मंडल

निवर्तमान उपाध्यक्ष एवं संस्थापक सदस्य श्री श्याम परिवार (श्री खाटू श्याम मंदिर) लखनऊ

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिंङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

डॉ. आंचल केशरी

ओम मीटरनिटी सेंटर, साउथ सिटी

रायबरेली रोड लखनऊ

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिंङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

राकेश डी. कुमार

अधिवक्ता, उच्च न्यायलय लखनऊ

विक्रम संवत् – २०८१ – "पिङ्गल" संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

जय व्यापारी

जय व्यापार मण्डल

भारत भूषण गुप्ता

फोन : 9415105298, 8577809831

अध्यक्ष – लखनऊ दाल एण्ड राइस मिलर्स एसो.
अध्यक्ष – अग्रवाल शिक्षा संस्थान, लखनऊ
वरि. उपाध्यक्ष – लखनऊ व्यापार मंडल
वरि. उपाध्यक्ष – अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन, उ.प्र.
संयुक्त महामंत्री – उ.प्र. उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल

प्रतिष्ठान – मै0 गोयल बद्रर्स, सीतापुर रोड, डालीगंज, लखनऊ
निवास – 486/208 क, डालीगंज रेलवे स्टेशन के सामने, लखनऊ

विक्रम संवत् – २०८१ – "पिङ्गल" संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

With Best Wishes :

SACHDEVA ASSOCIATES

(REAL ESTATE CONSULTANT)

FOR SALE / PURCHASE OF LANDS, HOUSE & FLATS

RESI : 3/224-B, VIPUL KHAND, GOMTI NAGAR, LUCKNOW
Mob. : 9792878777, 9198882244

विक्रम संवत् - २०८१ - "पिङ्गल" संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिंङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

नववर्ष चेतना समिति

अभिजात मिश्रा

प्रदेश मंत्री भारतीय जनता पार्टी, उ.प्र.

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिंङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

नववर्ष चेतना समिति

सुधीर गर्ग

उपाध्याय - श्री श्याम परिवार, लखनऊ
कोषाध्यक्ष - लघु उद्योग भारती, अवध प्रान्त

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिंङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

नववर्ष चेतना समिति

सुनील गोरिया

लाइब्रेरियन बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिंङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

नववर्ष चेतना समिति

विनीत शर्मा

सेल्स ऐसोसिएट
थीम मेडिकल एण्ड सांइटिफिक पब्लिशर्स प्रा. लि.

विक्रम संवत् – २०८१ – "पिङ्गल" संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

बी के सर्राफ
ज्वैलर्स
1935
अटूट रिश्ते, सदा के लिए

नया वर्ष, नए बदलाव

हिन्दू नववर्ष
की हार्दिक शुभकामनाएं

सोने के आभूषणों की बनवाई एवं
हीरों की कीमत और बनवाई पर

20%*
निश्चित छूट

यह ऑफर सिर्फ 31 अगस्त 2024 तक मान्य है।

+91 88089 25925,
0522-4045354
गोल मार्केट, महानगर, लखनऊ

*Terms and Conditions Apply

ऑफर प्राप्त करने के लिए QR स्कैन करें

100% फाइनेंस की सुविधा उपलब्ध है

NATURAL DIAMOND NO CVD HPHT

100% BIS HALLMARKED JEWELLERY

24Kt Hallmark 995 — 995 Fineness Hallmarked
22Kt Hallmark 916 — 916 Fineness Hallmarked
18Kt Hallmark 750 — 750 Fineness Hallmarked

FREE 1 YEAR INSURANCE | COMPLETE TRANSPARENCY | GUARANTEED BUYBACK | EASY EXCHANGE | ASSURED MAINTENANCE

विक्रम संवत् - २०८१ - ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

नववर्ष चेतना समिति

शिव शंकर सिंह 'शंकरी सिंह'

सामाजिक कार्यकर्ता (भा.ज.पा., सरोजनी नगर विधान सभा)

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

नववर्ष चेतना समिति

इं. महेश गोयल

पूर्व संयोजक-अग्रवाल सभा लखनऊ दक्षिण

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

नववर्ष चेतना समिति

विजय अग्रवाल

एम.डी.

विसावा इण्डस्ट्रीज प्रा. लि., लखनऊ

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

नववर्ष चेतना समिति

इं. राम कुमार

अधीक्षक अभियन्ता, बरेली

सामाजिक कार्यकर्ता

विक्रम संवत् - २०८१ - ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

- प्रशिक्षित डॉक्टरों की टीम
  24 घण्टे अपलब्ध
- गहन रोग से पीड़ित रोगियों के लिए
  अत्याधुनिक आई.सी.यू.
- प्रशिक्षित बाल चिकित्सकों की टीम
  24 घण्टे उपलब्ध
- नवजान शिशु रोगियों के लिये
  अत्याधुनिक एन.आई.सी.यू.

ICU
NICU
DIALYSIS
VENTILATOR

MODULAR ICU NURSING STATION

MODULAR ICU RECEPTION

MODULAR O.T. - I

MODULAR ICU

MODULAR O.T. COMPLEX

MODULAR O.T. - II

चिकित्सा जगत में नई दिशा की ओर

Dr. Chandra Prakesh Dubey
M.D.

राजधानी अस्पताल

सभी प्रकार के ऑपरेशन की सुविधा उपलब्ध

Amrapali, Near Railway Line
Raebareilly Road, Lucknow

आम्रपाली, निकट रेलवे लाइन
रायबरेली रोड, लखनऊ

Contact : 0522-2440880, 9415162686
rajdhanihospital01@gmail.com

विक्रम संवत् – २०८१ – ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिंङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

नववर्ष चेतना समिति

प्रो. सुरेन्द्र प्रताप सिंह

पूर्व कुलपति – लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिंङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

नववर्ष चेतना समिति

शेष नाथ सिंह

कार्याध्यक्ष – सीमा जागरण मंच, अवध प्रान्त
एवं संरक्षक नव वर्ष चेतना, समिति

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिंङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

नववर्ष चेतना समिति

प्रो. संजय द्विवेदी

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

आप सभी बन्धुओं को नव संवत्सर २०८१ (पिंङ्गल) की हार्दिक शुभकामनायें !

नववर्ष चेतना समिति

अमरजीत मिश्रा

संरक्षक – नव वर्ष चेतना समिति
प्रशानिक अधिकारी (से.नि.), उ.प्र. शासन

विक्रम संवत् - २०८१ - ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

॥ ज्योतिर्गमय ॥

Dr KNS MEMORIAL HOSPITAL

(MAYO MEDICAL CENTRE)

SUPERSPECIALITY HOSPITAL IN THE HEART OF THE CITY

विशेषताएँ शामिल:

क्लिनिकल सेवाएँ

एनेस्थिसियोलॉजी
नाजुक देख - रेख
कार्डियोलॉजी (इंटरवेंशनल और नॉन-इंटरवेंशनल)
दंत चिकित्सा
त्वचाविज्ञान और वेनेरोलॉजी
अंतःस्त्राविका
सामान्य दवा
जनरल सर्जरी सहित
लेप्रोस्कोपिक सर्जरी
मेडिकल ऑन्कोलॉजी
मेडिकल गैस्ट्रोएंटरोलॉजी

क्लिनिकल सेवाएँ

नेफ्रोलॉजी (डायलिसिस सहित)
तंत्रिका-विज्ञान
न्यूरोसर्जरी
हेमाटो -कैंसर विज्ञान
प्रसूति एवं स्त्री रोग
उच्च जोखिम प्रसूति सहित
नेत्र विज्ञान
आर्थोपेडिक सर्जरी सहित
जॉइंट रिप्लेसमेंट सर्जरी
ईएनटी
आईवीएफ

क्लिनिकल सेवाएँ

प्लास्टिक और पुनर्निर्माण सर्जरी
नवजात विज्ञान सहित बाल चिकित्सा
बाल चिकित्सा सर्जरी
मनोरोग (ओपीडी)
श्वसन औषधि
सर्जिकल गैस्ट्रोएंटरोलॉजी
सर्जिकल ऑन्कोलॉजी

समर्थित सेवाएँ

पथ्य के नियम
मनोविज्ञान
भौतिक चिकित्सा

डायग्नोस्टिक सर्विसेज

2डी इको
श्रव्यतामिति
सीटी स्कैन
एमआरआई
ईईजी
एंडोस्कोपी
ईएमजी
होल्टर मॉनिटरिंग
मैमोग्राफी
स्पिरोमेट्री
ट्रेड मिल परीक्षण
अल्ट्रासाउंड
यूरोडायनामिक अध्ययन
एक्स-रे

प्रयोगशाला सेवाएँ

नैदानिक जैव-रसायन विज्ञान
क्लिनिकल माइक्रोबायोलॉजी
सीरम विज्ञान
क्लीनिकल पैथोलॉजी
साइटोपैथोलॉजी
रुधिरविज्ञान

आधान सेवाएँ

रक्त बैंक
रक्त आधान सेवाएँ

SPECIALITIES INCLUDED :

Clinical Services

Anaesthesiology
Critical Care
Cardiology (Interventional and Non-Interventional)
Dentistry
Dermatology and Venereology
Endocrinology
General Medicine
General Surgery including
Laparoscopic Surgery
Medical Oncology
Medical Gaestroenterology

Clinical Services

Nephrology (Including Dialysis)
Neurology
Neurosurgery
Hemato-Oncology
Obstetrics and Gynaecology
including High Risk Obstetrics
Ophthalmology
Orthopaedic Surgery Including
Joint Replacement Surgery
ENT
IVF

Clinical Services

Plastic and Reconstructive Surgery
Paediatrics including Neonatology
Paediatric Surgery
Psychiatry (OPD)
Respiratory Medicine
Surgical Gastroenterology
Surgical Oncology

Supported Services

Dietetics
Psychology
Physiotherapy

Diagnostic Services

2D Echo
Audiometry
CT Scan
MRI
EEG
Endoscopy
EMG
Holter Monitoring
Mammography
Spirometry
Tread Mill Testing
Ultrasound
Urodynamic Studies
X-Ray

Laboratory Services

Clinical Bio-chemistry
Clinical Microbiology
Serology
Clinical Pathology
Cytopathology
Haemoatology

Transfusion Services

Blood Bank
Blood Transfusions Services

CGHS, ECHS, ESIC, CAPF, BHEL, NR, NER & All TPA

24X7 SERVICES AVAILABLE:

Emergency, ICU / NICU, PICU / Dialysis / Advanced Operation Theatre / Pharmacy / Pathology / Radiology / Ambulance

Tel: 0522-2398614, 0522-2302269, Ph: +91 91510 36305, +91 89350 02651
Email: info@drknsmemorialhospital.com | Website: www.drknsmemorialhospital.com
Add: Vikas Khand-2, Dr. K. N. Singh Marg, Gomti Nagar, Lucknow Uttar Pradesh-226010

विक्रम संवत् - २०८१ - "पिङ्गल" संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

Come to us

How to use your "POWER"?
"Safely & Economically"

Avadh Electicals

"An Engineer's Enterprises"

"A" Class Approved - 'Govt. Licenced Contractor'

(Issued by Director Electrical Safely, Govt. of U.P.)

'Incercarator' of HT / LT 'Installation' for

★ Cinema ★ Mall ★ Industries ★ Institutional Projects
★ Multistoried Complex ★ HT/LT Cable Laying
★ Electrical Energy Audit ★ Solar Power Plants etc.

46A/2, Pragati Kendra (Ground Floor), Kapoorthala Complex, Lucknow-226024
E-mail: avadh_electricals@redifmail.com / Mob.: 9415023778

Contact for Consultancy Services

Designing, Lay-out-Drawings, Estimation & Supervision of all type of Electrical Installations

Er. Ajay Kumar Saxena

Consultants & Engineers
Mob.: 9935168169 / Email: saxena.ajay06@gmail.com

Life Member & State President : Electrical contractors & Merchants Welfare Association U.P. (Regd.)
Member : Lucknow Electric Merchants & Contractors Association (Regd.)
Member : Indian Industries Association (IIA)
Vice President : Lucknow Vayapar Mandal (Regd.)
Vice President : Nav Varsh Chetna Samiti, Lucknow
Patron : Kapoorthala Vayapar Mandal, Lucknow
Chairman Solar Energy Committee : Associated Chamber of Commerce & Industries of U.P. - U.K.

विक्रम संवत् - २०८१ - "पिङ्गल" संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

ADVOCATE

T.N. Pandey

Advocate

High court Lucknow Bench

सहयोगी अधिवक्तागण - शशांक शेखर त्रिवेदी, राज शेखर त्रिवेदी, कमल गुप्ता, अभिषेक तिवारी, आनंद श्रीवास्तवा (विशेषज्ञ आयकर व जीएसटी)

Chamber : 87/126, Risaldar Park, Lalkuan, Lucnkow-226 001
Mobile : 9838281025, 9415514893
E-mail : tnpandey.taxconsultant@gmail.com

विक्रम संवत् – २०८१ – ‘‘पिङ्गल’’ संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

Rita Mittal

Member Judge

Micro, Small and Medium Enterprises Facilitation Council Lucknow Division

Patron : Nav Varsh Chetna Samiti
- President : Awadh Prant Laghu Udyog Bharti.
- Awadh Prant Samanvayak Swavlambi Bharat Abhiyaan.
- U.P. Ratan Awardee 2011.
- Vice President : shri Agarwal Samaj, Lucknow.
- Honorary Counsellor : Family Court, Lucknow.

A-2/27, Vipul Khand, Gomti Nagar, Lucknow - 2266010.
9415032222, 9808222222, rtn.rita.mittal@gamil.com

विक्रम संवत् – २०८१ – ‘‘पिङ्गल’’ संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

Ashok Jaiswal

Shri

Ganpati Ply & Hardware

Dealers In :
Plywood, Black Board, Flushdoor, PVC Door, Veneers, Teak Ply etc.

Aurangabad Jagir, Near Saheed Path, Bijnor Road, Lucknow.
09452484740, 09628721180, 06386449529

विक्रम संवत् - २०८१ - "पिङ्गल" संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

SHYAM
Investments

More than 20 years of experience

Patron : Nav Varsh Chetna Samiti, Lucknow
Patron : Agarwal Sikshan Sansthan, Lucknow
Member : Shri Agarwal Sabha, Lucknow
Member : Shri Shyam Pariwar, Lucknow
Member : Ganesh Ganj Vypar Mandal, Lucknow

Sudhish Garg
+91-9415020938
+91-7007789230

www.shyaminvestments.com

Financial Planer | Tax Planner | Investment Consultant

Mutual Funds, LIC, Medi Claim, Fixed Deposit etc.

Office : UGF-5, Raza Manzil, Aishbagh Road, Lucknow - 226004 U.P.
Email : sudhishgarg@yahoo.com

विक्रम संवत् - २०८१ - "पिङ्गल" संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

निर्मला पन्त
प्रबन्धक

संरक्षक : नव वर्ष चेतना समिति, लखनऊ

लखनऊ केंसर इन्सीट्यूट

1, कालीदास मार्ग, मानस नगर कालोनी, हजरतगंज, लखनऊ (उ.प्र.) - 226001
फोन : 0522-2206981-84, मो. : 9839193222, 7705909401

विक्रम संवत् – २०८१ – ''पिङ्गल'' संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

7318520111
0522-4004370, 4960458
girishguptadr@gmail.com
www.facebook.com/gcchr
www.gcchr.com

GAURANG CLINIC & CENTRE FOR HOMOEOPATHIC RESEARCH®
B-1/41, Sector A, Kapoorthala, Aliganj, Lucknow - 226024

Dr. Girish Gupta
MD (Hom.), PhD

Dr. Gaurang Gupta
BHMS, MD (Psychiatry)

SAWANI GUPTA
M.Sc., M.Phil.
Clinical Psychologist
CRR no. A79773

Timings
11am - 6pm
0522- 4004370
+91-8861303077
feathers.mentalhealth@gmail.com
feathers.centreformentalhealth

FEATHERS®
UNRAVEL THE MIND

PSYCHOTHERAPY & PSYCHOMETRIC ASSESSMENT
COUNSELLING
PSYCHO-DIAGNOSTIC
CHILD GUIDANCE

CENTRE FOR MENTAL HEALTH

Medhaj Techno Concept Pvt. Ltd.

Project Business Development Consultancy and Infrastructure Advisory Services
Energy | Water | Education | IT & ITeS

Medhaj Group

मेधज Medhaj Techno Concept Pvt. Ltd. | Medhaj NEWS | मेधज ITeS | मेधज MAREPL

Medhaj Astro's Exclusive Panchaang Calendar 2023 and Diary 2023, with hora details, now available on Amazon.in.
To order your copy, type Medhaj in the search tab OR visit : https://amzn.eu/d/3U8dyX2

CONTACT DETAILS

Corporate Office : Medhaj Tower, Sector-D1, CP-150, Power House Chauraha, Aashiana, Lucknow – 226012, Uttar Pradesh, India.
Ph.: +91-522-2425912, Fax: +91-522-2425913
Email: mtcpl@medhaj.com; info@medhajastro.com
Website : www.medhaj.com ; www.medhajastro.com ; www.medhajnews.in ; www.medhajites.com
Regional Offices : New Delhi | Patna | Ranchi